CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनन्य श्री जगन्नाथ

(अनुभूति में)

रजत कुमार कर

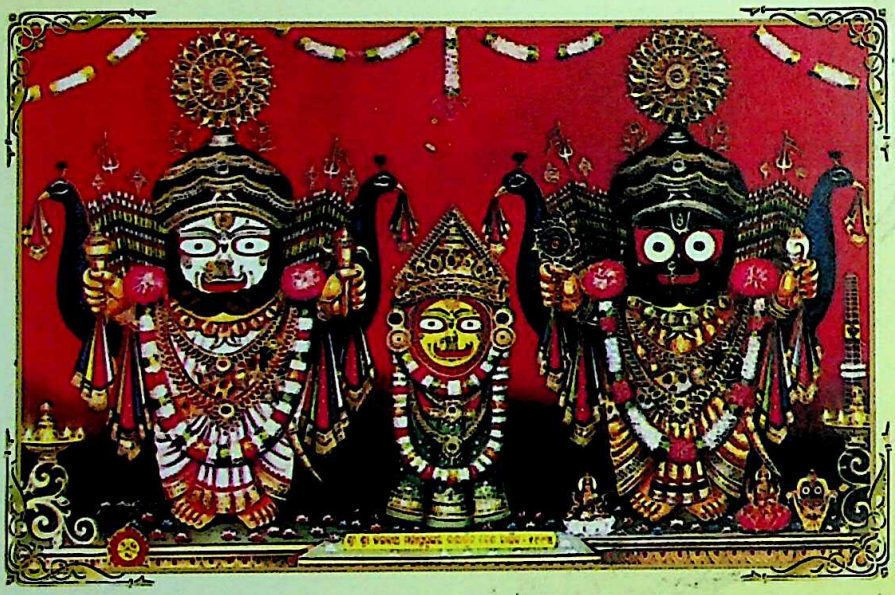

हिन्दी रुपान्तर

शंकर लाल पुरोहित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Sri Chaitanya Institute of Vaishnavic Culture

Nitya Lila Pravishta,
His Divine Grace Om Vishnupad Tridandi
Swami 108 Sri Srimat Bhakti Sarvan
Tirtha Goswami Maharaj

Dhyaanamoolam Gurur Moorthihi
Poojamoolam Guroh Padam
Mantramoolam Guror Vaakyam
Moksha Moolam Guru Kripa

A - 19, Sahid Nagar, Maharshi College Road
Bhubneshwar - 7551007, Odisha
Tel. - 0674 - 254052
Published by - Chaitanya Institute of Vaisnavic Culture

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ASHALATA

(a centre for musicology & ethno musicology research)

सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़ी भुवनेश्वर की अनौपचारिक संस्था 'आशालता' के गठन का कार्य प्रो. डॉ. शतपथी ने १९८० में ही शुरू कर दिया था। इसके अंतर्गत अनेक संगीत कार्यक्रम मीडिया पर आयोजित हुए डॉ - सुनील कुमार शतपथी राष्ट्रीय ख्याति के संगीतज्ञ ही नहीं संगीत एवं नृत्य कला के गहरे पारखी एवं आलोचक भी हैं। आपके नेतृत्व में यह संस्था ओड़िशा के आदिवासी संगीत के संग्रह एवं व्यवस्थित प्रकाशन में सफल हुई है। शांति कुंज के लोकप्रिय धारावाहिक "मंथन" के शीर्ष गीत

"गंगा के तट, ऋषि मुनियों संग,
वीणा स्वर संगम, तब हुआ मंथन,
द्वापर सतयुग त्रेता कलियुग, सब में मंथन यही मंथन,
जब जब भीड़ भरी संतन पर, तब हुआ मंथन।"

की रचना और संगीत निर्देशन डा. शतपथी ने किया जिसे स्वर महेंद्र कपूर ने दिया। ऐसे अनेक संगीत साहित्य एवं नृत्य से जुड़े विभिन्न स्तर के कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं।

इस बार 'गौरांग आश्रम' के प्रकाशन का संयोजन कार्य "आशालता" के 'प्रकृति-प्रत्यक्षा' युनिट के अंतर्गत किया है।

Ashavari performing centre and Prakruti Pratyakshya research wing
308-B, Vinaydeep Apartment, Ashok Nagar, Bhubneshwar - 751009, Orrisa
Phone : 0674-2536629, Mob. - 09437036629

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनन्य श्रीजगन्नाथ

(अनुभूति में)

15 जनवरी 2012

रजत कुमार कर

हिन्दी रूपान्तर

शंकरलाल पुरोहित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय सूची

क्र.	विषय	पृ.
	भावभूमि के कुछ चित्र	
१.	दीप जला दो	१
२.	पुकारो, वे सुनते हैं	८
३.	सच वे खाते हैं	१५
४.	उनकी इच्छा से घंटी टूटी	२२
५.	पुन:कांची अभियान	२९
६.	अर्पण करो, वे ग्रहण करेंगे	३७
७.	पाषाण के प्राण	४२
८.	सांवरे सलोने के लिए भूमिका	५५
९.	सांवरे का जादू	६२
१०.	कान नहीं, पर सुनते हैं	७२
११.	प्रेम : प्राप्ति का पथ	७८
१२.	कितनी दूर, कितने पास	८६
१३.	कल्पतरु की छाया	९२
१४.	गर्व गंजन पताका उड़ रही	१०१
१५.	भक्त के दो बूंद आँसू	१०७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६. मनोकामना पूर्ण करें पुरुषोत्तम ११५
१७. मान रखें महाबाहु १२५
१८. वे गिरने नहीं देते १३१
१९. जनम जनम का भाव उनके साथ १३७
२०. असंभव को संभव करते १४४
२१. छोड़े तो भी, वे नहीं छोड़ें १४९
२२. जितनी दूर हों, स्नेह से निकट हैं १५७

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भावभूमि के कुछ चित्र

"अनन्य जगन्नाथ : अनुभूति में" प्रो. रजत कुमार कर का श्रीजगन्नाथ संबंधी अनुभूतियों में से कुछ संस्मरणात्मक संकलन हैं। ओड़िया में ऐसे संकलनों की परंपरा बहुत पुरानी नहीं है। 'विधा' के रूप में इसे खूब सफल कहा जा सकता है। पाठक के लिए अनूठापन, नाटकीयता, रोमांच और आधिभौतिकता आदि बातें इनमें मुख्य होती हैं। इन कथानकों में आस्था, विश्वास, आस्तिकता, अपने इष्ट के प्रति दृढ़ भाव-समर्पण आम तौर पर स्पष्ट और बेलाग भाषा में मिलते हैं। मनुष्य के अंदर अहं, कर्ता भाव का ईगो जैसी बातें बहुत घर करने लगी। वैज्ञानिक प्रगति से वह अपने को सर्वशक्तिमान समझ एक नाम मात्र की आस्था के बल पर जी रहा था। परंतु अनुभव इसके विपरीत होता है। शक्ति केंद्र की तरह सत्ता केंद्र भी अलौकिक है।

जब सारी आस्था निचुड़ जाती है, इस सांसारिक पोखर में डूब कर दम घुटने को है, वह छटपटा उठता है। तब द्रौपदी की तरह हाथ उठा देता है, समर्पण कर चक्र पूर्ण हो जाता है। आंतरिक तौर पर हृदयंगम कर लेता है कि अब मैं आगे कुछ कर न सकूं ! वह ईश्वरी सत्ता के सामने घुटने टेक देता है। उसका अपना अहं ईगो, सब कुछ नगण्य लगता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तब अचानक पता नहीं कैसे, कहाँ से, किसकी हवा बदल कर आती है । सारे अंधेरे में आशा की किरण बिजली की तरह कड़क उठती है । यही है अनुभूति की सांद्रता, आस्था का प्रकाश और विश्वास की गंगा ! तीनों मिल कर जीवन को सार्थक गति प्रदान करते हैं ।

इस ग्रंथ में व्यक्तिगत अनूभूतियों का संकलन है । इनमें शीर्षकानुसार देखें तो प्रोफेसर कर ने काफी बड़ी चुनौती को सामान्य स्तर पर झेला और संवारा है । हमारा ईश्वर विश्वास इन कहानियों में नहीं, यह तो लेखकीय ऊर्जा का विकिरण है । प्रोफेसर कर को जीवन एक बड़ी चुनौती के रूप में ही मिला । जीवन भर इसका सामना किया । अंदर एक दुर्दम्य शक्ति है जिसने सदा हर समस्या, घटना - दुर्घना के सामने अटल-अटूट खड़े रखा । लेखक बड़ी निरीहता पूर्वक इस सारी सफलता, इस क्षमता और दांभिकता, अनमनीयता का श्रेय 'श्रीजगन्नाथ' नाम की सर्वमय सत्ता को देते हैं । दरअसल वे भूल जाते हैं कि यह दीप का प्रकाश अंदर जो शक्तिमान आत्मा है, वहाँ से आता है । सारी विपरीतता को सीधे करने का बल (Stress) अंदर नित्यवर्तमान है । बस, हम पर धूल जम कर उसे पहचानने में असमर्थ हो जाते हैं । रजत बाबू जैसे सृजनशील व्यक्ति यहाँ पर पूर्ण समपर्ण के साथ खड़े हो जाते हैं । इसमें व्यक्ति साफल्य छोटी बात है, सामाजिक परिवर्तन कर सकारात्मक सोच जीवन को आल्हादमय और तथ्यात्मक बना देती है । अज्ञेयजी की 'असाध्य वीणा' की तरह यह जीवन -वीणा पूर्ण समर्पण की शर्त पर बजती है । हम तो इस बहम में रहते हैं कि हम बजा रहे हैं ! उस समर्पण भाव की पूर्णता के बाद उसमें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वत: राग-ताल-छंद और ऊर्जा उभर आती है । इन कथा संकेतों का यही भाव आज भी सार्थक है ।

वैसे आज के तर्क प्रधान भौतिक युग के मूल्यों से ये भावनाएँ मेल नहीं खाती । लोग इन्हें किसी न किसी तर्क में बिठा कर नकारने पर उतर आते हैं । फिर भी कहीं न कहीं, कुछ न कुछ हमारी भौतिक सोच से ऊपर, अनसुलझा, तर्कातीत रह जाता है । वह जमीन भी इतनी छोटी नहीं कि उसकी उपेक्षा की जा सके । यह स्थिति हर धर्म, हर देश, हर क्षेत्र और हर युग में मिलती आयी है । चित्रकूट में फटिक शिला देखने के बाद तीन दिन तक प्रो. हृदानन्द राय अकूत प्यास में भरे रहे - रोज चालीस - पचास गिलास पानी पीते रहे । क्या वह 'ट्रांस' की स्थिति थी, जिसकी साक्षी उनकी धर्मपत्नी और मैं ही थे । अगले दिन इलाहाबाद के लिए हम सब रवाना होते ही वे सहज और एकदम सामान्य हो गए । इस प्रकार के तर्कातीत अनुभवों को तर्क से नहीं, आस्था और विश्वास के विशाल भूखंड पर रख कर दर्शन करें !

लोग कहते हैं यह तो 'अंध विश्वास' है ! हाँ, विश्वास अंधा ही तो होता है । उसके आँख कहाँ वह तो अंतर में होता है, जहाँ आस्था ही मार्ग दर्शन करती है । अत: ये कथांश सबकी रुचि के अनुकूल न हों, तो भी चिंता नहीं । जिन्होंने कभी 'जगन्नाथ' नाम नहीं सुना, उनके दर्शन नहीं किये, वे भी जगन्नाथमय हो सकते हैं, बस, आस्था और विश्वास का रसपूर्ण अंत: सलिल प्रवाह तो हो; तभी भावभूमि उर्वर एवं ग्रहणशील

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बनती है । वैसे भी हमारे पास विश्वास और आस्था को तौलने वाले उचित तराजू, बाट आजतक बने कहाँ ? अत: किसी की आस्था या विश्वास पर प्रश्न लगाना भारतीय परंपरा के अनुकूल नहीं है - हम घोर ईश्वरवादी से लेकर निरीश्वरवादी सब में परमात्मा और अंतरात्मा को स्वीकार करते रहे हैं ।

रजतजी आजीवन भावुक रहे हैं । अपने मूल्यों पर लाठी की तरह अटूट रहे, बेंत की तरह कभी झुके नहीं । इन्हीं श्रीजगन्नाथ में उन्हें 'ठाकुर' के दर्शन हुए, अत: बड़ा व्यापक और गहन है इनका अनुभव संसार ! बड़े चाव से मैंने इन्हें पढ़ा, और पूरी श्रद्धा से अनुवाद किया । ओड़िया भावभूमि का यह दृश्य पटल हिन्दी पाठकों को कुछ भिन्न जरूर लगेगा । पर जीवन चित्र में इसका अपना महत्व है । पता नहीं साहित्यालोचक इसे किस दृष्टि से लेंगे । मैं तो रजतजी को आदर और श्रद्धापूर्वक हिन्दी में प्रस्तुत कर प्रणाम कर रहा हूँ ।

डॉ. शंकरलाल पुरोहित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दीप जला दो

वे महाशून्य हैं । अनंत और निराकार हैं । उनका पुष्पार्चन और उन्हें दीपदान ! कैसी धृष्टता !

सारा सागर जिनके नख के कोने में समा जाये ! उनका कैसा स्नान ?

उनकी अर्चना के लिए मंदिर जाते समय दीप और फूलों का क्या होगा ?

गरुड़ स्तंभ के पीछे खड़े हैं भक्तशिरोमणि छवि महांति । कभी मेरे अधीन काम करते थे । कुछ भेंट बिना उनका मुँह कभी न खुलता । घंटों गरुड़ स्तंभ के पास खड़े हैं । दीप जला रहे । दीप चक्राकार घूम रहा । "प्रभु ! रक्षा करना हे ! गुप्त बातें प्रकट न हों । ऊंचे अफसरों की कोप दृष्टि न पड़े ! समय चैन से कटे । धन, जन, भंडार भरा रहे महाप्रभु !"

छवि महांति गद्‌गद हैं । दाहिने हाथ में दीप फिर रहा । "दीप जला रहे हैं, महांतिजी ! दीप जला तो विपद भी जल जायेंगी !" मैंने कहा ।

"इसमें कोई संदेह है ? पाप-ताप जल कर खाख हो जायें । दीपं ज्योति परमब्रह्म ! ब्रह्म का अग्नि रूप में आवाहन करने पर वे संताप को राख कर दें ।" छवि महांति ने कहा ।

जो महाशून्य हैं, उन्हें दीप की क्या जरूरत ?

मेरी बात पर हड़बड़ा गए । पूछने लगे "आप दीप नहीं देते ?"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं बोला-" दीप दिखा, फूल चढ़ा, भोग लगा कर उन्हें संतुष्ट नहीं किया जा सकता । न मैं फूल लेता , न दीप चढ़ाता ।"

छवि महांति को कटु शब्दों में उत्तर देकर लगा मैंने गढ़ जीत लिया ।

पर यह कैसी दैवी घटना ! छवि ने किसी को संभ्रम में नमस्कार किया । चेहरे पर मुस्कान । मानो मेरी बात की काट पा गए हैं । नमस्कार जिन्हें किया, वो मेरी सहर्मिणी थीं । हाथ में दीप धरे गरुड़ स्तंभ के पीछे, वे खड़ी, उन्हें नमस्कार मेरे पाशुपत अस्त्र जैसा था । "सर तो दीप पर विश्वास नहीं करते ? खैर, मैडम दीप अर्पण कर रही हैं ।" हँसते-हँसते महांति ने कहा ।

"वे विश्वास करें या न करें । दीप जलाना हमारी परंपरा है । षोड़षोपचार पूजा में दीप उसका एक अंग है । इसके बिना कहीं शुभ कार्य होता है ? विमला और लक्ष्मी मंदिर में दीप जला कर श्रीजगन्नाथजी को दीप अर्पण करने आयी हूँ । उनके आगे दीप जला रही हूँ ।"

खीझ में कहा -" अपने विश्वास में आप दीप दें । मेरे लिए कोई जरूरत नहीं ।"

हँस कर छवि ने कहा -" मैडम और मैं कुछ छोटे स्तर की भक्ति में हैं । आप सर, दीप ज्योति की तरह कितने ऊंचे हैं !"

सुनकर अचंभा ! "बच्चू अभी मेरे नीचे नहीं हो ! तभी ये बात कर रहे हो !"

अरे दीप को प्रभु ग्रहण करते, मैं क्या वैसे नहीं करा । प्रभु को दीप नहीं चाहिए । वे कीमती गजरा न खोजें । भक्ति चाहिए ! याद आ गई गुरु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की कही बात "मंदार फूल क्यों खोज रहा ? मंदार क्या है ? वह तेरा हृदय है । उसे अर्पण कर मेरे पांवों में ।"

बकरी बलि देकर, उसका मांस खाते हैं । बकरी तो प्रतीक है । मनुष्य के काम भाव का प्रतीक है बकरी । उसकी बलि दो । भैंसा क्रोध का प्रतीक है । उसकी बलि दो । यह न कर बलि के पक्ष में विपक्ष में चल रहा है संग्राम !"

श्रीजगन्नाथ दर्शन भूल कर श्रीजगन्नाथ तत्व दिमाग में आ गया । यह तो सांकेतिक विग्रह है । ब्रह्म का प्रतीक है । इन्हें जागृत करना होगा हृदय में । वास्तव में दीप इन्हें तृप्त कर सकेगा ? दीप उस अंतर की ज्योति है । अंतर में ज्ञान या गाढ़ी अनुरक्ति का दीप जलाना होगा । भक्ति दीप बिना वह विकसित न हो । भक्ति का दीप जला कर हृदय के अंधेरे कोने में प्रभु का पता लगाना होगा ।

पीछे रहें पत्नी । हाथ में चक्र -सा दीप घुमा मांगती रहे -'बहू अच्छी-सी दें । सिंदूर-चूड़ा अमर कर दें । पति को ऊंचा पद प्रदान करें । वे कामना जाल में उलझी रहें । मुझे निष्काम भाव में आगे बढ़ना होगा । प्रदीप कामना का प्रतीक है । मैं नहीं जला पाऊंगा । श्रीजगन्नाथ की ओर बढ़ा ।

"जी, जरा सुनेंगे !" एक सेवक ने पुकारा । परिचित लगा । साहित्यिक है, शिक्षक भी है । "मेरा एक काम कर देंगे ?"

"तीनों देवों को तीन दीपक प्रदान करें !" वे उत्तर की प्रतीक्षा बिना दीपक लाने चले ।

एक रुपया वाले तीन दीप ले कर लौटे । "आप खुद न लगा, मेरे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हाथ में दीप क्यों दे रहे हैं ?'' मैंने पूछा ।

''जी, मुझ पर वे नाराज हैं !''

'किसी और के हाथ में दिये नहीं ?''

''जी, आप भक्त हैं । उनके अपने हैं । दीप जला कर कहना - खुंटिया ने भेजा है । स्वीकार करें !''

सोच रहा था, कह दूं दीपदान में मुझे विश्वास नहीं । आखिर इसने मुझे ही चुना । खैर, भक्त कहा । भगवान श्रीजगन्नाथ का अपना बताया । तीनों दीप पूजा पंडा को देने में हर्ज क्या है ? बड़ी जटिल समस्या, पर दायित्व पूरा नहीं हुआ । श्रीजगन्नाथ को फिर बताना होगा !

पूजापंडा को कह देता तो होता कि खुंटिया ने दिया है । पर बात दूसरी है । खुंटिया की इच्छा है कि मैं स्वयं को कहूँ ।

कहूँ कि बेचारे सेवक को ठगना नहीं । प्रभु के लिए हाथ उठा कर कहा -''प्रभु ! खुंटिया जी ने दीप भेजा है । स्वीकार करें ।''

दीप दान पूरा हुआ । खुंटिया प्रतीक्षा में था ।

जी, दीप दिया ?

हाँ दिया !

वो बात कही ?

हाँ ! खुंटिया ने दिया है । आपने क्यों न दिया ? अपने लिए कहो, वे सुनते ही नहीं ।

पूछा - हजार बार परीक्षा की है । दूसरे का नाम लेते ही वे सुनते हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सेवकों के मुँह से सुन उत्कंठा बढ़ गई । पूछा - अपना अनुभव सुनायें ।

खुंटिया ने शुरू किया -"एक बार फिल्म प्रोड्यूसर दुःखी मन खड़े थे । भेंट हो गई । दुःख से कहा -"फिल्म अधूरी पड़ी है । पैसों का जुगाड़ नहीं हो रहा । हम जैसे अधूरे विश्वासी की बात सुनेंगे ?आप ही मेरे बारे में कहें ।" बाबू की बात में पिघल गया । प्रभु की ओर देख कहा - भगवान ! सा'ब की फिल्म नहीं चलती । उसे छल छोड़ मजबूत करें ।" वे चले गये । मैं अपनी राह । महीने भर बाद बाइस पावछ पर मिले । मुझे बांहों में भर कह उठे -

"सचल ब्रह्म ने मेरी अचल फिल्म को सचल कर दिया । खुद श्रीजगन्नाथ ने आकर रुपये गिन दिये । उन के सिवा कोई नहीं हो सकता । परेशान हो घर पर सोचा था, दरवाजे पर कार का हार्न बजा । गाड़ी से सांवले रंग का आदमी उतरा । कहा - आप अच्छे प्रोड्यूसर हैं । रुपये के बिना काम रुका है । मैंने कई तेलगू फिल्म बनाई हैं । सोचा था ओड़िया फिल्म बनाऊंगा । पहले आपकी फिल्म में रुपये लगाऊं । उन्होंने यह कह फिल्म में रुपये लगाये । श्रीजगन्नाथ ने बात सुन मुझे बचा लिया ।"

खुंटिया कहते गए -"दूसरे के लिए कहो, वे सुनते हैं । पर पराई बात में पड़ कष्ट भी भोगो ।"

"कष्ट कैसा ?"

खुंटिया बोले -" वो बात न पूछें । मंदिर पूजा करने गया था । लक्ष्मी मंदिर में चालीस वर्ष के युवक ने प्रवेश किया । उनकी पत्नी पैतीस की होगी । पत्नी लक्ष्मी पूजा कर लौटी । पुरुष बैठे थे । मैंने पूछा - "आप अंदर नहीं गये ?"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्होंने कहा -''कैसा मंदिर ! कैसे देवता ?''

-''ऐसा क्यों कहते हैं ? यह मर्त्य बैकुंठ है । स्वयं विष्णु सोलह कला सहित विराज रहे हैं ।''

वे बोले -'' सब प्रचार है । लक्ष्मी का मुकुट चोरी हुआ । जो प्रभु चोर का पता नहीं लगा सके, वे भगवान कैसे ? काठ के लक्कड़ हैं ।''

खुंटिया ने कहा -'' मुझे बहुत दुःख हुआ ।''

मैं बोला -''काठ क्या जीवंत परीक्षा लेंगे ?''

''हाँ, लूंगा ।'' जोर कर उन्होंने कहा ।

''तो आयें । दोनों को साथ लेकर मंदिर में गया । युगल नयन निहार रहे । कहा -

'' ये साक्षात देवता हैं । जो चाहें मांग लें ।''

''मैं क्यों मांगू ? अपनी बात कही दी !''

वे भी जिद्दी । मैंने कहा-''परीक्षा के लिए आये हैं । पीछे क्यों हट रहे हैं ?''

''जो मांगूंगा, प्रभु देंगे ?'' उनके स्वर में दृढ़ता थी ।

''मांगिये तो सही !'' मैं भी छोड़ने वाला न था ।

''मुझे मुक्ति दे सकेंगे ये प्रभु ?''

''देंगे ! परीक्षा कर देखें ।'' मैंने दृढ़तापूर्वक कहा ।

उनकी बात सुन मैंने हाथ उठाये । खुंटिया भाव विभोर कहते रहे - मैंने हाथ उठा कर कहा - भगवान ! बनर्जी बाबू की मुक्ति हो, इतनी-सी कृपा करें ।''

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दंपति विदा लेकर चले गऐ । साल भर बाद एक विधवा मुझे प्रणाम कर पूछने लगी -

"आपने पहचाना ?"

खुंटिया बोले -"मैं नहीं पहचान रहा ।"

"उस दिन मंदिर में जिनके लिए सुनयन प्रभु से कहा था, उनकी मुक्ति हो गई । वे उनके पास चले गए । मैं उनकी विधवा ...! कार्तिक माह में व्रत पालन करने आयी हूँ ।" महिला ने कहा ।

मेरी जबान नहीं खुली । ऐसे अजीब ठाकुर हैं, सांवरे ! तभी खुद न जा आपके हाथों दीप भेजा ।"

खुंटिया की बात सुन चुप ! संयत कर कहा -" आपके जरिये मुझे सम्हाला है प्रभु ने ।'

आपका दीप मेरे हाथ से लिया है । दीप जलना उसकी इच्छा । दीपदान के ग्रहीता वे हैं, यह संकेत में सूचित किया । दूसरे के लिए दिया, तो अपने लिए क्यों न दूं । सदा का आचरण बदलने वाला मैं कौन हूँ ? पद्धति बदलने का अधिकार नहीं । प्रभु आपके जरिये मुझे निर्देश दिया है ।"

खुंटिया ने हाथ जोड़े । प्रभु को देखा । प्रभु की वही अमिट मुस्कान । वे कह रहे हैं -"दीप की ज्योति में । ज्योति से ज्योति की आराधना होती है । यह भाव का विषय है । छोड़ो फालतू के तर्क । जाओ दीप जलाओ । वह ज्योति तेरे अंतर में है । वह घी भक्ति का है, और अधिक घी से जला वह दीप । धीरे-धीरे अंतर में दीप जल गए । उसीमें मैं मिलूंगा ।"

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुकारो, वे सुनते हैं

"बापू इतनी देर तक श्रीजगन्नाथ मंदिर में क्या कर रहे हैं ?" मेरे दोनों बेटे अपनी मां से पूछ रहे हैं ।

बापू श्रीजगन्नाथ मंदिर में ठाकुरजी को खड़े देखते रहें ! उस पुराने स्तोत्र को बार-बार गाते होंगे । वाध्य हो प्रतीक्षा करनी पड़े । इतनी देर लगाने में क्या मिलता है ? वे बिना उत्तर दिया चुप रह जाती ।

वे श्रीजगन्नाथ को माथा टेकते हैं । जरूरत हो बाइस पावछ पर एक बार, गरुड़ स्तंभ के पास एक बार, फिर अंदर जा कर तीनों देवों को तीन बार । बस हो गया ! फिर इतनी देर क्या करते हैं ? निरुपाय होकर बेटे प्रतीक्षा करते हैं ।

भैया इतनी देर मंदिर में क्या करते हैं ?

साथ गया छोटा भाई भी नहीं समझता । वह भी भतीजों के संग सहमत है । भैया बेमतलब इतना समय लगाते हैं । शायद गलत अर्थ में 'अति भक्ति ' नहीं कहता, पर इतनी भक्ति के पक्ष में भी नहीं ।

मेरे पिता भी ऐसी भक्ति के पक्ष में न थे । पर उनका था निर्लिप्त भाव । बेटा घंटों खड़ा निहारे । वे मगर अंदर आफिस के पास सीढ़ियों पर बैठ ऊंघते । बेटा आने पर गाड़ी के पास चलें, बच्चे चारों ओर घूम-घूम फिर चुके हैं । कीर्तन चकड़ा पर मंजीरी खूब जोरों से बज रही । श्रीजगन्नाथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मंदिर के उस भक्तिमय परिवेश से यहाँ कुछ चैन अधिक है । खंजड़ी की चोट पर दो - चार बार सिर हिलाने के बाद अच्छा नहीं लगता । हालांकि कलकत्ते से बसों में आकर कौतुक परायण, हास्यमुखी सुन्दरियों की बेढ़ा परिक्रमा एक मनोरम व्यतिक्रम उनकी ओट कर शुक्ल साढ़ी पहन विधवाओं की शोभा यात्रा का शुष्क परिवेश बच्चों को कब तक रोक रखेगा ? भोग मंडप पर नजर जाती है, यहाँ दीवार पर प्राचीन जलयात्रा का चित्र है । ओड़िया साधव के गौरव पूर्ण अतीत की कहानी है । कोणार्क की समकालीन कमनीय कला । गवेषणा में बोझिल मन को लिए कल तक प्रतीक्षा करेंगे ? बाइस पावछ पार कर कार की ओर मुड़ गए बेटे ।

वे चर्चा करते -''पिताजी को सहना मुश्किल है । ज्यादा रात में गाड़ी चलाकर जाने में नींद का डर । आँख पर तीन बार पानी छींट लिया । चार बार चाय पी चुके । आधी रात में घर पहुँचना । ठंडा महाप्रसाद खाना, वरन जल्दी जा कर दो ग्रास अन्न महा प्रसाद सेवन बेहतर होता । इनको कहे कौन ? समझाना व्यर्थ है । जो समझा वही । बाकी जानें दारुब्रह्म श्रीजगन्नाथ । कार के पास जाकर गोपबंधु की मूर्ति के पासवाली दुकान से सकोरा भर खीर खाई, एक -एक गिलौरी पान लिया । यहाँ इंतजार करेंगे । छोटी बेटी को इधर फिकर नहीं । चैन से कार की पिछली सीट पर नींद ले रही । सागर बालू पर उछल-कूद कर, लोना पानी में गीली हुई । मिक्सचर खाये, श्रीजगन्नाथ का स्वाद लिया । पिताजी के श्रीजगन्नाथ दर्शन के कारण समुद्र के साथ अच्छा संपर्क हुआ, वे खुश । पिताजी को कोई कष्ट नहीं दिया । कार की पिछली सीट को अपना लिया । छोटा भाई मंदिर में अपने राजनैतिक कार्यकर्ता पा कर बड़दांड पर फिलहाल परिस्थिति का विश्लेषण कर रहा । राजनैतिक चर्चा जारी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है । श्रीमंदिर कहीं खो गया । बच्चों ने जाना कि पिताजी अभी भी दर्शन कर रहे हैं । श्रीजगन्नाथ के उन विशाल नयनों में है क्या ? दादाजी ऊंघते - ऊंघते सो गये हैं । बया का हवा में घोंसले का क्या बिगड़ता है ? प्रतीक्षा कर बेटे दोनों छटपट हो रहे हैं । श्रीजगन्नाथ के कारण कितने परेशान हैं ! भाग्य से दीदी अबकी ससुराल से साथ नहीं आयी । वरना वह भी पिताजी की तरह घंटों खड़ी-खड़ी देखती रहे ! भाइयों को जबरन मां और दादी संग लाइन में खड़े होने के लिए । अनेक कुसंस्कारों का जादू लगा एक साम्राज्य खड़ा कर लिया क्या श्रीजगन्नाथ ने ? मां-दादी का चारा क्या है ? पिता के पीछे रह दादी सब कुछ पी रही है !

मन में गर्व ! बेटा कितना भक्त है ! श्रीजगन्नाथ की आँख से आँख मिला रहा है । भक्ति की परिभाषा बदल गई । यह अजीब जीव दादी समझेगी कैसे ? शिवोहम्, अहम् ब्रह्मा स्मि - वे तत्व बूढ़ी कैसे समझेगी ? बेटे का गद्‌गद भाव देख बूढ़ी एकदम विभोर है । गर्व में फूल पोते को आवाज देती - ''इसे लिंगराज ने दिया है ! वह पेट में था तो मैंने बार-बार भागवत सुनी है । उसमें भक्ति नहीं होगी ? तुम सब कहाँ से आये ?'' श्रीजगन्नाथ स्वयं मूक हैं । मुँह खोलने की शक्ति नहीं । निचला होंठ भर है । ऊपर वाला नहीं । फिर भी बाप-दादों से सुना है वे कैसे बड़बोले हैं ! मां पर दया आती है । घंटों पिताजी के पीछे खड़ी होने के सिवा और कोई उपाय नहीं । पिताजी भक्ति करते -करते पीछे मुड़ कर देखते कि पीछे मां है या नहीं । वह अब क्या करें ? सहधर्मिणी, अनुगामिनी, विमला मंदिर, लक्ष्मी मंदिर, बाट मंगला, नवग्रह आदि सब जगह दीप जलाती है । 'हो गया अब चलें' पूछने पर भी मुक्ति कहाँ ? दादी ने कहा है, शिव ने दिया है, अत: वे शिव कोपी हैं' शिव कोप से डर कर मातृदेवी हाथ जोड़े

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिष्या की तरह खड़ी है । पास में बेटे पर स्नेह में दृष्टि डाल रही । उफ् कितना उबकाऊ है यह दृश्य !

-"अरे ! श्रीजगन्नाथ पर दृष्टि दे, मुक्त होगी ! बेटे को क्या देख रही हो ?" हँसकर दोनों बेटों ने कहा । दादी की आँखें मानो कह रही - " अरे, देखो कैसा भक्त है मेरा बेटा !" अद्भुत लीला । बड़दांड से मंदिर आते - जाते पांव पिराने लगे । तुरत निर्णय लिया - अब पिता संग पुरी नहीं आना । चाहे गुस्सा हों, मां और वे आयें । या वो या दादी आयें । दीदी आये तो वो भी आये । हम तो बस करते हैं । क्लास में ओड़िया अध्यापक ने कवि सूर्य पर बताया -

" मैं हारा, बस इतना ही हो !
जुहार करुं श्याम तेरे प्रेम को हो ।"

बच्चों की चिंता के जगत से जाते नहीं श्रीजगन्नाथ । श्रीजगन्नाथ को जुहार ! उनकी प्रीत को जुहार ! उनकी प्रीत वन्हि में हम जल मरे । ओ ! अब श्रीजगन्नाथ ने हमारी सुनी । पिताजी का दर्शन कार्य संपन्न हुआ । अरुण स्तंभ के पास दिख रहे हैं । पीछे दादा-दादी हैं । पति परायण, धर्म परायण होने के अलावा गति नहीं । मां भी थके कदमों से गाड़ी की ओरं बढ़ रही । प्रभु श्रीजगन्नाथ ! आप के प्रति अश्रद्धा नहीं है । पर क्षमा करना । हमारी आप न सुनें तो कौन सुनेगा ? हाथ जोड़ जल्दी-जल्दी बेटे बिदा हुए ।

रास्तें में दादी फिर गाती है बेटे की प्रशस्ति । कानों में रुई तो लगा नहीं सकते । सुननी होगी । श्रीजगन्नाथ यात्री होना एक बड़ी ड्रिल है । दादी पिताजी की बात कहती जा रही -" इस जैसी भक्ति और किसी भाई में नहीं । छठी क्लास में था तभी से श्रीजगन्नाथ के दर्शन कर स्कूल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाता । नवकलेवर में ज्यादा भीड़ होगी, यह सोच हम उसे पीछे छोड़ आये थे । वह छुप कर आ गया था । श्रीजगन्नाथ का स्तव स्वयं लिख कर खायेगा । कैसा मधुर गला पाया है ! असह्य ! धीरज का बांध टूट गया । पितृ अपमान हो पर मातृत्व का यह वृथा अहंकार और दंभ, इस खोखले बेलून को फोड़ना होगा । श्रीजगन्नाथ ! इसमें आप को न्यून करने की बात नहीं । पर भक्ति और वाचालता के बीच तो सीमा रेखा होनी चाहिए । तेरे जैसी भक्ति के कारण पेट से जन्मे अत: पिताजी में इतनी भक्ति हुई !'' पिताजी ऊंघ जायें, अत: काका गाड़ी चलाने उठे । ड्राइविंग सीट पर बैठ हार्न बजाया । सब बैठ गए । छोटू ने पूछा -'' इतनी भक्ति कर क्या पाते हैं ?''

पत्नी ने कहा- ''पिताजी को क्या मिलता, नहीं जानते ?''

''ज्यादा क्या मिला ? सब जैसे हो रहे हैं, पढ़ाई कर जो होते हैं । श्रीजगन्नाथ ने ज्यादा क्या दिया ?'' छोटू का तर्क था ।

पत्नी बोली -''अरे नहीं सुना ? पिता ने कुछ नहीं बताया ?''

श्रीजगन्नाथ दर्शन कर लौटा तब से मैं चुप । गाड़ी चल रही । अमेरिका और रूस के जर्मनी पर संयुक्त आक्रमण की तरह श्रीजगन्नाथ का पक्ष समर्थन कर मां व दादी दोनों बेटों पर शस्त्राघात कर रही । सहधर्मिणी बम वर्षा रही । ''पिताजी को जो मिला, उससे बढ़ कर क्या मिलता ?' बेटे अवाक ! पत्नी बोले जा रही -

मैट्रिक के परीक्षार्थी थे तुम्हारे पिता । गणित में कमजोर थे, टीचर के मन में डर था शायद प्रथम श्रेणी न मिले । अंग्रेजी, गणित, इतिहास खूब अच्छे हुए । अंग्रेजी परीक्षा वाले दिन पास खड़े शिक्षक निबंध देख शाबासी दे कर चले गए । मन में आशा - आकांक्षा । दादी ने श्रीजगन्नाथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के जो तुलसी और महाप्रसाद दिया, वह जेब में है । विजय जरूर होगी । घर का बड़ा बेटा पहली बार मैट्रिक दे रहा है । दादा से मांग कर पहनी रोल्डगोल्ड घड़ी । गोरे हाथ पर फबती है । दादा का कहना है - ''मैट्रिक पास करने पर बेटे को ससुर ऐसी घड़ी देंगे । हाथ में कितनी सुन्दर लगती है !''

पीक्षिा का अंतिम दिन है । प्रथमार्ध गणित का अतिरिक्त प्रश्न देखते ही पिताजी को अंधेरा दिखने लगा । जो पढ़ा, सब भूल चुके हैं । एक भी नहीं आता । समझ गए दादा-दादी का सारा हिसाब -किताब यहीं गड़बड़ा गया । फेल हो रहे हैं । जेब में श्रीजगन्नाथ का निर्माल्य और तुलसी । पिताजी ने मुँह में डाला । कुछ नहीं आता । चारों ओर अंधेरा ! खूब सहज प्रश्न है । हॉल में छात्र एक पर एक खाता दे कर उठ रहे । हताशा के बादल घिर आये । महाप्रसाद व तुलसी टेबुल पर रख, हाथ पर रख सिर रख पिताजी सो गए । मन में कोई कह रहा -''प्रभु, आप के रहते मैं फेल हो जाऊंगा ?'' पिताजी को नींद आ गई । किसी के हाथ का स्पर्श हुआ तो नींद टूट गई । यह कौन ? कमरे का गार्ड कहाँ गया ? उन्होंने कहा -''उसके बदले मैं आया हूँ । बिना लिखे ही सो क्यों रहे ?''

''सर, कुछ याद नहीं आता !''

तुम्हारे पिता ने कहा -''क्या हुआ, समझ नहीं आता ।''

''बाकी दिन कैसा किया?''

''बहुत अच्छा !''

''फर्स्ट डिविजन मिलेगी ?''

''उनमें तो जरूर ।'' पिताजी ने उत्तर दिया ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

''तुम्हारे सामने बैठे लड़के ने अच्छा लिखा होगा ?''

''हाँ, सर ! वह अच्छा करता है !'' पिताजी बोले बिना विचारे उत्तर लिख दो । मैं बाहर रखवाली कर रहा हूँ ।'' शिक्षक ने भरोसा दिलाया ।

तेरे पिताजी ने यही किया । बाद में उन शिक्षक को तेरे पिता ने फिर नहीं देखा । द्वितीयार्ध में विज्ञान, तुम्हारे पिता ने अच्छा किया । हॉल में दूसरे शिक्षक थे । तुम्हारे पिता ने प्रथम श्रेणी में पास किया ।'' मेरे बचपन का संकटमय समय । श्रीजगन्नाथ की अपार करुणा की लंबी कहानी बच्चों के आगे एक सांस में कह कर श्रीमती चुप हो गई । दोनों बेटे आँखें फाड़े देखते रहे । मेरी मां के चेहरे पर विजयिनी-सी मुस्कान । परिवेश शांत हो चुका ।

तब तक छोटी बेटी की नींद टूट चुकी उसने मुझे पूछा -

''बापू, फेल हो जाते, तो क्या करते ?''

''प्रभु उसको सदा सहायी होते रहे हैं !'' पिता ने गद्‌गद स्वर में कहा । श्रीजगन्नाथ मंदिर में यंत्रणा भरी दादी की पुत्र प्रशस्ति, पिता ने भक्ति भरे हृदय से मुझे देखा - कहा -

''अरे विश्वास करो ! बुलाने पर वे सुनते हैं ।''

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सच वे खाते हैं

श्रीमंदिर (पुरी) के प्रशासक बाबू बिहारी लाल पटनायक । वे स्थानीय वासिंदा हैं । पुरी के भक्तों के मत के साथ ताल मिला वे भी भोग मंडप में लगने वाले श्रीजगन्नाथ के भोग को न्यून मानते ।

उस दिन मंदिर में टहल रहे थे प्रशासक । मन में किसी ने पूछा - "क्यों तू भोग मंडप का प्रसाद नहीं लेता ?"

"इतनी दूरी पर भोग लगता है । नैवेद्य ठीक से अर्पित नहीं होता ।" मन ही मन तर्क कर रहे थे प्रशासक ।

"ओ हो, तभी नहीं लेते ।" मन में भक्त और भगवान का प्रश्नोत्तर जारी है । "इतनी दूर से भोग कैसे लेते हो ?"

प्रशासक के कड़े प्रश्न का उत्तर गहरे मन से नहीं मिला । प्रशासक अपनी बंधी रुटीन में नीति -नियम चला रहे ।

खूब शोभित है भोग मंडप । मंदिर, मुखशाला, नाट मंडप के बाद खूब कला कारीगरी में भरपूर है यह मंडप । खूब सुन्दर, अद्‌भुत कला का भंडार है । कोणार्क कला के अनूठे भास्कर्य से समता रख गर्व से मस्तक ऊंचा किये है यह रमणीय मंडप ।

इतिहास बताता है कि पुरुषोत्तमदेव ने बनवाया था यह भोग मंडप । साठ पौटी भोग ! वह छप्पन प्रकार । इतना भोग स्थापित करने जगह नहीं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वयं खायें, औरों को खिलायें । उसके अधर स्पर्श से भोग हो जाने के बाद कुछ नैवेद्य लेकर मां विमला के पास समर्पण होगा, मां ग्रहण कर लें, तब वह प्रसाद होगा महाप्रसाद ।

हजारों भक्त प्रतीक्षा में हैं । महाप्रसाद आये तो उन्हें मिले । विवेकानन्द ने कहा था - विश्व का सबसे बड़ा होटल श्रीमंदिर में है ।

होटल से तुलना अटपटी लगती है । फिर भी हजारों यात्रियों की जरूरत पूरी करने, उनके पेट में अन्न पहुँचाने की अद्‌भुत व्यवस्था है । लौकिक दृष्टि में ओड़िया जाति का यह अपूर्व अवदान है । भक्तों के लिए यह अभूतपूर्व व्यवस्था है । अन्न, दाल, बेसर, साग, खटा, मीठा का समन्वय यह सात्विक है आहार । प्राप्त मात्रेण भोक्तम् । प्राप्त होते ही हाथ चले । पंक्ति भोजन में कोई किसी की प्रतीक्षा नहीं करता । जिसका संपन्न हुआ, वह खड़ा होगा । यह महाप्रसाद रूपी अन्न ब्रह्म है । श्रीजगन्नाथ और महाप्रसाद उभय सम हैं ।

प्रभु ही खाद्य ! अद्‌भुत दर्शन ! स्थूल स्वरूप में प्रभु को पेट में रखा ! यह अन्न भोजन ही तृप्ति के बाद की अवस्था है । दिव्य भाव है । दिव्य भाव में प्रभु सूक्ष्म रूप से हृदय में विराजते हैं ।

प्रसाद जूठा नहीं होता । खा कर माथे पर हाथ रखते हैं भक्त । जात-पात का कोई विचार नहीं । एक पत्तल में विभिन्न समुदाय वर्ण के भक्त साथ बैठने में हर्ज नहीं । आध्यात्मिक साम्यवाद का अद्‌भुत नमूना है ।

इतने लोगों की आशा, आकांक्षा का प्रतीक है हंडिया रखने को जगह नहीं । रत्नसिंहासन के नीचे इतनी हंडी रखी न जा सकें । भार के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भार इतने कडुवा को सुवार गण लाते हैं । 'बाट छाड़' ध्वनि जब करें, यात्री अलग हो राह छोड़ दें । रसोइ घर से रत्नसिंहासन तक भोग परिवहन का लंबा रास्ता ।

एक साथ इतनी हंडी रखने इतनी जगह ! रसोइ घर से रत्नसिंहासन दूर है । यह हालत सुधारने के लिए राजा पुरुषोत्तमदेव ने प्रयत्न किया ।

भोग मंडप का निर्माण हुआ । संपूर्ण अवयव पर कोणार्कीय कला की कमनीय कारीगिरी । उसी ढांचे में कारीगर ने बनाया, उसमें मूर्तियां रखी । उसी तरह रखी हैं दुर्गा-माधव और शिव शक्ति की पूजा । ओड़िशा के नौवाणिज्य का वर्णाढ्य दृश्य । समाज में जीविका और जीवन का जीवंत प्रतीक है यह भोग मंडप । जहाँ जो भोग लगे, उसका साधारण नाम 'भंड' भोग है । अधिक संख्या में हंडियों का भोग यहीं लगता है । दूर से पूजा पंडा पूजा करते हैं इसकी । रत्नसिंहासन और भोग मंडप के बीच भक्तों को खड़े न होने को कहा जाता है ।

प्रभु भोग ग्रहण कर रहे हैं । इस समय बीच में किसी का आना उचित नहीं । पर सच क्या भोग ग्रहण करते हैं ? कुछ वैष्णव इस पर विश्वास करते हैं, कुछ नहीं । इतनी दूर रह नैवेद्य लगा प्रभु को पूर्ण तृप्ति विधान कैसे होगी ? पास रखे तभी वे आल्हादित हों । अत: मंदिर के अंदर से आने वाला ही महाप्रसाद हैं । भोक्तव्य है । कई भक्त 'भण्ड' भोग नहीं लेते । अनेक वैष्णव भोग मंडप वाले प्रसाद के पास भी नहीं जाते ।

क्यों बनाया राजा पुरुषोत्तमदेव ने यह भोग मंडप ? क्या यह उद्देश्यहीन अंत:सारशून्य भंडार है ? यह बहुआडंबर लघु क्रिया है ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भंड में भोग लगते समय बिहारीलाल के मन में ये सवाल उठ रहे थे -''इस भोग को कैसे खाते हैं ? मन में कोई उत्तर नहीं मिलता । प्रभु यह भोग नहीं लेते । अत: यह ग्रहणयोग्य नहीं ।'' अपने फैसले पर डिगे हैं प्रशासक ।

उस दिन भंड भोग चल रहा था । भक्तों को नाट मंडप में एक तरफ होने को कहा जा चुका है । घंटी बज रही । गरुड़ स्तंभ के पास खड़े हैं प्रशासक बिहारी लाल । अचानक चौंक गए । कान में किसी ने कहा - '' देखो कैसा भोग लेता हूँ ।'' अवाक बिहारी लाल ! यह संभव है ? मैंने ठीक देखा ? ठीक सुना ? प्रभु क्षमा हो अपराध ! गर्व गंजन ने कई दिन का संचित मान तोड़ा है । उस दिन गद्‌गद हो वर्णन कर रहे थे बिहारी लाल हम चारों के आगे ।

कल प्रभु की रथ यात्रा है । आज नवयौवन दर्शन सुबह नहीं हो पाये । जरा दर्शन मिल जाते ! इसी ओर मन बढ़ा । बंधु महापात्र नीलमणि के घर पर मेला । उनके क्वार्टर में बिहारी लाल आये हैं । अब प्रशासक बने हैं । उनके साथ जाने पर अच्छे- से दर्शन होंगे ।

बंधु वत्सल महापात्र नीलमणि । श्रीजगन्नाथ चेतना में वे जाग्रत हैं । श्रीजगन्नाथ भाव में विभोर । श्रीजगन्नाथ उत्ताप में तृप्त होकर सब की शीतलता दूर करने हेतु गहरा आलिंगत । यह आलिंगित बंपु है मेरा । हृदानंद राय और बिहारीलाल का । भाव विनोदी के रूप में मित्रों के बीच भाव विनिमय का अपूर्व अवसर है । तय हुआ एक और को साथ लेंगे पुरी- नीलमणि के साढू जगन्नाथ बाबू को । निमंत्रण पा वे अभिभूत ... । अभी प्रभु से कहा है -''प्रभु, बस में भीड़ ! अब की बार जा नहीं सकूं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोई बुला कर साथ ले जा सके । ..आपकी इच्छा हो ले जाना ।''

कार चल रही । चारों मित्र भाव में बह रहे । यथार्थवादी प्रशासक चुप हैं । वे वक्ता भी नहीं । श्रोता हैं । परिवेषक नहीं । ग्रहीता हैं । गाड़ी चल रही पुरी की ओर ।

पहुँचते -पहुँचते प्रशासक ने कहा -

'' शीघ्र दर्शन का काम पूरा करो । पौढ़ जल्दी होगी ।''

अपूर्व दर्शन ! प्रभु हँस रहे हैं । उसी में भाषा खिल रही -''आये हो, अत: बहक रहे । मैं भी बहक रहा ।'' प्रेम की बाढ़ दोनों कूल चाट रही । भक्त और भगवान दोनों ऊब-डूब हो रहे हैं ।

पौढ़ हो गई । प्रशासक ने कहा -'' यदि प्रभु के मंदिर जाओगे, रात बारह बजे नहा-धो तैयार होना । दो बजे मंदिर खुलेगा ।''

रात दो बजे नहाकर प्रशासक संग मंदिर में प्रवेश किया । पट खुले । अहा कैसा अद्भुत वेश ! प्रशासक के साथ आकर अणसर में तीनदेव को गाढ़ आलिंगन का सुयोग मिल गया !

अजीब अनुभव ! तीन बड़ी ओबरी की तरह प्रभु का वपु । रेशम डोर में बंधे अनूठे कलेवर के परिरंभ में डूबे नीलमणि भावुक हो कोह में भर गए । आँखें बह चली । जगन्नाथ बाबू को कंठाबरोध । नीलमणि कहने लगे- ''देखो कैसा अदभुत वेश किया है प्रभु ने !'' विपुल बाहु तले प्रणति कर हृदानंद और मैं उन अनंत के रूप में डूब गए । प्रशासक की आवाज सुनाई दी -

''अब चलें ! प्रभु 'सेनापटा' धारण करेंगे । देह पर ढाल लगा, वर्म की तरह काठ का पटा लगायेंगे । योद्धा वेश में उनकही देह सुरक्षित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होगी ।''

बाहर आ गए । प्रभु की 'पहण्डि' शुरू होगी । नीलमणि ने गद्‌गद स्वर में कहा -'' बिहारी भई ! अबकी उस भंड भोग के बारे में प्रभु ने कुछ कहा ?''

बिहारी भाई वर्णन करने लगे- लीलामय की अपूर्व लीला की कहानी । प्रभु ने गर्व तोड़ा कर भ्रम मिटा दिया ।

उस दिन भंड भोग चल रहा था । घंटी बज रही थी । रत्नसिंहासन को अपलक देख रहे प्रशासक ।

अचानक श्रीजगन्नाथ बलभद्र और सुभद्रा के मुख से तीन उज्वल शिखा निकल विराट आलोक रेखा में परिणत हो गई ।

एक विराट हाथी की सूंढ-सी दिखी वह आलोक रेखा । वह सूंढ गरुड़ स्तंभ के पीछे भोग मंडप तक पसर आयी । सारी भोग की हंडियों में मुँह डाल लौट आयी । लौटते समय गरुड़ स्तंभ के पास प्रशासक के कान में कह रही -

''देखा कैसे खाया ?''

बिहारीलाल चौंक उठे ।

जागरण या स्वप्न ?

सत्य या भ्रम ?

बिहारीलाल ने कहा-'' यह बात कई से कही । तुम भी विश्वास करो या नहीं । मेरे लिए सत्य है । भ्रम टूट गया ।''

परिवेश शांत और गंभीर । बहुत दिन पहले एक भक्त की अनुभूति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

याद आ गई । प्रभु कैसे खाते हैं, जानने वह ध्यान में बैठ गया । ध्यान में देखा - तीन ठाकुर की तीन सूंढ निकली, हर भोग से कुछ-कुछ खाया । दो से मुँह फिरा लिया । भक्तों ने सारे भोग खरीदे । एक हंडी उलट कर परीक्षा की । दो में एक-एक मक्खी निकली । वे दोनों गाड़ दी गई ।

उनके अधरों से छूया प्रसाद कैवल्य है । कण भर कैवल्य में कोटि पातक दूर हों ।

किंचित प्राप्ति में अकलित शांति ! मैंने कहा -"आपने ठीक देखा, बिहारीलाल ! सच वे खाते हैं !"

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उनकी इच्छा से घंटी टूटी

दक्षिणेश्वर कई बार जाना हुआ है । श्रीरामकृष्ण की लीलाभूमि दक्षिणेश्वर में प्रभु का निवास और व्यवहृत वस्तुएँ देखकर मन में आनंद हुआ । मां काली का प्रसाद मिला । आरती के समय मां का विजयिनी रूप देखा है । याद आयी है प्रभु रामकृष्ण की भावभीनी कथा । ''मां खायें'' कह कर सहज भाव से स्वयं खा रहे हैं मां को निवेदित नैवेद्य ।

पढ़ी है श्रीश्री ठाकुर अनुकूल चंद्र की अनुभूति । मंदिर में आकर उन्हें जोरों की भूख लगी है । तब तक प्रसाद नहीं है । वे सो जाते हैं । स्वप्न में देखते हैं काली मां भवतारिणी । हाथ में उनके थाल भरा संदेश । एक पर एक संदेश मां ठाकुर को खिला रही हैं । कह रही हैं -'' पगले ने सबके सामने प्रसाद मांगा, मैं कैसे देती ?''

नींद टूटती है ठाकुर श्रीअनुकूल की । नींद टूटने के बाद पेट भरा था और भूख न थी ।

बहुत बाद में इसका पता चला । पहले दक्षिणेश्वर गया तब पता न था ।

अबकी इच्छा हुई बेलूर चलें ।

श्रीश्री रामकृष्ण के प्रमुख शिष्य विवेकानन्द द्वारा प्रतिष्ठित बेलूर मठ प्रांगण में घूम रहा था । साथ सहधर्मिणी हैं । यहाँ पर विवेकानन्द की स्मृति विजड़ित हर वस्तु अच्छी लग रही है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक बंगाली सज्जन और महिला भी साथ हैं । खूब मिष्ट भाषी लग रहे । हमें दिखा कर अपनी पत्नी से वे कुछ कह रहे हैं । कुछ क्षण बाद पत्नी को वहीं खड़ी कर वे सज्जन हमारी ओर आये ।

''आप कब से कलकत्ते में हैं ?'' मुझे पूछा ।

''दो दिन हुए, आये हैं । क्या मुझे पहचानते हैं ?''

-''हाँ, पुरी मंदिर में भजन गा रहे थे । आपके भजन बहुत अच्छे लगे !''

'कब गए थे ?''

'कुछ दिन पहले ! मैं और पत्नी श्रीजगन्नाथ के दर्शन करने गए थे । आप और आपकी धर्मपत्नी गरुड़ स्तंभ के सामने बाड़ के पास एक पर एक भजन गाते रहे !''

''पद्मावती जयदेव के पास खड़ी होने की तरह बहू दीदी खड़ी थी । श्रीजगन्नाथ को देखती रही । आप अपने भजन गाते रहे !''

अनेक लोग सुनते रहे । कई ओड़िया भाई स्वर में स्वर मिला कर गा रहे थे । परिवेश सुन्दर बन गया । भाषा न समझ पाने पर अधिकांश समझ रहा था, आप तन्मय हो गा रहे थे । आपने हमें नहीं देखा । हम आपको देख रहे थे ।

उनका कलकत्ता में प्रेस है । नाम दिया है मोहिनी मुद्रणी ।

गद्‌गद स्वर में वे कहने लगा -''आप श्रीजगन्नाथ के आदमी हैं । आपके चरण हमारे घर में पड़ेंगे ?''

धन्य प्रभु ! दूर कलकत्ता में भी आपका जन होने का परिचय ! उनकी कार में उनके कलकत्तावाले घर गये । सब एकान्नवर्ती परिवार के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सदस्य । साथ रहते हैं । चार भाई हैं । जान कर सब खुश हुए । हम चार भाई हैं, हमारा भी प्रेस है ।

सबसे परिचय कराया मोहिनी मुद्रणी के मालिक ने ।

मुझे दिखा कर कहा -"दादा भल गान करन्ति ! दादा श्रीजगन्नाथ रचना बि खूब सुन्दर !"

उन सज्जन के वर्णन और कहने की शैली से मुग्ध हो कर पत्नी से कहा -" बंगाली बंधु दूसरों की प्रशंसा में एक विशिष्ट भंगिमा होती है ।"

किसी का गुण देखने पर प्रशंसा में वे पीछे न रहें इस गुण ने उन्हें बड़ा बना दिया । प्रतिभा की प्रशंसा कर वे प्रतिभाशाली को उत्साहित करते हैं । आगे बढ़ने वाले की टांग खींचने की आदत इनकी नहीं । तभी इतने उतार-चढ़ाव पर भी जाति आगे बढ़ी । सारी पृथ्वी में इनकी भाषा को स्वीकृति मिली है ।

मेरे जिस भाषण में बंगाली बंधु होते हैं वे प्रशंसा करने में दाता कर्ण से भी आगे बढ़ जाते हैं । मुग्ध श्रोता की प्राणभरी पसंद देख छाती फूल जाती है । ये समझदार लोग हैं । इनके आगे परिवेषण में तृप्ति होती है ।

ओड़िया भाषा और संस्कृति का प्रवक्त हूँ मैं । कुछ बंगालियों ने कभी यहाँ की भाषा और संस्कृति को न्यून करने की अपचेष्टा की थी । पर वे बंगाली राखाल दास बनर्जी न होते तो विराट ओड़िया इतिहास नहीं लिखा जा पाता । डीएल मित्र ने ओड़िया मंदिरों को बंगला मंदिर बताया । फिर भी मध्य कालीन उत्कलीय कला में विभिन्न मंदिरों पर प्रकाश डाला है । हालांकि उत्कलीय कवि जयदेव को अपना प्रचार करने की चेष्टा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वाभाविकत: हम बड़े का नमूना है ।

बंगाली बंधु हमें कलकत्ती संदेश से आप्यायित करने के बाद भोजन की जिद करने लगे । श्रीजगन्नाथ के जनों की सेवा कर तृप्त होंगे । श्रीजगन्नाथ जन रूप में परिचित होकर मन में कोई गुमान नहीं आया । मन में सात्विक आनन्द था ।

लंबी शंख अरवी के टुकड़े काट कर इमली संग चटनी बनी । साग-बड़ी, दही और चीनी मिली कटहल की खटाई, सरसों डाल हिल्सा मछली का शोरबा । खूब भव्य भोजन परोसा । प्रभु की करुणा के प्रतीक रूप में ।

बंगाली रसोई की बड़ाई में मैंने कोई कोताही न रखी । बांग्ला में उनके खाने की भूरि-भूरि प्रशंसा - श्रीमती के गले नहीं उतर रही । उनका गंभीर चेहरा देख लगा ओड़िया स्वाभिमान !

तभी बंगाली महिला कहने लगी -"ओ मां ! बहूदीदी कितनी सुन्दर !" श्रीमती का चेहरा लाल हो गया । चुपके से कान में कह दिया - "इन बंगालियों से यों प्रशंसा सीखो !"

श्रीमती का अभियोग है कि मैं ओड़िया सुलभ प्रशंसा में कृपण हूँ । पत्नी के सौंदर्य या उनकी कार्य कुशलता की तारीफ करने में बंगीय पतियों का अनुसरण करना चाहिए मुझे । टिप्पणी भी खूब उपयोग थी ।

बौदी ने कहा -" दादा भोजन जितना स्वादिष्ट बहू दीदी उतनी ही सुन्दर ! जोड़ी कितनी सुन्दर लग रही है !" अबकी श्रीमती का मुँह खुला ।

"यों प्रशंसा में तो आप मुखर हो जाते हैं । इसके लिए बंगाली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिवेश की तारीफ करते हैं ।''

मेरे प्रसन्न भाव में कुछ विराम लाने हेतु श्रीमती उद्यत हो रही हैं । अत: ओड़िया में मुझे सुना दिया । अब उठना होगा । काली मंदिर नहीं गए । खरीददारी भी नहीं हुई ।

सज्जन का अनुरोध था । मैं श्रीजगन्नाथ भजन गाऊं । मैंने गाये । बाद में ओड़िया संगीत और परंपरा पर टिप्पणी की । सुनने का जबरदस्त आग्रह था । सारा परिवार काम छोड़ श्रीजगन्नाथ देस से आये दंपत्ति को घेरे था ।अद्भुत अनुभूति । अद्भुत हैं श्रीजगन्नाथ ! सारे जीवन वे ही मेरे परिचय पत्र रहे हैं । बंगाली बंधु ने पूछा -'' किस अवस्था में पड़ कर भजन लिखे ?''

''अधिकांश भजन छात्रावस्था के हैं । कई कामों में रह परीक्षा की तैयारी नहीं कर पाता था । फिर अपमान का डर होता । इस डर से बचने हेतु मान उद्धारण श्रीजगन्नाथ को आकुल निवेदन करता !''

''कर कृपा श्रीजगन्नाथ !
तुम बिन और कौन
करेगा सार्थ मनोरथ !''

यह भजन बना कर प्रभु को पुकारा है । लिखा -

''डूबा इस घड़ी हे प्रभु
बिन कृपा तुम्हारी ।
इस जग में होगा अपयश
याद रखें दैत्यारि !''

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आपका अपयश होगा ! अपकीर्ति पताका उड़ेगी, मेरी सुरक्षा हेतु प्रभु का आवाहन किया । परीक्षा समुद्र की लहर दर लहर लांघता गया ।

-"आपके भजनों में भाव सुन्दर हैं । तभी मन लगा प्रभु सुनते हैं । तभी भोग के समय घंटी टूटी ।"

"भोग के समय घंटी टूटी ?" सज्जन की बात सुन अचंभे में श्रीमती ने पूछा ।

-"हाँ बहू दीदी ! आप नहीं जानती ! मैंने खबर कर पता किया ।"

दादा जब गीत गा रहे थे, भाव में डूबे थे । श्रीजगन्नाथ को देख रहे थे । आप उन्हें देख रही थी । परंतु हम देख रहे थे श्रीजगन्नाथ और आप सब को ।

दादा एक पर एक गीत गाते गए । हम सुनते रहे ! पंडे भी हमारे साथ सुन रहे थे । तभी एक पंडा ने कहा -" अब भजन बंद करें । प्रभु को भोग लगेगा । भोग होने के बाद फिर गायें ।"

मैंने कहा -" हाँ, ये तो याद है ।" मैंने तब उत्तर दिया -" एक बार संकल्प लेकर गाना शुरू किया तो उसे बंद कैसे करुं ? अलग -अलग समय गीत लिख बाईस पावछ की तरह बनाये हैं । 'जणाण बाईस पावछ' । पूरा निवेदन बिना बंद नहीं कर सकूंगा ।" कह कर धीमे स्वर में गाता रहा ।

बंगाली बंधु कहने लगे -" दादा भजन गाते रहे । उधर किवाड़ बंद, भोग शुरू । इधर धीमे बाजा । उधर तुरही बज रही । अंदर पूजापंडा का घंटा बज रहा । इतनी आवाजों के बीच भजन सुनाई नहीं देते ।

अचानक तुरही व घंटा बंद हो गए । भोग के समय पूजक के हाथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से घंटी छूट गई । सुनाई न पड़ी बाजा और तुरई बंद होने पर दादा के भजन सुन न सके । सेवकों से घंटी टूटने की बात पूछी । उन्होंने कहा - " कोई भक्त भजन सुना रहा है । प्रभु सुन रहे हैं । घंटी बजने कोई भजन सुनाई नहीं पड़ा । प्रभु की इच्छा से घंटी टूट गई ।" इस बात पर दादा के प्रति मन में श्रद्धा भर गई ।

बात सुन श्रीमती अभिभूत थी । आँखें छलछला आई । पास रह कर श्रीजगन्नाथ महिमा समझ न सकी । पुरुषोत्तम धाम पुरी से इतनी दूर रह बंगाली से श्रीजगन्नाथ की अपार कृपा की अद्भुत कथा सुनी ।

प्रभु श्रीजगन्नाथ की अनुभूति में दीप्ति में जीवन चिर उद्दीप्त , चिरभास्वर ।

अकिंचन दास पर प्रभु की इतनी अनुकंपा ! महनीय महिमामय हैं वे !

बंगाली बाबू कार लेकर आये हैं । जहाँ जाना है, छोड़ देंगे । उन्हें कहा -" गीतगोविन्द गाते समय महिला भक्त की बैंगन क्यारी में प्रभु का पीतांबर कांटों में उलझ कर फट गया । ऐसे भक्ति का भाजन मैं नहीं । अभाजन पर करुणा के कारण भजन सुने प्रभु ने !"

दयासागर की दया की तुलना नहीं । एसिस्टेंट एजूकेशन डायरेक्टर के रूप में बंगाल में एनसीसी कैंप देखने गया था । बंगभाषी के स्वर में झरी थी रंगनाथ जगन्नाथ की लीला की अद्भुत कहानी ! भक्त माधव भावग्राही भावग्रहण करते हैं, उनकी इच्छा से ही भोग के समय घंटी टूटी !

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुन:कांची अभियान

टिकट ! टिकट !

डिब्बे में आकर टीटी ने पुकारा । माझी बाबू ने जेब से रसीद निकाली । सात की टिकट है । ब्रह्मपुर से मद्रास । हम छ: बैठे हैं, बाकी वह कहाँ ? वे हैं । उनके नाम से टिकट बनी है, एक बर्थ पर बैठे हैं वे । दोनों बांह फैलाये, निश्चिंत ! आँख फाड़-फाड़ कर टीटी की ओर देखा । चेहरा चादर से ढका है । पर पहचानने में दिक्कत नहीं । मोटा पेट, ढंका है । मगर साफ नजर आ जाता है ।

''कहाँ जाना है ?'' ऊंची आवाज में टीटी ने पूछा-''छ: सौ साल बाद कांची की ओर निकले हैं ।'' मैंने कहा ।

-''ऐं ! छ: सौ ! फिर कांची ! टीटी का चेहरा विस्मय में भर गया ।

काल जिन चरणों में सदा सेवा करता है । समय जिनको सीमित नहीं कर सके । आज वे यात्री हैं ! टीटी उनकी टिकट जांच कर चुके हैं । कैसा अजीब संयोग है ! हर यात्रा के नायक । हर यात्री के लक्ष्य ! केंद्र !

टीटी ने सिर उठा उस नायक को देखा । चादर ढंके चेहरे के नीचे से वह चमकदार मुस्कान दिख जाती है । गौर से देखा टिकर साहब ने । इस मुस्कान में एक भाषा है । वह कहती है -''अरे ! मैं तेरे चक्कर में पड़ा हूँ । तू भी चक्कर में पड़ेगा । कोई किसी को छोड़ने वाला नहीं । तू मेरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जांच करने आया है । बता तूने अपना कर्तव्य ठीक से निभाया ? सारे काम ठीक से किये ? ठीक राह चलता है ? तू तो मेरी बाहर से जांच करेगा । मैं तो भीतर - बाहर पूरी जांच करुंगा ।'' अद्‌भुत भेंट । टीटी निर्वाक निस्पन्द रह गया ! दृष्टि उस यात्री और सहयात्री पर । वह मेरे पास धम से बैठ गया । मुँह खोला -

''वे अकेले तो नहीं हैं ।''

''उनके परिवार के और तीन भी साथ हैं ।''

सच ! साथ भाई, बहन और एकजन और हैं । कहा -'' तब हमारी भूल हो गई । हम सात नहीं दस हैं । हममें तीन बिना टिकट के बुक करें । वे हमारे दलपति हैं । उनके नाम जुरमाने की रसीद काटें ।''

वे और उनकी पार्टी के नाम टिकट बनी है । उनका नाम लिख जुरमाना अदा करें ।''

परिवेश गंभीर । उस बात का रस ग्रहण कर टीटी के चेहरे पर हँसी आ गई ।

टीटी और मेरी हँसी मिल कर रसमय परिवेश बना रही थी । ''यह उनकी पहली रेल यात्रा है ?'' टीटी ने पूछा ।

''ना, ना, कई बार जा चुके हैं । अब तो यात्रा की आदत हो गई है । पहले घोड़े पर जाते ।''

''इतनी दूर पहले गए हैं ?''

''हाल ही में पंजाब गए हैं ।'' मैंने कहा ।

''ओड़िशा की विभिन्न जगहों इनका गश्त होता है ?'' टीटी ने हँस कर पूछा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैंने कहा -" ये तो टूर में मास्टर हैं । ठीक से बुलाओ तो कहीं भी चले जायेंगे । वरना अचल महामेरु तिल भर न हिलें । महाराज पधारें ... सब चातक -से ताकते रह जायें और दो आँसू ... जरा कोह... तो फिर आसन हिला । चल पड़ें । ज्यादा जरूरी नहीं । भाव में सब समझ लेते हैं ।"

-" किसके बुलाने पर है यह कांची यात्रा ?"

-" मद्रास शहर में एक हार्ट स्पेशलिस्ट हैं, वे और उनके भावुक सहयोगियों ने बुलाया है ।"

"ओड़िया हार्ट स्पेशलिष्ट ?"

मेरे साले डा. कवि प्रसाद मिश्र । पच्चीस वर्ष पहले वे राउरकेला में थे, महाराज तब वहाँ भी पधारे थे । हम दोनों मिल कर प्रभु से भेंट करने वहाँ गए थे ।"

प्रभु के पधारने की बात सुनने में आग्रही हो उठे टीटी ।

कहा -" महाप्रभु के रहने के लिए विराट प्रासाद बनाया गया था । बना रहे थे राउरकेला के विशिष्ट कंट्राक्टर हरिहर प्रधान । किसी से पैसा न लेकर उनका प्रासाद बनाने का भी प्रण था । लोगों के पास उधारी डूब गई । उमर ढल गई । फिर भी निर्णय था । वह प्रासाद पूरा करेंगे । बस, अच्छे समय की प्रतीक्षा थी । समय आया । कुछ-कुछ उधार के पैसे लौटे । प्रासाद में सीमेंट लगी । किसी से कुछ न मांगा ।

प्रासाद बनाने वाले मुख्य मिस्त्री महारणा से परिचय हुआ । तब मैं सुन्दरगढ़ में था, टूर में बराबर राउरकेला जाना होता ।

-"वो तो जानता हूँ ।" टीटी ने कहा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

-''कैसे ?''

''जी, गंजाम में टीचर था । आप सी आई थे । ट्रांस्फर हो सुन्दरगढ़ गए ।''

मैंने कहा -''अजीब संयोग है । तब का स्कूल मास्टर आज टीटी ! उस दिन का सरकारी 'बाघ' आज मैं गैरसरकारी 'चूहा' ।''

-''बाघ से आप चूहे नहीं बने । आज भी आप बाघ हैं ।'' टीटी ने कहा ।

-''ना ठीक कहता हूँ । सरकारी बाघ अब गैरसरकारी चूहा है । पर उस चूहे के मालिक हैं स्वयं गणपति ! वे हमारे साथ हैं ।''

कपड़े की ओट से दिख रही उन गणपति की मृदु मुस्कान ! सहयात्री भी टीटी की तरह उत्सुक श्रोता बन चुके हैं । आज कांची अभियान के महानायक के राउरकेला निवास का वर्णन कर रहा था -

''राउरकेला में बने नये प्रासाद में महाप्रभु की प्रतिष्ठा होगी । प्रासाद हेतु कुछ करने की मेरी इच्छा थी । मंदिर निर्माण में हरिहर बाबू किसी को कष्ट देना नहीं चाहते । मंदिर के मुख्य किवाड़ लगाने की अनुमति मिली । यह प्रभु का अनुग्रह था ।

प्रतिष्ठा उत्सव के साथ संपृक्त होने की मेरी इच्छा थी । पर पहले तीन दिन रह न सका । मन में था अफसोस । आखरी दिन पहुँचा । प्रतिष्ठा में जरा भी शामिल हो न सका । मन में ग्लानि थी । चुप था ।

तभी एक युवक पुरोहित हाथ खींच ले गया कोने में । एक लकड़ी गाड़ने को कहा ।

''यह लकड़ी क्या है ?''

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह यज्ञ यूप है । यज्ञ के बाद कर्म रूप में यह गाड़ा जाता है । मैंने पूछा -"कर्ता के हाथों यह काम न कर मेरे हाथ क्यों ?" "कर्ता को समय नहीं । आप मिल गए ! आपके हाथों होने का योग है ।" धन्य प्रभु ! सोचते ही प्रभु चिंतामणि फल देते हैं । पूछा -" मुझे पहचानते हो ?" उन्होंने कहा -" नहीं । मुझे अंत: प्रेरणा हुई कि आपसे कहूँ ।"

टीटी गद्‌गद हो उठे । -"वांछा कल्पतरु सबकी मनोवांछा पूरी करते हैं ।"

बांछा कल्पतरु अब पहचान में आ गए । छ सदी पहले भक्त की वांछा पूरी करने कांची गए थे । अब वहाँ से साठ मील दूर मद्रास तट पर उसकी वांछा पूरी करने पधारेंगे । प्रभु यात्री हैं । साथ हैं बलभद्र और सुभद्रा एवं सुदर्शन ।

कांची से गणेश मूर्ति की वहाँ प्रतिष्ठा हो चुकी थी । कांची शंकराचार्य जी ने मेरे हाथ में गणपति अर्पित किये थे । कांची जाते समय कवि बाबू के मित्र प्रो. माझी ने शंकराचार्य से गणपति मूर्ति मांगने का मुझे अनुरोध किया था । मेरे अनुरोध पर तुरत राजी होकर गणेश मूर्ति प्रदान की थी । मेरी गोद में बैठ प्रभु गणेश आये थे ।

आज विग्रहवंत हो प्रभु पुरी से पधार रहे हैं । नवकलेवर दारु से रूप मिला है उनके वपु को । नवकलेवर से पहले उन्हें कोई नहीं देख सकेगा, अत: झीने परदे से ढंके हैं ।

छुपे हैं या दिख रहे हैं ! छुप कर भी प्रभु (पकड़ाई)पढ़ाई में आ रहे हैं । टिकट जांच करते हुए टीटी ने कहा - जो सारे जगत के साक्षी हैं, उन्हें रेलयात्रा के लिए नियम तोड़ने पर कौन पकड़ेगा ? अगणित ब्रह्मांड के विचारकों का विचार कौन करेगा ? सब तो उन्हीं का खेल है ! जांच में भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वे जीत गए । बाहर चार दिखते हैं, पर वास्तव में वे हैं एक । तभी चारों ने मिलकर एक बर्थ ली है । अनेक होकर भी एक हैं । मैं हारा, वे जीते । बिना टिकट नहीं आये ।''

साष्टांग प्रणाम की टीटी ने । ''सर, राउरकेला की वह कहानी बतायें ।'' मद्रास स्टेशन अब एक स्टेशन के बाद है । सारे रास्ते प्रभु का स्वागत, सम्मान । छः सौ वर्ष बाद प्रभु पुनः कांची की ओर यात्रा पर निकले हैं !

प्रभु की कहानी बखान कर आनंद मिल रहा है ।

कहा -'' प्रभु का मंदिर प्रतिष्ठा से दो -तीन वर्ष पहले मां मंगला की मूर्ति माटी के नीचे से निकली थी । स्वप्न में मांने कहा था - ''आठ फुट नीचे दबी हैं ।''

उस मंगला मंदिर में विनयावनत पसरे थे मंदिर के महारणा और साथी । पुरी की तरह नवकेलवर करेंगे हम । स्वप्न में प्रभु ने आज्ञा दी है । मां मंगला ने स्वप्न में कहा है - षढ़ेईकेला में हैं चारों दारु । तीन दारु मिल गए । सुभद्रा का दारु देने में एक जन राजी नहीं था । उसे स्वप्न में प्रचंड वेत्राघात हुआ । और फिर दारु मिल गया ।

कवि बाबू के साथ दारु के दर्शन किये थे । शंख , चक्र के चिन्ह स्पष्ट थे ।

श्रोतागण उद्‌बुद्ध थे । इस बार नवकलेवर हेतु राउरकेला निकट के बिसरा से दारु आया है ।

अघटन अब भी होता है । असंभव संभव हो रहा है । सुनी थी वहाँ प्रभु के प्रथम प्रतिष्ठा की कहानी महारणा से । प्रतिष्ठा के लिए चार देवताओं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के लिए नेपाल से शालग्राम आये हैं ।

वर्तमान गजपति से शालग्राम मांगने गए थे महारणा जी । उन्होंने उपदेश दिया -नेपाल नरेश से मांगने के लिए ।

''महाराज, आपका काम आप करें !'' महारणा ने निवेदन किया । नेपाल के पशुपतिनाथ के मंदिर की दीवार से टिके खड़े हैं वे । अनेक लोगों की भीड़ के बीच प्रवेश कर रहे नेपाल नरेश । महारणा के मन में आशंका और भय । भेंट कैसे हो ?

''आप उत्कल से आये हैं ?'' महाराजा ने पूछा ।

''आप जिस काम से आये हैं, हम जानते हैं ।'' अजीब संयोग ! महारणा थे अभिभूत ! बिना सिफारिश अज्ञात अनामधेय के हाथों नेपाल नरेश ने सौंप दिये सात मूर्ति शालग्राम ! तीन मूर्तियों के लिए दो-दो, सुदर्शन के लिए एक । आज वे महारणा इहधाम में नहीं ।

सब स्तब्ध । शब्द ब्रह्म का अनसुना नाद ध्वनि में उस रेलगाड़ी में स्वर रूप ले रहा है ।

प्रभु के साथ हैं प्रो. माझी, साथी, राजगुरु और मैं ।

मद्रास निकट आ रहा है । गाड़ी धीमी हो रही । क्षुद्र कलेवर कपड़े से ढंका । खिले दिखते विराट पुरुष ।

मैंने कहा -'' असल बात बाकी है ।

प्रभु की यात्रा हेतु फर्स्ट क्लास की टिकट कटी थी । सारी योजना धरी रह गई । कलकत्ता बंद था । अत: मद्राद मेल कैंसल थी । प्रभु पुरी से भुवनेश्वर हो कर ब्रह्मपुर पहुँचे । वहाँ से जाना मद्रास ! संवर्धना हेतु हर स्टेशन पर भक्त होंगे । मन में घोर अवसाद । कातर हो पुकारा -''प्रभु !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपाय करें ! अपनी यात्रा का आप प्रबंध करें ।''

यह क्या ! अद्‌भुत । साप्ताहिक कोचीन ट्रेन चौबीस घंटे देर से आ रही थी । घंटे भर में ब्रह्मपुर पहुँचेगी । अब चिंता न थी । वहाँ फर्स्ट क्लास में जगह न थी । सेकेण्ड क्लास की एक बोगी में सात सीट हैं ! तो प्रभु के लिए स्थान पहले ही रिजर्व हो गया ! दूसरी ट्रेन में अपनी व्यस्था कर ली ।

आँख हो तो दिखें, कान हो तो सुने ! जागते हों तो उनके हाथ का स्पर्श मिले । टीटी ने कहा -''जय श्रीजगन्नाथ !'' सबने मिल कर जयकारा लगाया ।

मद्रास स्टेशन ! श्रीजगन्नाथ और परिवार का स्वागत करने भीड़ ! प्रो. माझी की आँखें भरी हुई । डाक्टर बंधु देख कर मुस्करा रहे !

प्रभु उतर रहे । मानो सदी का परिचित इलाका । कोई क्लांति नहीं । भक्ति ही आश्रय, भक्त हृदय विश्राम स्थल है । स्टेशन पर विराज रहे प्रभु ! हमने हाथ जोड़ लिए । प्रभु स्टेशन पर उनके लिए आये आसन पर विराज रहे । साथ भाई-बहन, अस्त्र सुदर्शन । वहाँ से तीस कि.मि दूर सागर तट पर बना है मंदिर । कांचि यात्रा के समय शायद विश्राम लिया हो वहाँ ।

कांचि यात्रा की छः सदी की स्मृति में नेत्र विस्मरित लग रहे ! मुझे आरती करने कहा गया । 'आरती के समय मन कह रहा था -ट्रेन यात्रा में बाह्यरूप श्याम घोड़े पर श्वेत ठाकुर और श्वेत घोड़े पर सांवरे ठाकुर विराज रहे हैं । यह प्रभु का पुनर्बार कांचि अभियान है ।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्पण करो, वे ग्रहण करेंगे

नयागढ़ में बालू गांव । श्रीजगन्नाथ से खबर आयी है । देवल प्रशासक ने भेजी है। कहाँ गए रमेश पटनायक ?बालूगांव के पूर्वतन जमींदार वंश के थे रमेश पटनायक ! जोरों से उनकी तलाश चल रही है !

उन्हें ही जानी है श्रीजगन्नाथ की वार्ता । किसी दूसरे को नहीं । वे गांव में नहीं, भुवनेश्वर में रहते हैं ।

सुनते ही श्रीमंदिर के प्रतिनिधि ने कहा -" अगर नहीं हैं तो भुवनेश्वर से आ जायेंगे । श्रीजगन्नाथ ने खबर भेजी है तो वे भुवनेश्वर में नहीं रह सकते ?"

गांव वालों में काफी आग्रह ! क्या वे सच आयेंगे ?

गांववालों की मंदिर प्रतिनिधि से चर्चा चल रही ।

जमींदारी नहीं रही ।

वो सपने हवा हो गए । धन दौलत सब गए । पर जमींदारी कायदा नहीं गया । खाने-खिलाने के रमेशजी खूब शौकीन हैं । खाते समय तीन की खुराकी हजम कर जायें । मिठाई, पिठा, बंड़ा, पकोड़ी, आलूचप, समोसा सब पेट में डाल लें । खूब कह कर अच्छी चीजें खिलाना उनका शौक है । लबा चौड़ा सौम्य चेहरा । जमींदारी बुनियादी दिनों की कहानी कह कर मजे लते हैं । पर इन का गौरवबोध या कोई अभिमान नहीं ।

तब दादा, पिताजी, काकाजी बरामदे में बैठे होते, दूसरी जातवाले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सामने से अंदर जाने का अधिकार नहीं रखते । अगर दूसरे बिना प्रमाण चले जाते तो कठोर दंड मिलता ।

अब ! कपूर उड़ गया, कपड़ा पड़ा है । अब कपड़ा छोड़ रमेश शहर में रहता है । वहाँ कम वेतन में क्लर्क है ।

कई बार मजाक में कहते -" मेरे बाप-दादा के बाघ-सी मूंछ थी । पर मेरी नाक के नीचे की वो फसल साफ हो गई । मूंछ का दूसरा नाम है वीर केश ! अब वीरत्व रहा नहीं, वीर केा रखूं कैसे ?" कह कर रमेश पटनायक खुद हँसते । हँस कर परिवेश हल्का कर देते ।

खूब मजेदार हैं रमेश पटनायक । गुरुदीक्षा देकर घर मंत्र प्रचार करते । प्रेमी आदमी ठहरे । सबको गुरु की बात कह प्रेम वितरण करते । जिनके बापू, मौसा खेत में काम करते, उनके बेटे आजकल बड़े हाकिम और व्यवसायी हैं । वे उनसे कोई ईर्ष्या नहीं करते । न परवाह थी इन बातों की । घर में साग-भात खा कर धर्म चर्चा करते । छोटे -बड़े सब के साथी हैं, सलाहकार हैं । मिजाज के अमीर, व्यवहार में फकीर ।

रमेश पटनायक की जमींदारी- परंपरा और व्यक्तित्व का जीवन्त चित्र पा चुके थे श्रीमंदिर से पधारे प्रतिनिधि ।

अचानक 'हरिबोल' हुलूध्वनि आदि जैकारा हुआ । बस से उतर रमेश पटनायक गांव की सड़क पर पांव रख रहे हैं । कहा -" अचानक गांव याद आया । सोचा, चलो घूम आयें ।"

आज पुरी स्वर्गद्वार में चिता पर जल रहे हैं रमेश पटनायक । अनेक लोगों के प्रिय, मिष्टभाषी, स्नेहिल रमेश पटनायक जलती चिता पर निद्रित, गहन निद्रा में हैं । न पश्चात्ताप, न भावना, चेहरे पर मुस्कान ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हार्ट अटैक में प्राण चले गए । शव शोभायात्रा से पहले उनकी पत्नी से पूछा -" गांव ले चलें ?" उन्होंने कहा -" गांव ले कर क्या होगा ? उनका प्रिय स्थल पुरी ही है, वहीं उचित जगह है ।"

काया संग छाया की तरह वे सारी समस्याओं के बावजूद मेरे साथ रहते । खूब प्रशंसा की है । हर कार्य में उत्साह,, समर्थन और सहानुभूति । उम्र में छोटे । हमें कंधे पर लेते । हमें लेना पड़ रहा था उन्हें । स्वर्गद्वार पर खड़ा सोच रहा था । यही उचित जगह !

श्रीजगन्नाथ के नाम पर हुंकारा ! कण भर महाप्रसाद पर मन में आनन्द का ज्वार भर जाता । श्रीजगन्नाथ के नाम पर भावविभोर । कई बार हम साथ गए हैं मंदिर ।

बुलावा आया पारादीप श्रीजगन्नाथ मंदिर से । मेरे साथ पुरी मंदिर के पूर्वतन प्रशासक रवीन्द्रनारायण मिश्र, मेरे बड़े साले थे । रमेश को बुलाया । आनन्द में भर उछल पड़े ।

"भई, आपने नहीं, उन सांवरे ने बुलावा भेजा है ।" रमेश ने हाथ जोड़ कर कहा ।

"और कौन बुलाता है ?" मैंने कहा ।

भाव गद्गद हो रमेश ने कहा -" उन पर मान किया था । प्रभु आपने अब की बुलाया नहीं । बस में भी जगह नहीं मिली । मान में कह दिया - न बुलायेंगे । नहीं जाऊंगा । पारादीप में भी वे ही हैं । वहाँ से आवाज दी मुझे ।"

पारादीप सभा समाप्त हुई । रवि बाबू और मैंने अनेक अनुभूति की बातों की चर्चा की ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रात में कार से लौट रहे थे । गाड़ी चलाते समय ड्राइवर को नींद न आये, अत: बातें करते रहे ।

रमेश इस मामले में अग्रणी । कहा -" आपने बड़ी अनुभूति की बातें कही । मैं अपनी छोटी -सी अनुभूति कहता हूँ । श्रीजगन्नाथ महाप्रभु ने आदमी भेज हमारे गांव वाले घर से उनकी पालकी के लिए बड़ी काठी मगवाई थी ।"

-" बड़ी काठी यानी पालकी पर मंडप की तरह रह दोनों ओर दो बाहु की तरह निकली होती है, उसे कहार कंधे पर लेते हैं ।" उच्छ्वास में बता गए रवि बाबू -" वो बड़ी काठी मेरे समय में उसकी जरूरत नहीं होती । वह बड़ी काठी खराब हो गई । विमान बड़ू अड़ गए जीर्ण पालकी में मदनमोहन को चंदन यात्रा में नहीं लेंगे । विषम समस्या हुई । बुद्धि काम नहीं करती । एक ने कहा - अपरिचित कोई खबर दे गया है - नयागढ़ बालूगांव वाले पुरातन जमींदार के यहाँ बिना व्यवहार के पड़ी है ठाकुर की बड़ी काठी । नाम भी बताया था । उस मुताबिक आदमी भेज कर मंगवाई थी । आप क्या उसी जमींदार वंश के हैं ?" रवि बाबू ने पूछा । ठाकुर की जमीं प्रजा भोग करती है । चलाना संभव नहीं हुआ । दोल यात्रा, चंदन यात्रा करना संभव नहीं हुआ । प्रभु की पालकी की बड़ी काठी निकाल दी थी, वर्षों से बरामदे में पड़ी थी । मैं उसी वंश का छोटा-सा वंशधर हूँ !"

घटना के दो वर्ष पूर्व चंदन यात्रा पर पुरी गया था । "करीन्द्र दंत पलंक तेजि प्रभु नरीन्द्र चापे गमन ।" (प्रभु ने हाथी दांत का पलंग छोड़ नरेन्द्र पुष्करिणी में नौका रोहण हेतु गमन किया ।) उस दिन देखा सामने मदन मोहन झूलते-झूलते चंदन यात्रा के लिए पधार रहे हैं । आँखों के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आगे दिख गई गांव में अपने बरामदे में पड़ी वह परित्यक्त बड़ी काठी । प्रभु की ओर देखा हाथ जोड़ कहा -

"प्रभु गांव के बरामदे में आप की पालकी के लायक बड़ी काठी यों ही पड़ी है । आप चाहें तो यह आपकी सेवा में लग सकती है ?"

बात भूल गया । अचानक मन में आया, किसी को बिना बताये आफिस से गांव चल पड़ा । पहुंचा तो देखा 'हरिबोल' और हुलुध्वनि जोरों पर हैं ।

श्रीमंदिर के प्रशासक के प्रतिनिधि पूछ रहे हैं -

"आप रमेश पटनायक हैं ?"

"जी हाँ !"

"आपकी बड़ी काठी को श्रीजगन्नाथ ने मंगवाया है , देंगे ?"

"पूछते हैं ? अभी ले जायें ! मेरी चौदह पीढ़ी धन्य हो जायेंगी । पर बताइए । कैसे जाना कि मेरे पास है यह ?"

"यह हम नहीं जानते ।" रमेश की आँख में आँसू बह रहे । कोह उठ रहा -

कुछ दिन बाद जलती आग में सो गए रमेश पटनायक । उस दिन चंदनचर्चित नील कलेवर के लिए जो सेवा दी थी, उनकी देह जल रही । आत्मा पा रही परम शीतल स्पर्श ! अपूर्व दिव्य अनुभूति का बखान किया उस दिन रमेश पटनायक ने ।

भावग्राही प्रभु ! अपर्ण करो, वे लेते हैं !!

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाषाण के प्राण

मयूरभंज में खिचिंग की मां चामुंडा रुपिणी कीचकेश्वरी के आगे पढ़ रहा था । बगलामुखी स्त्रोत । मन के अंदर अधूरी वासना की बस्ती हो गई । मां के आगे गाये भजन । लोगों की भीड़ । भीड़ में एक अचानक पीपल के पात-सा कांपने लगा । वे पारंपरिक पूजक देहुरी नहीं हैं । जाति उनकी देहुरी । चीख उठे -

"पूरी होगी, पूरी होगी, मनोवांछा !"

नीचे लोटपोट होने लगे । पानी छींट कर होश कराया गया ।

पाषाणी सबके आगे प्राणमयी प्रकट हुई हैं । इसकी कोई व्याकरण नहीं, कोई व्याख्या नहीं । भजन के समय मां के आगे पदोन्नति की कामना जाग उठी थी ।

कुछ दिन बाद विभाग में मैं सर्वोच्च पद पर था । परम कारुणिक श्रीजगन्नाथ और परम करुणामयी ने मेरी अतृप्त वासना को तृप्त करा चरम सम्मान दिलाया ।

उन मां चामुंडा की अद्भुत कहानी सुनी थी मयूरभंज के जज साहब महापात्र से ।

आज वे नहीं । अंतिम क्षणों में बड़े बेटे से तुलसी पत्र ले कर विदा हुए ।

उस दिन भुवनेश्वर से ब्रह्मपुर आये थे मेरे केस का विचार करने ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षडयंत्र का शिकार हो मैं विचार का सामना कर रहा था ।

हँस कर जज महापात्र ने कहा -'' मंदिर बनायेंगे । विग्रह प्रतिष्ठा होगी । आपका विचार नहीं होगा तो किस का होगा ? खैर वकील लाये हैं ?''

मैंने कहा -''खुद लड़ूंगा ।''

हँस कर महापात्र ने कहा -'' ये भंज साहित्य नहीं । अपने लिए वकील दें । तारीख सरका दी है । सरकारी वकील सरकारी बात कहेगा । आपके पक्ष का समर्थन करने अच्छा-सा वकील लायें । श्रीजगन्नाथ की अद्भुत कृपा । विचारक स्वयं सहानुभूति दिखा रहे हैं शुरू से !''

तारीख सरकी । बाद में मैत्री भरी कहानी । प्रतिवादी वकील से कहा - आप देखना यह कहानी साखी-प्रमाण पर प्रभाव न डालेगी ।''

बारिपदा में शिव मंदिर निर्माण की बात जज साहब जब बारीपदा में जिला जज थे, तब उन्हें पता थी ।

पूछा -''शिव मंदिर बनाने की बात आपके दिमाग में कैसे आयी ?''

मैंने कहा -''सर ! बचपन में मां कहा करती प्रभु लिंगराज की कृपा से मेरा जन्म । केदार-गौरी क्षेत्र में स्थित मरीचि कुंड में स्नान करने के बाद मैं पेट में आया । उनकी दया से जीवित रहा । मेरे पहले तीन संतान होकर मर चुकी थी ।

फिर भी मैं श्रीजगन्नाथ को ही सबसे ज्यादा मानता था । कारण स्वरूप बताया - जब पेट में था तो माँ ने द्वादश स्कंद भागवत सुनी थी । मां रोज विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करती और भागवत सुनती थी । शिवाला बनाने की मेरी कोई योजना नहीं थी । फिर भी परम पिता ने मेरे हाथों यह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कार्य करवाया । इस दौरान आप तो जज थे ।

उन्होंने पूछा -" तो श्रीजगन्नाथ मंदिर बनाने की न सोच शिवाले की बात कैसे आयी ?"

मैंने कहा -" मैंने कुछ नहीं किया । उन प्रभु ने ही इसमें नियोजित कराया । रविवार था । शिव स्तोत्र पढ़ रहा था । शिव सहस्र नाम पढ़ कर रुका कि देखा तीन - चार आदमी अंदर आ गए हैं । मैंने कारण पूछा ।

"आपके घर के पास सरकारी जमीं खाली पड़ी है । शिवाल हो जाये तो यज्ञोपवीत , सगाई आदि करने के लिए एक देवस्थान मिल जाये ।"

"तो मेरे पास क्यों आये /"

"आप सोचते हैं कि स्कूलों से चंदा करवा दूंगा, वह भूल जायें । मैंने अपने पद का नाम ले किसी से चंदा कभी नहीं मांगा । शिव के नाम पर चंदा मांगने आये । जहाँ जायेंगे, मैं भी साथ चल सकता हूँ ।" साफ-साफ कह दिया ।

मुझे आगे कर भूमि पूजा हुई । मेरे घर वाले गरमी की छुट्टीयों के कारण कटक में थे । मैं छुट्टी लेकर कुछ दिन घर पर कटक था । बारीपदा से पत्र आया । पत्र आँसुओं में भींगा । प्रथम उद्योगक्ता ने लिखा था । भूमिपूजा की जगह पताका उड़ रही है । सब हँसी कर रहे हैं । सब विफल मनोरथ लौट रहे हैं । आपने जिन का काम करने के बाद हमें उनके घर भेजा, अब काम होने के बाद वे कुछ नहीं सुनते ।

जो न करने को कहा, आखिर वही किया । स्कूलों से चंदा आया । मंत्री मुझे बहुत चाहते थे पूछा -" ऐसा कैसे किया ?"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैंने कहा -'' जिस मार्ग से दुर्नीतिपरायण अफसर पैसे कमा लेते हैं, उसी राह से मंदिर के लिए चंदा लिया ।''

जिस स्कूल में ज्यादा अव्यवस्था , उसने ज्यादा चंदा दिया । अच्छे स्कूल वाले स्वेच्छा से चंदा दे गए ।''

मंत्री ने कहा -'' पवित्र प्रधान उपमुख्यमंत्री ने आपके नाम दुर्नीति फाइल खोली है । बचायेगा कौन ?''

''जिनका मंदिर बन रहा है, वे ही रखेंगे !''

कुछ दिन बाद मेरे मंत्री बनमाली पटनायक वाली सरकार भंग हो गई । दुर्नीति फाइल का काम क्या हुआ, भगवान जानें ।

कुचक्रियों की तीव्र कामना थी कि मंदिर प्रतिष्ठा से पूर्व वहाँ से मेरा ट्रांसफर हो जाये य।

'कुचक्री' और 'तीव्र कामना' शब्द सुनकर जज साहब हँसे ।

''उनकी तीव्र कामना पूरी हुई ?'' पूछा ।

मैंने कहा -'' नहीं, सर । व्यर्थ हुई । पाषाण में जिसने प्राण दिये, उसने व्यर्थ कर दिया ।''

कटक -क्योंझर मार्ग पर मां तारिणी पीठ है । सिंदूर पुते पत्थर टिके हैं पेड़ के तने के सहारे । मां दुर्गा , तारिणी ! वृक्ष तले वासिनी । मंदिर निर्माण से मना किया है । खुले आकाश तले विराजमान हैं ।

मयूरभंज और क्योंझर मेरे सरकारी कार्य परिसर में हैं । कटक से आते समय क्योंझर होते हुए मयूरभंज आना नित की आदत थी । सारे रास्ते स्कूल परिदर्शन कर प्रशंसा -निंदा अर्जन मेरे भाग्य में लिखा है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वारवासिनी मां तारिणी । जी भर दर्शन के बाद फिर यात्रा । देवी के आगे बगला स्तोत्र पाठ करता हूँ । ससुर ने दिया है यह मंत्र । ब्राह्मण का ब्रह्मास्त्र है । बैरीघातिनी और विघ्न छेदनी है यह मंत्र । पाठ करते ही देवी को संतोष होता है । मां का विग्रह निर्जीव नहीं, प्राणवंत है । भावग्राही, भक्तानुसारिणी मातृ रुपिणी परम करुणामयी ! बगलामुखी मंत्र के बाद गाता हूँ स्वररचित भजन । मां बड़े स्नेह पूर्वक सुनती हैं, इसके अनेक प्रमाण मिले हैं । फूल और बेलपत्र गिरा है । मैंने अपना लिखा भजन गाया । मां ने बताया - "मैंने सुना । भाव ग्रहण किया । प्रतिकार होगा ।" इस सूचना के साथ फूल, बेलपत्र झरे हैं, आशीष और करुणा स्वरूप । पूजक व दर्शक विस्मयाभिभूत हो जाते हैं । मैंने गाया -

एक बार मां कृपा कटाक्ष
पड़े तो यह अनाथ जन
कौन सहायक होगा पक्ष ?

इस भजन का अंतिम पद पूरा हुआ है मां विमला के मंदिर में । तभी मां को इतना प्रिय हूँ ! अंत में समर्पण भाव में कहा -

तेरा नाम जप
कितने पापी तापी
निरत पायें तोष !"

मैंने संतुष्ट हो इसे ग्रहण किया है ।

विमला -विगत मला ! विष्णु के कर्णमूल से उत्पन्न मधु कैटभ द्वय । उनका वध करने स्तुति करते हैं ब्रह्मा इन्हीं मां विमला को । वे अपसारित हो आते हैं विष्णु के नेत्रों से । निद्रा भंग के बाद वध करती हैं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

-मधु-कैटभ का । वही आदि शक्ति ही विमला है । विमला श्रीजगन्नाथ स्वरूपा है । श्रीजगन्नाथ की अभिन्न रूपा हैं विमला । विमला भैरवी यंत्र 'जगन्नाथस्तु भैरव ।''

ब्रह्म स्त्री और पुरुष रूप में विमला और श्रीजगन्नाथ भाव में प्रकट हैं । तांत्रिक मत में श्रीजगन्नाथ भी मातृ स्वरूप हैं । कहा गया है - जगन्नाथस्तु साक्षात् दक्षिण कालिका !

तंत्रवेदी में श्रीयंत्र प्रतिष्ठित है । श्रीयंत्र ही है त्रिपुर सुन्दरी यंत्र । त्रिपुर सुन्दरी है 'महालक्ष्मी', वे विष्णु पत्नी लक्ष्मी नहीं । महालक्ष्मी भाव में वे हैं आदिशक्ति । उनके नाम पर यह क्षेत्र है । श्रीक्षेत्र और यह मंदिर है श्रीमंदिर ।

मंदिर से निकल रथ पर जाते समय श्रीयंत्र साथ नहीं होता । अतः श्रीजगन्नाथ हैं श्रीविवर्जिता । यह परम रहस्य गुरु कृपा से प्राप्त हुआ - जज साहब से कहा । विमला वे ही त्रिपुर सुन्दरी श्रीस्वरूपा हैं । परमा प्रकृति विमला श्रीक्षेत्र पीठाधीश्वरी हैं । नैवेद्य श्रीजगन्नाथ को अर्पित होकर त्रिपुर सुन्दरी स्वरूपा श्रीचक्राधि रूढ़ा विमला को पुनर्बार निवेदित होता है ।

श्रीजगन्नाथ का नैवेद्य विमला के आगे समर्पण होना ही श्रीयंत्र में निवेदित तांत्रिक महाप्रसाद का बाह्य रूप है । भैरवी चक्र में निवेदित प्रसाद सेवन में जाति भेद नहीं रहता । विमला ही भैरवी और त्रिपुरसुन्दरी रूप में प्रकट हैं ।

उस दिन मां तारिणी के आगे बगलामुखी स्तोत्र पढ़ चुका था ।

मयूरभंज केंदूझर निवास के दौरान मां का यह आखरी दर्शन था । शिव मंदिर प्रतिष्ठा के दौरान मां पार्वती को शिव के हाथ में समर्पण करना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संभव नहीं होगा । तबादला फिर हुआ कोरापुट । आँखें भर आयी । कंठ में कोह ।

अचानक अघटन हुआ । तारिणी ठाकुरानी के बूढ़े देहुरी पत्ते की तरह कांपने लगे । थरथराते मेरी ओर देख कहने लगे -" रोओ नही, रोना मत, बेटे ! परिवर्तन होगा । परिवर्तन होगा ।"

घटना कोई न समझ सका । मैंने ऊंची आवाज में समझा दिया । ट्रांस्फर के कारण मन में दु:ख है । अपने पूजक के जरिये मां आश्वासन दे रही हैं । जयकारा में भर गया वातावरण । मां के दर्शन करने के लिए केंदूझर जिले की प्राथमिक शिक्षा संबंधी बैठक केंदूझर डीआई के आफिस में रखी थी ।

मयूरभंज - केंदूझर सीमा पर केंदूझर से कुछ दूरी पर वैतरणी एक बड़े नाले की तरह संकुचित है । छोटे पुल से पार कर लेते हैं । वहाँ पहुँचे तो बाढ़ ! नाले पर छ: फुट पानी बह रहा है !

आठ-दस घंटे की प्रतीक्षा पर भी पानी कम नहीं हो रहा । साथ में मयूरभंज के डीआई महेश्वर जेना ने कहा -" सर, इस बहाव में गाड़ी लेना खतरे से खाली नहीं । सांझ उतर रही ।

मुझ में धीरज न रहा । मां का नाम ले कर गाड़ी में बैठ गया । मां का मंत्र जपते हुए ड्राइवर को गाड़ी बढ़ाने का आदेश दिया ।

पुल पर गाड़ी लेते ही तेज बहाव में गाड़ी खिंचने लगी । घोर विपद ! मां का स्वव गान कर रहा हूँ । अचानक पुल पर गाड़ी के आगे-पीछे दस-बारह लोग पहुँच गए । पांच ने आगे खींचा और पांच -छ: ने पीछे से धकेला । पूरे दम से सम्हाला कि पुल से नीचे न जा पाये गाड़ी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इतना न होता तो स्रोत के जोर से गाड़ी पुल के नीचे चली जाती ।

मैंने उन्हें पूछा -'आप कैसे आये ?''

कहा -''मां की दया से आप बच गए । पुल के पास हम मछली पकड़ रहे थे । देखा गाड़ी खिंच रही है ! इंजिन काम कर नहीं रहा । अत: यह व्यवस्था की ।''

उस दिन मांने आंचल पसार मृत्यु मुख से हमें खींच लिया ।

जज साहब से कहा -'' ट्रांस्फर आर्डर भी बदल गया, सर ! मां की दया से कोरापुट के बदले दो जिलों में काम करना पड़ा - गंजाम और फुलवानी सर्कल । समय भी मिला । मंदिर प्रतिष्ठा के बाद जा सकूंगा । यहाँ पर पाषाण प्राणवंत है । सब क्या इस पर विश्वास करेंगे ?

काष्ठ-पाषाण पूजक भारतीयों को अंधविश्वासी कह कर पश्चिमवाले बाण पर बाण बरसा रहे हैं । कौन इन बाणों का सामना करे ?

ऐसा साधक चाहिए जो बज्र गंभीर स्वर में कह सके -''हाँ इस पाषाण में प्राण हैं । इसमें जो है सो चेतना है । मंत्र से मुग्ध होकर स्वत: वह बंध गया है । सृष्टि का आदिकारण । साधक की इच्छानुसार अपने सुख में पत्थर से बने कलेवर को वरण किया है ।'' यह सुन जज महापात्र कहने लगे ऐसे साधक की अपूर्व कहानी । प्रबल प्रतरपी मयूरभंज नरेश श्रीरामचन्द्र भंजदेव । हिन्दुओं के अनेक देवी-देवताओं की पूजा में रहते । उसके अंध विश्वास की सांकल जकड़े नहीं रह सके । उन्होंने ब्राह्मो धर्म ग्रहण किया । ब्रह्म एक और अद्वितीय है । वह बहु कभी नहीं हो सकता । पाषाण प्रतिमा की सीमा में कभी असीम सीमित नहीं रह सके ।

''ब्रह्मो कन्या के आकर्षण में पड़ आप उस बंगीय महिला को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वितीया रानी कर सकते हैं । इसका अर्थ नहीं कि ब्राह्मो धर्म में सत्य है और हिन्दू धर्म कुसंस्काराछन्न है ।''

गंभीर स्वा में प्रतिवाद कर कहा -युवक पंडित और तांत्रिक महापात्रजी ! राजकोप में पड़कर उनका परिवार तीन पीढ़ी से राजगुरु के अधिकार से वंचित हैं । आज फिर इतना अहंकार । महाराज पर आरोप ! पंडित सभा के खुशामदियों के बीच चांचल्य भर गया । अब इसका एकदम पत्ता कट गया ।

गुणग्राही महाराज ने युवक से कहा -'' हिन्दू धर्म के पक्ष में क्या कहना है ? पत्थर देखा, सिंदूर लीपा और माथा टेक दिया ! इससे ज्यादा क्या है ?''

''बहुत अधिक है महाराज ! मंत्राधीन देवता ! मंत्र बल से साधक पत्थर में प्राण संचार कर देता है । शक्ति का महाशून्य से आहरण कर पत्थर में संचार कर जीवन्यास दे दें । साधक की इच्छानुयायी वह कार्य करता है ।''

-''युवक ये बातें शास्त्र में पढ़ी हुई हैं या कुछ अनुभूति भी है ?''

-''अनुभूति है महाराज !''

-''तो हमारे राजप्रासाद में पाषाणी तथा शवारुढ़ा चामुण्डा मूर्ति के अंग हिलते दिखा सकते हो ? अचला को सचला कर सकोगे ?''

-''सकूंगा महाराज !''

-''महराज के आगे सबके सामने कह रहे हो ! अन्य समय होता तो असफल व्यक्ति की सजा मौत होती । तुम्हारी असफलता पर सिर कटेगा नहीं । पर तुम हिन्दू छोड़ ब्राह्मो धर्म ग्रहण करोगे ।''

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

-"यदि पाषाण प्राणवान प्रमाणित हो ? पाषाणी चामुण्डा की देह में सिहरन देख सकें, तो महाराज ब्राह्मोधर्म छोड़ पुनः हिन्दू धर्म अपनायेंगे तो ?"

युवक की बात पर अजीब नीरवता । फिर वही गुंजरण उस खुशामदी दल में । अहो इतना धृष्ट ! कितना दंभी है । महाराज को आह्वान ! महाराज को चुनौती ?"

नीरवता भंग कर महाराज बोले -"ठीक है ! पाषाण में कंपन देखी तो हिन्दू बनूंगा ।" प्रतापी रामचंद्र का मुकाबला करने वाले युवक के दादा वंशगत राजगुरु पदवी से वंचित हुए थे ।

मुकाबले के बाद पद और राजानुग्रह पाया ।

जज महापात्र उनके पोते । उन प्रतापी राजा के बाद षडयंत्र के फलस्वरूप राजगुरु पदवी रद्द हो गई । बड़े कष्टों के बीच बड़े हुए हैं जज महापात्र ।

वर्णन के समय भावुक हो उठे । पिता थे असाधारण पंडित । पक्षियों की भाषा समझ लेते । बारीपदा वाले घर में एक दिन कौवे ने कांव-कांव की । रोज की तरह कांव-कांव थी .। पर महापात्र के पिताजी ने उसमें कुछ अस्वाभाविकता पढ़ ली । पास बुला कर कहा -"अरे तेरे काका का देहान्त हो गया । ये कौवा मुझे बता गया है !"

कुछ समय बाद तार आ गया । काकी की मृत्यु हुई है । काल हर समय तरह-तरह से इंगित देता है । संकेत और संदेश आते हैं । पर हम उधर संपर्क की क्षमता खो बैठे । वह विद्या नहीं । बोध शक्ति और दूर दृष्टि घट गई । साधना खो कर विशेषत्व गंवा बैठे । वे विद्या तुप्त हो गई ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बातों में याद करा दिया जज महापात्र ने ।

कालेज खुलेगी । गांव से विदा ले कर निकल रहा था । पांव छूये तो पिताजी बोले -" आज न जा !"

'ना, मुझे जाना होगा । ओपनिंग डे न जाने पर मुश्किल ।"

-"तो घर पर ठाकुरजी को फिर प्रणाम कर आ । महापात्र लौटे । सिर नवा निकले कि छान से टकरा खून बहा लिया । बापू ने पूछा -" तय हुआ , नहीं जायेंगे आज ! पिता ने सुना तो पूछा - "जा रहे थे, अब मना क्यों ? चल निकल !"

ताज्जुब में महापात्र ने पूछा -" खून न था तब तो कहा नहीं जा । खून बहा तो कहते हैं जा !"

"हाँ, तू माथा टेक रहा था तो लगा माथे से खून बह रहा है ! भविष्य दिख रहा था । ट्रेन में जाते समय पता नहीं क्या हो ? अब तो जो घटना थी घट गई । अब जा सकते हो !"

दादाजी की शक्ति का बखान कर रहे थे महापात्र ! शक्ति परीक्षा का दिन तै हुआ ।

साधक पंडित पूजा पर बैठे । महाराज रामचंद्रभंज देव निरीक्षण करने सतर्क बैठ गए ।

यह क्या ? जाग्रत हैं या स्वप्नावस्था में ? पाषाणी चामुंडा के मस्तक से फूल झरने लगे । महाराज विस्मित । ना-ना चाल है ! योजना है । फूल के वजन से फूल जरूर झरेगा । सारे फूल झर गए । तीन-चार अभी भी हैं । वे गिरेंगे ? कभी नहीं ।

सोच ही रहे थे - वे भी झरे । अचंभे में भर गए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मां के अंग में कंपन ! हवा का नाम नहीं । फिर भी हार हिल रहा ! साड़ी का आंचल हिल उठा । हाथ से अस्त्र फिसल रहा !

"महाराज अभिभूत थे । लगा वे प्राणमयी हैं, पाषाणी नहीं । पाषाण तो आश्रय है । आवरण जिसमें महाप्राण अवस्थान करते हैं । महाराज ने धर्म रखा । युवक को राजगुरु पदवी मिली । जो षडयंत्र से छिन गई थी ।

अपरिसीम क्षमता के अधिकारी हुए युवक राजगुरु महापात्र । परिवार का भाग्य उलट गया । अपने परिवार में चला षडयंत्र । उसे जब्त करने मां के जरिये चेष्टा चली । मां ने देखा बेटा कहना नहीं मानता । मां ने राजगुरु से कहा । राजगुरु ग्रहण नहीं कर सके । अन्याय भरा अनुरोध कुचक्री लोग मां के जरिये कर रहे हैं । कुचक्रियों ने बहकाया है । राजगुरु समझ गए । वंशीकरण जरूरी है । जड़ी बूटी देकर दूध में औषध बनेगी । मां - बेटे को पिला देगी ।

' बेटा वंश में हो मां की बातों में उठ-बैठ करेगा ।

मां खुश । अब बेटा वश में होगा ।

बहुत दिन वह राजगुरु रह चुका । पोते ने विद्या हासल कर ली है । बुढ़ापे में कोई नहीं सुनता । दवा से सब ठीक होगा ।

कुचक्रियों ने तेज विष मिला कर दूध में दे दिया । दूध का ग्लास ले मां खड़ी । साधक महापात्र जान गए कि मां षडयंत्र का शिकार हुई है । उस पाषाणी का यह कांड है ! शायद समय आ पहुँचा । पाषाण को जिसने प्राणमय किया उसी ने बुलाया है । माटी घट को विसर्जन करना है । उसकी इच्छा शक्ति में वाधा नहीं देनी ।

मां से पूछा - "दूध में क्या है, जानती हो ?"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

-''कुछ नहीं बेटे, पी लो !''

-''मां, तू कहती है कुछ नहीं मिला ?''

-''हाँ, मैं कहती हूँ । पी ले कुछ न होगा ।''

तांत्रिक राजगुरु जान गए तीव्र हलाहल है दूध में ।

-''मां तू कहती है ! पी लूं ?''

-''हाँ ! तेरी मां कहती है !''

यह केवल प्राकृत मां की बात नहीं । उन अप्राकृत का आह्वान है ! उन्हीं का इशारा है ! अब समय नहीं । समय हो गया । उन तक जाना होगा ।

यह पाषाण का नहीं, प्राणमयी का आह्वान था । तक्षक तो निमित्त मात्र है । परीक्षित की घड़ी आ गई । गट-गट पी कर लुढ़क गए साधक महापात्र । पाषाणी प्राणमयी चामुण्डा की गाथा बैठक के परिवेश को प्राणवंत कर रही थी । इन सहानुभूतिशील जज को द्वितीय सुनवाई से पहले बदली कर दिया गया । प्रभु का सुदर्शन चक्र घूमने की तरह दो बैठक के बाद एक-एक कर सरकार के पक्षवादी जज ट्रांस्फर के बाद अंतिम जज ने राय देकर लिखा - ''सरकार निरीह अफसर को व्यर्थ में हैरान कर रही है !'' अंतिम विचार स्वयं विशालाक्ष ने किया । पाषाण प्राणवंत हुआ उनकी कृपा से ।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सांवरे सलोने के लिए भूमिका

दरवाजे पर बेल बजी ।

दरवाजा खोलते ही अंदर आ गए लंबे ऊंचे कोई सज्जन ! कहने लगे -" सर ! मैं कुछ लिखाई पढ़ाई करता रहता हूँ ।"

"अच्छी बात है । लिखने की आदत तो अच्छी है । कभी-कभी लगेगा, क्यों लिख रहा हूँ । पढ़ेगा कौन ? फिर छापेगा कौन ? " इनकी बात पर मैंने कहा ।

आगन्तुक लेखक कहने लगे -' तभी तो आया हूँ, सर ! प्रभु श्रीजगन्नाथ की अलौकिक विभूति का कविता में वर्णन किया है । अनेक भक्तों को तरह-तरह से अनुगृहीत करते हैं प्रभु ! भक्तों की कितनी परीक्षा ली है ! स्वयं भी कितनी परीक्षा दी हैं । सब कविता रूप में लिखा है !"

"क्या अभिमत दूं ?" मैंने पूछा ।

"जी, ठीक यही अनुरोध है ! एक प्रकाशक आपका अभिमत चाहते हैं । उन्होंने दो नाम लिए । एक ने मतामत दे दिया । आप पर ज्यादा जोर है ।" गद्गद स्वर में आगन्तुक ने कहा ।

-"ठीक है, रख जायें । पढ़कर मतामत लिख दूंगा ।" पर वे इतने में संतुष्ट होने वाले न थे । मन में खीझ आ गई ! ऐसा कई बार हुआ है । नौकरी में एकदम डूबा था । बार-बार वही बात -

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"क्या पढ़ा, सर ?"

"नहीं भई ! खेद है ? काम का दबाव बहुत था । पढ़ न सका ।"

कुछ समय छोड़ कर आना । हाँ, आने से पहले फोन कर देना । फिर आये, पुस्तक पढ़ना पूरा नहीं हुआ था । लेखक के चेहरे पर विषाद की छाया । सोचा बिठा कर अभिमत लिख दूं !

कभी-कभी लेखक स्वयं चालाक होते हैं । छोड़ने वाले नहीं होते । खुशामदी स्वर में कहेंगे -" सर, आपकी कलम में अमृत है । उससे जैसे - तैसे जो भी निकलेगा, वही अमृत है । वही मेरे लिए आशीर्वाद होगा । आप लिखें । अभी जो झरेगा कलम से, वही ले जाऊंगा । तुरत काम हासल !

अबकी उन सज्जन को सत ही अभिमत देना नहीं चाहा । प्रकाशक को प्रभावित करने लायक अभिमत देने के लिए आमूलचूल पढ़ना होगा । श्रीजगन्नाथ की महिमा है इसमें । पर आज समय नहीं ।

कहा -"ठीक से पढ़, चर्चा कर अिभमत दूंगा ।"

-"कितनी आस कर आया, श्रीजगन्नाथ की करुण कहानी कविता रूप में उन्हें सुनाऊंगा ।"

आगन्तुक बंधु मेरे पास आते समय प्रस्तुत होकर आते हैं, क्या बात असर करेगी, वे जानते हैं ।

-"ठीक है, पढ़ें !" मैंने हामी भरी । पर उठने की ताकत नहीं । श्रीजगन्नाथ भक्त विषण्ण से भूषित हो चुके ।

श्रीजगन्नाथ की कथा पदों में लिखी है, भाषा सुन्दर, छंद मधु, पढ़ते समय बीच में वे कहने लगे -"अभिमत तो देंगे, सर ! प्रकाशक को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फोन कर देंगे । आपकी सिफारिश पर जरूर छाप देंगे ।

उन्होंने प्रकाशक का नाम बताया ।

-''मैं फोन करुं?'' आश्चर्य में पूछा ।

श्रीजगन्नाथ की बात । बस, इतना करें ।'' लेखक का निवेदन सुनकर मैंने पूछा ।

''नहीं, ऐसा मैं नहीं कर सकता । कविता वैसे भी नहीं छपती । कहने पर भी बात रहेगी नहीं ।'' पांडुलिपि पढ़ने के साथ अन्य चर्चा चली । उन्होंने कहा -''आपका अनेक धर्म संस्थाओं सहित संपर्क है । मुझे कहीं रखवा देते । सेवा - पूजा कर पेट भर रहता !''

''वैसी संस्था कहाँ ? आप क्या करते हैं ?'' पूछा मैंने ।

''जी रिटायर्ड सरकारी कर्मचारी !''

-''ऐं ! पेंशन नहीं पाते ? ताज्जुब है । रिटायर्ड सरकारी कर्मचारी पेंशन की जगह धर्म संस्था में रहना चाहें ! पेंशन में परेशानी ?''

''बहुत दिक्कत हैं । मुझे नहीं देंगे वे !''

''क्यों ?''

''छुट्टियां मंजूर नहीं हुई । डेपुटेशन बिना सेंक्सन पड़ा है । मंजूरी के लिए जाने पर भगा देते हैं । वेतन रिवीजन नहीं हुआ । दो साल हो गए । अब और न मिलेगी ।''

अजीब हैं । पूरी तरह समझ लिया कि पेंशन नहीं मिलेगी । संघर्ष भी नहीं करेंगे ! भाग्य भरोसे पड़े रहेंगे । भगवान गाथा गायेंगे ।

''घर में रहने में दिक्कत ?''

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

''उन्होंने रहने नहीं दिया ।''

''कौन, किसने ?''

''पत्नी और बेटों ने ।''

''जी मैं पुलिस में डीएसपी था ।''

डीएसपी के रूप में रियायर्ड हुए, पर डर है पत्नी और बेटों से । असंभव कुछ नहीं । शायद ये भक्त हैं । मांस-मछली, प्याज, लहसुन खाते न हों । परिवार वाले रोज आमिष चाहते होंगे । बापू निरामिष होने के कारण दिक्कत हो ।

प्रश्न बिना पूछे ही सबका समाधान स्वत: हो रहा था मन में ।

''शायद थाना बाबू ला कर दे जाते होंगे , बाबू को यह पसंद न हो, अत: घरवाली को गुस्सा । शायद बाबू के वैष्णव भाव को असाधुगण इन्हें दुर-दुर करते हों । वे घरवाली के कहने पर भी सुधरे न हों । अत: विरोध ।

पत्नी स्वयं परिवार की जरूरतें जुगाड़ कर लेती होंगी । बाबू कुछ विरोध कर परेशानी में पड़े हों ।

उलटा भी हो सकता है । पुलिसिया धंधा कर मुँह में राम-राम से सत्यवती गृहणी खीझ उठी हों । अबकी सोचा यह हाथी-सा मरद मूसा कैसे हो गया ? मेरे पूछने से पहले ही कहने लगे -'' इस पांडुलिपि के पीछे एक कहानी है । मेरे हाथ में एक नाम । पक्किा थमा कर कहा - एक सज्जन के साथ अनुभूति को अपनी भाषा में लिखा है इन्होंने । मैंने पूछा - आपने यह कहानी उन्हें बतायी है ?''

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

-''हाँ ! यह पांडुलिपि दिखाते समय कहा था इसे पढ़ने लगा । तो वे बोले -पांडुलिपि श्रीजगन्नाथ को समर्पण करेंगे । भाग्य की अजीब स्थिति के लिए । परिवार में विरोध, परिवेश में प्रतारणा । अंत में प्रभु के आगे भी परीक्षा ?

पंडे समर्पण को राजी नहीं हुए । कितने निहोरे किये, उनका पत्थर हृदय पिघला नहीं ।

-''आपने दक्षिणा नहीं दी होगी ।''

-''सब किया । वे अटल थे । कहा, किताब यों समर्पण नहीं होती । सुनकर आश्चर्य हुआ । सैकड़ों किताब समर्पण होती हैं । ये सेवक बोले किताब समर्पण होगी । एक शर्त पर । राजी हो ? आपकी भक्ति की परीक्षा होगी ।

आशा टूटी थी, भरोसा हुआ था । फिर भी प्रभु पर आस्था कम नहीं । दूब को वे दारु कर देते हैं । दारु को दूब बना दें । सोला डूब जाये, पत्थर को वे तैरा दें । घटन -अघटन भरी महिमा है उनकी ।

गोल खाने में अभ्यस्त थे वे । अब रेफरी व श्रीजगन्नाथ ! वे ठीक करेंगे । उनके अधर आधे । उनके अधरों से वंशी ने युगों में सम्मोहित किया है । उनके मुँह के निर्णायक वे ! अगणित की गति, अजगा के दाता, विश्व बिहारी की ओर निर्भर कर बाहु उठा दी डीएसपी ने ।

शर्त पर राजी । परीक्षा देंगे ।

समुद्र की लहर का पानी छूयेगा वो समर्पण होगी - पंडों की शर्त । प्रस्ताव देकर हँसते -हँसते वे लोटपोट । पहलवान को पटकनी दी है । बाबू यदि भगत शिरोमणि - लहर आकर छू देगी । सड़क से कितनी दूर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समुद्र । पूर्णिमा को भी आधी बालू तक ज्वार आता है । जहाँ कभी पानी नहीं आता, वहीं रखी गई पांडुलिपि । विद्रूप स्वर में पंडे ने कहा - "भगवान खींच लाये समुद्र को, तो हम भी आप को पास खींच लेंगे ।"

भक्त के साथ सेवक को दंड । एक के बाद दूसरा रखवाली पर बैठा । कैसा नाटक लगाया ससुरे ने ।

दिन भर सागर शांत । सेवक का व्यंग । हो, भगत जी ! समुद्र को प्रभु ने खींचा । वे आपकी ओर खिंच आयेंगे, देखो ।"

लेखक सड़क पर कह रहे हैं -

"द्रौपदी ने पुकारा, जग ने आवाज दी । हिरणी रो उठी, सबकी सुनी, प्रभु । समर्पण की शर्त पूरी करें । हे महाबाहु !"

समुद्र उमड़ रहा । लहर पर लहर आने लगी । लेखक की आकुलता में लहर पर लहर ! जिनकी आज से जलधि में ज्वार, उनकी महिमा खिल उडे । भक्त का मान रखषं, प्रभु !"

उनकी आज्ञा से सागर कभी कूल बंधन नहीं करता । आा हो तो लांघन में क्यों विचित्रता है ? जलधि उनकी सृष्टि है ! जब कुछ न था, वे अकेले थे । इच्छा की - सब हुआ । शब्द जन्म ले सका । उस शब्द से आया जल । वह जल है उनका वासस्थान । अत: वे हैं नारायण । प्रलय पयोधि जल में तैरते हैं । सोते हैं वे नटपत्र पर । उस जल से स्थल की उत्पवि हुई । जल-थल की विभाजित रेखा क्या टूटेगी नहीं ? उनकी आज्ञा से ?

लहरें आती हैं - लौटती हैं । लेखक देखते रहे । अबकी विराट लहर आ रही ! ऐसी ऊंची लहर कभी नहीं आती । जरूर तट तक आ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जायेगी । जल-थल की दूरी मिटेगी । पंडे के पांव भींग गए । पांडुलिपि का कवर भींग गया ।

अब पानी पांवों से सरक रहा । लहर पीछे हट रही । नारायण की निश्चित इच्छा से ।

सब सुन मैंने पूछा - यह सच है ? दीवार पर टंगे रथयात्रा के समय के चित्र की ओर देख कहा -''इन्हें देख कहता हूँ, सर ! सब सच है !''

उनकी आँखें भरी । मैंने भी आँखें पोंछ ली । मन में मेरे लहर पर लहर । मानो पांव तले से भींगी बालू सरक रही । अगर सारी बात वैसे ही लिख दूं, लोगों की मजाक का शिकार बन जाऊंगा । कंप्यूटर, इंटरनेट के जमाने में लोगों को यह अनुभव अस्वाभाविक लगेगा । सारा विश्व भगवान के चिंतन का प्रकट रूप है - यह बात पदार्थ वैज्ञानिकों की समझ में आ गई । विज्ञान और दर्शन एक दूसरे के आलिंगन में आ गए हैं ।

कुछ अविश्वासी वितंडा कर तर्क करते बंधु के लिए विश्वासी भाइयों को विश्वंभर की भावना से वंचित क्यों करुं ? श्रीजगन्नाथ के सांवले सलोने मुख को देखते हुए मैं अब भूमिका लिखने बैठ गया ।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सांवरे का जादू

बहुत दिनों बाद गया हूँ पुरानी जगह जयपुर (कोरापुट)। प्रभु ! कितने दिन बाद भेंट हुई । छः वर्ष आपके चरणों में कटे हैं । इतने दिन बाद आपके पास आया हूँ ! क्या दास को याद रखा ?''

मन में विचार आते ही प्रभु बलभद्र की देह से फूल गिरा । हाथ जोड़ खड़ा था । पंडों का खूब परिचित । इतने दिन बाद देख उनमें भी आनन्द भरा । फूल देकर कहा -'' जो मन में सोच रहे थे, प्रभु ने स्वीकार कर लिया है ।'' ये तो वे ही जीवंत श्रीजगन्नाथ हैं । जो नीलशैल में विराज रहे हैं । प्रभेद नहीं । मैंने कहा -'' कुछ मनौती न थी । बहुत दिन बाद दर्शन हुए । जानना चाहता था कि मैं प्रभु के मन में हूँ या नहीं ? प्रभु ने बता दिया उनके मन में अब भी रखे हैं । घर के मुरबी प्रभु बलभद्र ने संदेश दिया है ।

''आप यह फूल झरने से वार्ता समझ लेते हैं ?'' पास के परिचित पत्रकार ने पूछा ।

-''अलग-अलग समय पर आकर प्रभु के दर्शन कर मन में तरह-तरह की तरंग फैल जाती हैं । उन तरंगों के साथ ताल मेल कर श्रीअंग से फूल गिरे तो प्रभु की शुभाशीष की सूचना मिलती है ।

कई बार ठाकुरानी के श्रीअंग से फूल और फूलों का हार गिर कर प्रमाणित किया है कि पत्थर की प्रतिमा केवल प्रतीक नहीं । वे केवल ध्यान और भक्ति के माध्यम नहीं । प्राणवंत हैं । भक्त के साथ निविड़

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भाव का आदान-प्रदान होता है । प्रत्यक्ष बातें न करने पर भी विभिन्न भावों में वे सूचना देते हैं । फूल झरने में प्रभु की प्रसन्नता की सूचना मिलती है । वे फूल दे कर भक्त को उत्फुल्ल करते हैं और प्रश्न का समाधान ।

"वो कैसे ?"

कहा - "एक बार केंद्रापड़ा बलभद्र मंदिर से लौट रहा था । बलदेव जी मंदिर के पार्श्व में एक राम लक्ष्मण सीता का चित्र है । मंदिर में प्रवेश करते ही शंका हुई - बलभद्र क्या अनन्त है ? अचानक लक्ष्मण की देह से फूल गिरा । प्रभु ने संदेह मोचन कर दिया । जो लक्ष्मण वो ही बलभद्र । वो ही अनन्त हैं । स्वप्न में तो कई बातें अनुगतों को कहते हैं । विश्वासी आश्रितों को संकेत में कहते हैं ।

जयपुर प्रवास में कई इंगित मिले । श्लेष, परिहास का सामना कर प्रभु तक पहुँचता तो प्राणों में पुलक भर जाती । दूसरों के आक्षेप मुझे प्रभु के निकटतर कर देते ।

-"सर, मंदिर जाने पर प्रभु मिलते ?" एक ने कटाक्ष कर पूछा ।

कहा -" आप बहुत ऊपर उठ गए । घर बैठे उन्हें आस्थान से खींच हृदय में थापते हैं । हमारी साधना निचले स्तर की है । वास्तव में देखे - छूये बिना लगे ही नहीं कि पाया है ।

उनके प्रश्न के पीछे व्यंग के उत्तर में कहा । पर निष्ठावान ने पूछा - "'सर, प्रभु को पाने रोज मंदिर जाना पड़ेगा ? बिना मंदिर गए क्या प्रार्थना संभव नहीं ?"

उन्हें समझाया -"घर में प्रार्थना में कोई रुकावट नहीं । मंदिर जाने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर भावों के आदान-प्रदान की सुविधा होती है । विग्रह के साथ । मंदिर में लंबे अर्से से भक्तगण अपनी भावना और भजन से जो शब्द तरंग उत्पन्न करते हैं, उससे सारा वातावरण उद्दीप्त रहता है । उस परिवेश में प्रार्थना करने पर मन स्वत: उनकी ओर खिंचा जाता है ।

प्रतिदिन श्रीजगन्नाथ दर्शन जयपुर निवास के समय का विशेष नियम था । निन्दा - प्रशंसा प्रभु के संग कुछ अंतरंग पलो को व्यहत नहीं करती ।''

पकिार सुन रहे थे । देखा विश्वास और अविश्वास उनके मन में आँख-मिचौनी खेल रहे हैं । प्रभु के संबंध में अलौकिक कहानी सुनकर भी मानो कुछ बाकी रह गया है ।

पत्रकार युवक थे और मसाला चाहिये । उन्मादना चाहिए । महिमा के लिए और बलिष्ठ उपादान चाहिए । विश्वास पूरी तरह पका नहीं है । मुझ से कुछ और मसाला मिले तो मन माने । इकतरफा माहात्म्य प्रभु का बखाने से कौन मानेगा ? जबरदस्त कोई साखी चाहिए । साखी देना होगा । सारे विश्व की घटनाओं का जो महान साखी है, जिनके विराट नयनों में दुनिया की सारी बातें प्रतिफलित हैं, उस का मैं बनूं साखी ? घोर विडंबना !!

जयपुर के दिनों की अनुभूति बता रहा था । अनेक कालेजों में लकांदहन का अभिनय कर बार-बार ट्रांस्फर के बाद धूमकेतु की तरह एक अध्यापक वहाँ पहुँचे । उनके विषाक्त स्पर्श में कालेज का शांत वातावरण नष्ट हो गया । भेदबाजी बो कर दो ग्रुप पैदा कर दिये ।

दूसरी नौकरी में एक अफसर दूसरे का विरोधी होने पर भी आमने-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सामने होकर कलह के अवसर कम होते हैं । कालेज में स्थिति भिन्न होती है । एक कमरे में एक टेबुल पर तथाकथित कई अफसरों का एक साथ बैठना, परस्पर पर विद्वेष भरे तेज बाण चलाना, इतना सुलभ हो गया कि जीवन दुर्विसह हो उठा । बार-बार ईर्ष्या, परश्रीकातरता, नीच स्तरीय चर्चा से परिवेश असहनीय हो उठा ।

समर्थक मित्रों और शुभेच्छुओं ने कहा -''सर, रोज श्रीजगन्नाथ मंदिर जाते हैं । छः वर्ष हो गए । आपके साथ ट्रांस्फर होकर आये अन्य अध्यापक बेहतार जगह पहुँच गए । आपका ट्रांस्फर नहीं । अबकी बेहतर जगह ट्रांस्फर प्रभु से मांगें ।''

कहा -''अबकी मांगना होगा । संकट आ गया । केवल इस जगह से नहीं, इस नौकरी से ट्रांस्फर मांगना है । इस नौकरी में जी न पाऊंगा ।''

उस दिन श्रीजगन्नाथ को देख कर आँखें भर आयीं । हृदय में कोह भर गया । कह दिया -प्रभु ! कोई दूसरी नौकरी दें । अध्यापकी से हटा दें ।''

दाहिनी भुज फड़ उठी !

''प्रभु कह रहे हैं ऐसा ही होगा ।''

''सर, आप कह रहे हैं, मैं सुन रहा हूँ । सच, ऐसा होता है ? अघटन घट जाता है ? अलौकिक क्या सचमुच लौकिक परिसर में आता है ?'' पत्रकार ने पूछा ।

-''संदेह क्यों ?''

''काक - ताली जैसी बात हो । कौवा बैठा ताड़ टूटा ! वास्तव में कौवे की टांग से ताड़ नहीं गिरता । लंबे समय तक रहने के बाद अच्छी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जगह पोस्टिंग हुई है । पर आप प्रचार कर रहे हैं श्रीजगन्नाथ ने आपकी सुन यह कर दिया !''

मैंने कहा -'' कालेज दो भाग हो गई । डिबेट में छात्रों के आगे दो दल अध्यापकों के बीच प्रत्यक्ष वाक्युद्ध चला । हाकिमों ने कैफियत मांगी । कुछ खुश थे, कि अब सजा भुगतो । बाबू सुन्दरगढ़ जाओ । पर ट्रांस्फर हुआ स्वयं हाकिम के दफ्तर में । वह भी प्रशासनिक दायित्व ! यह साधारण बात है ?''

''आपके हाकिम आपको चाहते थे । आपको ढांपा है, आप उन्हें गौरव न दे कर, दे रहे श्रीजगन्नाथ को !'' पत्रकार ने बेलाग कह दिया ।

मैंने कहा -'' ये सब विश्वास की बात है । मैं अपना विश्वास किसी पर लाद नहीं सकता । पर यह दृढ़ता से कहना चाहूँगा कि प्रभु व भक्तों के बीच भावों का आदान-प्रदान चल रहा है । अघटन अब भी होता है । असंभव संभव होता है ।

मैं जयपुर में था तब वहाँ श्रीजगन्नाथ मंदिर न था । अब पहाड़ पर विराट क्षेत्र पर प्रभु विराज रहे हैं । सुना है कि मंदिर हेतु अनेक लोगों ने सहायता व सहयोग दिया है ।

तब दण्डकारण्य योजना के सर्वोच्च कर्ता थे प्यारीमोहन महापात्र बाबू । वे श्रीजगन्नाथ की प्रतिष्ठा के समय कर्ता बन होम पर बैठेंगे । यह सुन कर उन्होंने कहा -मंदिर एक क्लब की तरह जगह होगी । सब एकत्र हो कर अपना भाव प्रकट करने का अवसर पायेंगे । अत: कोशिश की थी ओड़िया लोगों के लिए । मंदिर जैसी संस्था बने, उसमें सहयोग दिया ।

''इसका अर्थ नहीं कि अंधविश्वास का समर्थन कर गद्‌गद होकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरिबोल का जैकारा लगाऊंगा । मैं कर्ता नहीं बन सकता ।'' उन्होंने कह दिया ।

अनेक अनुरोध हुए । जरा भी विश्वास न था कि श्रीजगन्नाथ सिंहासन पर बैठेंगे । गजपति पधारे न थे । उन्हें कहा गया - त्रिमूर्ति की बैठकी हेतु नीचे प्रतिनिधि स्वरूप यंत्र गाड़ा जायेगा । बलभद्र व सुभद्रा के अस्थान पिंडी के नीचे यंत्र गाड़ दिया । श्रीजगन्नाथ का यंत्र गाड़ने गए तो महापात्र को अनुभव हुआ सारे शरीर में कंपन है । यंत्र गाड़ते समय बिजली छूने की तरह कंपन का अनुभव हुआ । चौंक कर कहा -'' ये क्या वे ही चिरंतन ? वे ही महाप्राण हैं ? सच क्या उन चिरंतन का चिर जग्रत स्फुलिंग छुपा है, इस ज्योतिर्मय रेखांकित यंत्र में ?''

फिर सोचने लगे - ना, ना यह तो भ्रम है । अपनी क्षणिक दुर्बलता का उपहास कर जोर से ठहाका लगाया महापात्र साहब ने । अपने अविश्वासी बंधु को इस भ्रम और दुर्बलता की बात कह कर ठहाका लगाया ।

अचानक एक झटका पाकर वे चेयर से गिर पड़े । कह उठे महापात्रजी -'' प्रभु क्षमा करना ! आप वही हैं ! वही हैं ! अब अविश्वास नहीं रहा !''

संशयसिक्त मन से संदेह दूर हो श्रद्धा लौटी ।

पत्रकार ने पूछा -'' आपने ठीक सुना है सर ! उन्होंने यह बात मंदिर की पत्रिका में लिखी है । इतना ही नहीं संचालक कृष्णचंद्र पाणिग्राही को भी कई बातें संकेत में कही हैं । इनकी चर्चा भी उस मंदिर पत्रिका में की है । नवकलेवर के समय दारु से बन रहे विग्रह पर अणसर के गृह में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रभु की देह में लगाये रंग का पुट बारबार फट जाता । प्रभु मन में मानो बारबार उदय हो कह रहे हैं -''मुझे ठीक से तैयार नहीं कर रहे ।'' यह कैसी बात ! पाणिग्राही चकित हो गए । सच कैसे मानें ? शास्त्रीय विधि से सब कर रहे हैं पं. सदाशिव रथशर्मा । संचालक कैसे हस्तक्षेप करें ? फिर भी प्रभु जैसा कह रहे हैं । ''तुम स्वयं तदारख कर ! देखना कई भूल -भाल कर रहे हैं !''

पत्रकार कहने लगे - उस दिन छः जुलाई थी । रविवार । नेत्रोत्सव तथा नवयौवन दर्शन के बीच सिर्फ एक दिन रह गया । दो दिन पहले पंडितजी ठाकुरजी को शंख भस्म का पहला फुट देकर बाहर प्रवचन हेतु गए थे । लौट कर देखा तो रंग फट चुका है ! इस बीच पांच - छः बार ऐसा हो चुका था । पहले सफेद रंग ठीक न बैठे तो आगे संभव नहीं । निर्धारित कार्यक्रम बिगड़ गया । रात में पंडितजी को श्रीक्षेत्र(पुरी) लौट जाना था । नवयौवन दर्शन के समय हर हाल में वहाँ पहुँचना था, क्यों रंग यों दरकता है, पता नहीं चल रहा । आठ जुलाई मंगलवार सुबह ठाकुरजी के नवयौवन दर्शन होंगे । रत्नसिंहासन पर विराज कर हजारों भक्तों को दर्शन देंगे । दुपहर बारह बजे फिर देवों को शंखभस्म से बना सफेद रंग दिया पंडितजी ने । सुबह किसी ने कुछ नहीं खाया । एकदम निराहार । ठाकुरजी अणसर में होने के कारण अस्थायी रसोईघर में नीतियाँ जारी थी । सफेद रंग का पुट देने के बाद मंदिर (अस्थायी एजबेस्टस गृह) बरामदे में पंडितजी गमछा बिछा लेट गए । संचालक पाणिग्राही अकेले अणसर घर में बैठे हैं । तथाकथित अणसरघर (अस्थायी रसोई घर) में गरमी और उमस ! इस बीच समय जा रहा ।

दुपहर के दो बजे होंगे । पता नहीं क्या मन में आया, बड़े ठाकुरजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के मुँह पर लगे पाट वस्त्र का एक कोना खींच लिया । फटकर कपड़ा निकल आया । पाट वस्त्र के नीचे दिव्य दारु के दर्शन हो गए । यह दर्शन दुर्लभ ! कोने से पाटवस्त्र उठने पर देखा - दारु में घुन लगने लगा है ! अब सब ठाकुर के श्रीअंग से पाट वस्त्र चीरने लगे पाणिग्राही । घंटे भर बाद श्रीअंग निर्वस्त्र । चारों ओर रंग वाले पाट वस्त्र चीरे-फटे पड़े हैं !

पंडितजी उठ कर अणसर घर में आये । देखा पाट वस्त्र के बिखरे टुकड़े । पंडितजी पागल जैसे होकर चीखे - "कृष्ण ! यह क्या कर डाला ? बिच्छू मंत्र जानते नहीं, सांप के बिल में हाथ डाल दिया !" गुस्से में तमतमा कर पंडितजी चले गए । औषध बनाने का नाप तौल क्या है ? कोरापुट में यह जानने वाला कोई नहीं । पाणिग्राही की बोलती बंद ! सुना था कि झोना का चूरा कपड़ छान कर तिल के तेल में मिला कर मलहम बनाते हैं । यह मलहम बना कर श्रीअंग में पाट वस्त्र लगाने पर अंग मजबूत होता है । घुन नहीं लगता, चोट नहीं लगती । सिर नवा कर पाणिग्राही बाहर आ गए ।

आजकल की तरह मंदिर कोलाहल मय न था । टेलिफोन तो दूर, कोई आदमी न दिखता । साढ़े तीन बज रहे थे । पहाड़ के बीच उतर आकर देखते हैं सामने पुलिस क्लब के पास एनएसी के कोई टेक्स कलक्टर खड़े हैं । पाणिग्राही एनएसी के चेयरमेन हैं । आवाज देते ही वे ऊपर आ गये । कहा - "कोरापुट की जिस दुकान में जितना झोना मिले, खरीद कर ऊपर लाओ । पुचला साही के हमामदस्ता, शिल-बटा लेकर मंदिर में आ जायें । रात भर श्रीजगन्नाथ का काम होगा ।

कुछ समय बार साही(बस्ती) की दस-बारह औरतें तथा भांगारिमा आ पहुँची । झोना छानने हेतु पताका का कपड़ा मंगाया जा चुका ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बरामदे में सब को लगा दिया झोना चूरा करने । सब पूछ रही -'इतना झोना क्या होगा ?'' वे कहते श्रीजगन्नाथ की नीति में इसकी जरूरत होती है । कुछ नहीं जानती । केवल भक्ति में श्रीजगन्नाथ का काम मानकर करने लगी । कुछ समय में तिल तेल के डब्बे आ गए । एक बार पंडितजी से सुना था - दारु को चोआचंदन तेल में डुबो कर झोना मलहम ऊपर देते हैं । झोना कूट-पीस, कपड़ -छान कर, उस पाउडर में तिल तेल मिला शिला पर पीस मलहम बनी । इसे औषध कहते हैं । ठाकुरजी के श्रीअंग पर औषध लगाने पर लोहे से सख्त हो जाते हैं । सुनी हुई बतें । नाप तोल का पता नहीं । इस बीच जैपुर भेज अपन्ना पाढ़ी की दुकान से सारा चोआ, चंदन तेल मंगा चुके थे पाणिग्राही जी ।

चंदन तेल आने से पहले भोगारिया ने पूछा -'' इतना झोना व तिल का तेल क्या होगा ?'' पाणिग्राही ने कहा -''पीस कर तेल मिला मलहम होगी । वह ठाकुरजी के श्रीअंग में लगेगी । !'' भोगारिया -''केवल झोना पीस तेल नहीं मिलाते । तिल के तेल संग पानी मिलाना है । मैंने ऐसे खिलौने खूब बनाये हैं । ऐसे ही मजबूत खिलौने बनते हैं ।' बरामदे में ही माथा टेक कर पाणिग्राही बोले-'' प्रभु अपना काम आप कराते हैं । मानव तो निमित्त मात्र है ।''

बरामदे में औषध बंटाई चली । पाणिग्रही कुछ-कुछ पीसी औषध स्वयं ले गए श्रीअंग में लेप करने लगे । बंटाई - पिसाई पूरी होने में रात आधी हो गई । सब भाव विभोर थे । बिना खाये भोगारिया के निदेश में बंटाई चलती रही । पंद्रह किलो लगभग झोना इतनी देर में बंटाई हुआ । भोर तीन बजे तक औषध लगाना संपन्न हुआ । पाट वस्त्र बाजार में मिला नहीं । अत: सफेद सिल्क कपड़ा लाया गया । काट कर औषध पर लपेटा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गया । सारा काम संपन्न होते न होते सुबह चार । वहीं अणसर घर में दरी पर पाणिग्राही लेट गए । पंडितजी कहने लगे -''औषध कहाँ से आयी ? किसने लगायी ?'' श्रीअंग छूकर कहा -'' सख्त हो गया ! इतनी अच्छी औषध बनी कैसे ?'' पाणिग्राही ने कहा -''पता नहीं । सब सांवरे कन्हैया का जादू है !''

वह महान जादूगर ! उस जादुई स्पर्श में मेरा और पत्रकार बंधु दोनों का शरीर रोमांच में भर गया ।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कान नहीं, पर सुनते हैं

प्रभु के कान सदा खड़े रहें । कि कहीं कोई गज पुकार रहा है ? प्रमत्त कुंभीर विकट दांतों से उसे ग्रास कर रहा है ? उसके त्रास से कोई गज त्राहि -त्राहि नहीं कह रहा ! प्रभु द्वारा गज उद्धारण आज भी जारी है ! इन पर विश्वास होता है, फिर मन बदल जाता है छोटे भाई का । बेटी का विवाह करना है उसे । साथ रखा है मुझे । श्रीजगन्नाथ को मैं निमंत्रण दूंगा, मेरे नाम से निमंत्रण छपा, फिर भी वह पिता है । श्रीजगन्नाथ को देखकर कहा -''बेचारा बिकल हो आपकी ओर आया है । महाराज रक्षा करें ! प्रभु श्रीअंग को सुशोभित कर रही पुष्प माला बीच में दो भाग हो गई । प्रभु ने आशीर्वाद दिया है - उसे बता दिया ! आश्रित और प्रभु के बीच यह वार्तालाप देख अचंभे में भर गया । छोटे भाई का मंगल कार्य खूब आनन्द मंगल से संपन्न हुआ ।

अब फिर छोटी बेटी का विवाह । इस बार आने की इच्छा न थी । उसकी जिद पर मंदिर आया था । मंदिर के पास निमंत्रण पत्र नारियल लेते न लेते चील झपटने की तरह पंडे ने पकड़ लिया । यह सब देख छोटा भाई(शरत) थोड़ा खीझ उठा । सिंहासन के पास निमंत्रण पत्र छुआ कर ले आये पंडाजी । श्रीजगन्नाथ को क्या देना है, डालो !''

-''श्रीजगन्नाथ को क्या देना ? उन्हें नहीं, आपको देना है ।'' भाई बोला ।

-''पहले उनके लिए डालो !''

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

-''श्रीजगन्नाथ का नाम लेकर व्यवसाय चल रहा है ।'' गुस्से में भाई न कह दिया ।

चली बहस । शोर शराबे में मन खराब हो गया । मैं विमला और लक्ष्मी मंदिर की ओर बढ़ गया । जिद्दी भाई के कारण दर्शन ठीक से कर नहीं पाया । फिर श्रीमंदिर लौटा । शुभ काम में विघ्न हुआ । सोचा, सिंहासन छुआने वाले को दक्षिणा नहीं दी गई । उसने छोटे भाई को गाली दी तब मैं ने उसे धमका दिया था, ऐसी अप्रत्याशित परिस्थिति से मन खट्टा हो गया था । श्रीजगन्नाथ के सामने क्या हो गया, अपराध बोध भर गया ।

''प्रभु इसे क्षमा कर दें ।'' प्रभु से कहा । देखा एक पंडा चंदन प्रसाद बांट रहे हैं हाथ आगे किया । मुझे देखा, नहीं दिया -''तुम उस के साथ मिल तर्क कर रहे थे, ना ?'' ऊंचे स्वर में पंडे ने प्रश्न किया ।

-''हाँ, मैं वही हूँ ।''

-''मैं भी वही हूँ जिसे दक्षिणा नहीं मिली !''

-''दया कर दक्षिणा लें, सब भूल जायें !''

दस का नोट आगे किया । मेरे हाथ पर उन्होंने चंदन दिया । ऋणी नहीं रहना पड़ा । प्रभु ने पंडा बता दिया । शुभ कार्य में असंगति नहीं आने दी दयावान ने ।

श्रीमंदिर और श्रीमंदिर के बाहर विभिन्न मंदिरों में विराज कर प्रभु श्रीजगन्नाथ पूजा स्वीकार करते हैं । विभिन्न अनुभव के विभव में ऐश्वर्यशाली करते हैं ।

दो वर्ष पहले की बात है । अमेरिका के नेसविले शहर में विशाल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गणेश मंदिर प्रांगण में बरामदे के कोने में , छोटी-सी पांच मूर्ति रखी हैं । रथयात्रा भाषण के प्रसंग में मैंने वहाँ कहा -

श्रीजगन्नाथ ही गणो हैं । सर्वदेव श्रीजगन्नाथ और गणनाथ में अंतर कहाँ ? पहले तो कुछ अटपटा लगा । बाद में श्रीजगन्नाथ ने यह भाव मन में उदय कराया । कभी प्रभु कांचि गए थे । ६००वर्ष बाद वे उस कांचि से साठ कि.मि. दूर मद्रास में मंदिर में एक साथ बट, पीपल और नीम एक साथ आलिंगन कर सहावस्थान में हैं । अद्‌भुत है । दो करोड़ के प्रतिष्ठान में विराजमान हैं श्रीजगन्नाथ ! कांचि अभियान का यह यथार्थ स्मारक ! इस विषय में मुख्य उद्योक्ता डा. कवि प्रसाद मिश्र ने प्रभु की अलौकिक महिमा 'बाईस पावच' ग्रंथ में पकट की है । यहाँ प्रभु की अलौकिक कथाओं का वर्णन है ।

डा. मिश्र की बहन मेरी धर्मपत्नी हैं । उनका मद्रास में इलाज हो रहा है, भाई पास हैं उनके । मैं दूर । गुरु आदेश पर मुझे वर्धमान जाना होगा । पत्नी वारण कर रही हैं -गुरु से कहो, पत्नी गंभीर रूप से अस्वस्थ हैं मैं जा न सकूंगा ।'' मैं सोच रहा था -''मना कैसे करुं ?'' श्रीजगन्नाथ को अपने भजन में कहा है -

''आज मेरे गुरु रूपे आप विरासजित ।
गुरु स्वर में सुनता आपका स्वर सत ॥

गुरु रूपी श्रीजगन्नाथ की आज्ञा कैसे नहीं मानूं ? वर्धमान गया, लौट कर मद्रास पहुँचा । पत्नी रोग शैया पर थी । एक घुटना बदला गया है । वहाँ से फिर शहर से बीस मील दूर सागर तट पर महाबलीपुराम के पास ग्रेनाइट पत्थर से निर्मित श्रीजगन्नाथ मंदिर में प्रभु दर्शन किये । पहले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कई बार गया हूँ । केवल इसी मंदिर में बाइस पावछ पर बैठ समुद्र दर्शन कर सकते हैं । श्रीजगन्नाथ के दर्शन किये ।

त्रिमूर्ति को लिए एक विराट माला झूल रही है । श्रीमुख की ओर देख प्रार्थना कर रहा हूँ -

'प्रभु हैं । फिर कोई भय नहीं ।''

अतिकाय सर्प शिवलिंग को घेर कर पीछे हटने की तरह विराट माल प्रभु देह से फिसल कर सिंहासन पर गिरी । भक्त को ऐसे संकेत दे कर प्रभु वार्तालाप करते हैं । जो कान हमें जन्म से मिले हैं, उनसे यह सुनाई नहीं देगा । स्थूल कान जो सुनें वह कुछ नहीं । बहुत कुछ अनसुना रह जाता है । अत: अपने लिए ऐसे कान रखे ही नहीं । वे कर्णहीन हैं । हृदय गुफा में बहुत गहरे है वह यंत्र, उसके बल पर प्रभु की वार्ता सुनी जा सके । हृदय और विश्वास के जरिये । तब प्रभु की बात सुन सकेंगे । समझ गया, पत्नी स्वस्थ हो जायेंगी । भुवनेश्वर में काम था, तुरत लौट गया । पत्नी को शीघ्र लौटना था, पर नहीं आ सकी । अचानक ज्वर हुआ, बढ़ने लगा । अनजान वाइरस से ज्वर बढ़ता गया । छूट नहीं रहा । खर्च दुगुना हो चुका । अमेरिका से दवा मंगाई उसकी चिकित्सा हुई, बड़ी मुश्किल से । रो-रो कर श्रीजगन्नाथ से कहा डा. कवि प्रसाद मिश्र ने । ऐसे दुरारोग्य की बात बाद में उन्हें पता लगी ।

माला ले कर पास सहेज रखी थी । संकेत में पत्नी के आरोग्य की बात प्रभु ने सूचित की थी । याद आ गया, पिछले साल मद्रास गया तो पत्नी साथ थी । गजपति भी उस उत्सव में थे । मंदिर संपूर्ण होने से पूर्व प्रभु निचली मंजिल पर थे । वहाँ से बाइस पावछ उठी हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तब तक मां विमला व लक्ष्मी स्थापित हो चुकी । मैं मां विमला के सामने । भजन और फिर बगला स्तोत्र चला । अंतर से पूछा मां को -

"मां मुझ पर कृपा दृष्टि क्यों नहीं ?"

मुझे लगा उत्तर आ रहा है -"कैसे ? आँख तो नहीं ।"

गौर से देखा । पत्थर की आँख में चांदी की आँख और काला बिंदू देता तब तो मां साफ देख पाती । वे चांदी की आंख तो मां की नहीं ।

पता किया । आँख तो थी । खिसक गई हैं ! मिल नहीं रही ।

"आज प्रतिष्ठा का दिन है । आँख नहीं लग सकती ?" परेशान हो कर पूछा । इतनी जल्दी असंभव । कार ड्राइवर मेरा आग्रह देख मद्रास की एक दुकान पर ले गया । ।

विकल स्वर में दुकानदार से कहा -" दो आँख आज चाहिए । मंदिर की प्रतिष्ठा आज है ।" वह हँस पड़ा । हँसी में भरोसा था, व्यंग नहीं । मुझे कुछ समय प्रतीक्षा करायी । उपेक्षा न कर अपना बड़प्पन दिखा दिया । मालिक की आज्ञा से कारीगर ने घंटे भर में तीन चांदी की आँख बना दी । बनाने के बाद दाम पूछा । कहा -" चांदी की छोटी आँख तीन । मामूली मूल्य । अच्छे काम में लग रही है । कुछ देने की जरूरत नहीं ।"

अद्भुत करुणा प्रभु की । मेरी इच्छा पूरी कर दी । श्रीजगन्नाथ प्रतिष्ठा के समय विमला की आँख मिली । विमला कौन हैं ? वे भी वही श्रीजगन्नाथ ! प्रभु का मातृरूप ! आनन्द में गद्गद होकर कार में बैठा । ड्राइवर से कहा -" बहुत पुण्य मिला तुम्हें ! पक्के भक्त हो ! मेरी विकलता देखी, प्रभु की उचित सेवा की है । अच्छा, आप का नाम ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहा -" मुहम्मद यूनुस !" उसने कहा ।

मुसलमान होकर हिन्दू का मन रखते हो ? भगवान और खुदा में फर्क नहीं भई ! याद रखना !"

-"जानता हूँ, भई !"

-"वो दुकानदार कौन है ?"

-"हाजी इब्राहीम ! चेन्नई का बड़ा भारी सोना - चांदी का दुकानदार है !"

प्रभु ने चकित कर दिया । हिन्दू देवता के लिए आँखें देकर पैसे भी नहीं लिए - मुसलमान व्यापारी ने ।"

प्रभु के लिए हाथ जोड़ लिये ।

हे प्रभु श्रीजगन्नाथ ! आप क्या सिर्फ हिन्दू के ठाकुर हैं ? सारे संप्रदायों के परम सत्य और परम सत्य हैं आप ! आपके कान नहीं, पर आप भक्त के प्राणों की बात सुनते हैं !!

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रेम : प्राप्ति का पथ

हजारों भक्त हाथ जोड़े खड़े हैं । तुरही, मर्दल, भेर बज रही ।

प्रभु पहंडी में पधार रहे हैं । बलभद्र और सुभद्रा रथ पर विराज चुके हैं, श्रीजगन्नाथ सेवकों के बीच झूलते आ रहे हैं । पग नहीं, चाल प्रखर है ! अविश्वासी कहेगा - यह चाल नहीं, घसीटना है । आगे जाना नहीं, धकियाना है । पीछे से धकिया रहे हैं । कमर में तगड़ी रस्सी लगा खींचा जा रहा है । विग्रह !

अंगुली रहित दो बाहु लेकर,

उठा-पटक कर दयिता गण प्रभु को गतिशील कर रहे हैं ।

ऊपर - नीचे मुँह कर सेवक गण प्रभु को ले रहे हैं । इसे देखने वाले भावुक भक्त कहते हैं - देखो ! प्रभु की चाल ! टीवी, रेडियो पर प्रचार हो रहा पग बिनु चाल ! धन्य है भक्ति ! बौद्धिक और स्वयं को विवेकवान लोग यह देख ताजुब करते हैं ।

भक्ति की सीमा रहे । अतिशयोक्ति बंद हो । कुछ मर्यादा रहे, हे महाबाहु ! ऐसे मर्यादावान को शाबास कहने के सिवा क्या उपाय है ?

कुछ भक्तों की आँखें बह रही हैं । कोई-कोई कोह में भर गया है । वैज्ञानिक भाव वाले दर्शक परिहास कर मुस्का रहे हैं । ये वैज्ञानिक, इनकी भृकुटी भक्तों पर टेढ़ी । कलकल बहती आ रही है जनता की स्रोतस्वती । इस कूल पर विश्वास, भावावेश और आवेग । उस कूल पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संदिग्ध मन के प्रश्न ! अतल अंधविश्वासी निरीहों के भोलेपन के प्रति गहरी संवेदना । सबमें निरालम्ब निर्लिप्त श्रीजगन्नाथ । कोई कहता है प्रतिमा है, कोई विग्रह कहता है । दारु की जगह काठ कह कर कोई खुशी ले रहा । इधर कोई पुकारता -''मणिमा ! महाबाहु ! ये दर्शन देकर बचा लिया ! जन्म-जन्म की आकांक्षा पूरी की है !''

इसी समय दूर से किसी परिचित बंधु का स्वर सुनाई पड़ा -''ओ ! बंधु क्या मांगते हैं ?''

बंधु निंदक नहीं । निर्दय आलोचक भी नहीं हैं। अनुरक्त नहीं कहा जा सकता उन्हें । ओड़िया भाव प्राणों में भरा है । हृदय में श्रीजगन्नाथ प्रीत तो नहीं, पर उत्कलीय अभिमान खूब है ।

बंधु ने कहा -'' श्रीजगन्नाथ ओड़िया जाति की अद्‌भुत सृष्टि है ! अद्‌भुत प्रतीक पूजा की सृष्टि की है । ईश्वर के निराकार - साकार भाव का समन्वय बना दिया ओड़िया जाति ने । वे अधूरे नहीं, पूरे हैं ।

ओड़िशा के पक्के दार्शनिक चिंतन का प्रतीक हैं वे । पर क्यों आँख से आँसू बहाते हैं भक्तगण ! उनके विचार से ऐसी व्याकुलता एक पागलपन है । कहो बंधु क्या मांग रहे हो ? बंधु ने जोर देकर फिर कहा -

''कुछ नहीं, बस प्रभु को जी भर देख रहा हूँ !''

बंधु ने कहा -''क्यों उनको थामे हो ? क्या पाया है उनसे ?''

''उन्हें तो पाया । इससे बढ़ कर क्या पाता ?'' मैं बोला ।

बंधु ने कहा -'' भाषा का इंद्रजाल न बिछाओ । ये भंजा साहित्य नहीं । भंज श्रीजगन्नाथ दोनों मेरे लिए आतंक हैं । आपने दोनों को पकड़ा है । आप एक आतंकवादी हैं ।''

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूर से आपको जुहार ! श्रीजगन्नाथ को पाना और श्रीजगन्नाथ से पाना एक ही बात है ?'' बंधु ने पूछा ।

मैंने पूछा -'' आपने पत्नी से बहुत कुछ पाया है । उन्हें पा सके हो ? उनके देह, मन, आत्मा सब सिर्फ आप हैं ? रोम-रोम में क्या आप ही हैं ? स्त्री को पास पा कर भी पा सके हो ? उन्हें पूरी तरह मिलकियत के रूप में पा कर भी वह प्राप्ति है ?''

मुझ से सब सुन कर कहा -'' ये सब भंजीय किक्लष्टता है । मैं जानता हूँ । मैंने पत्नी से सब पाया है , अत: उन्हें पाया है ।''

-''श्रीजगन्नाथ से बहुत कुछ मिलता है । पर वे सहज नहीं मिलते । एक बार वे मिले, अन्य मिलना मामूली बन जाता है ।'' बंधु को देख कर कहा ।

-''सुनो, बंधु ! इस रहस्यवाद में मेरा सिर चकाराता है । श्रीजगन्नाथ का अनुभव सहज ढंग से बताओ ।''

साले रविबाबू के साथ एक दुर्लभ श्रीजगन्नाथ दर्शन की बात बताने लगा । उन्होंने नया स्कूटर खरीदा था । श्रीजगन्नाथ दर्शन पर गए तो पीछे बैठने हेतु उन्हें एक श्रीजगन्नाथ भक्त की जरूरत पड़ी । उनकी भक्ति सूची में मेरा नाम था । अंगपीड़ा की बात भूल कर पीछे बैठ गया । कुछ दूर पर वर्षा जोरों से होने लगी । रास्ता सूझ नहीं रहा । इस मौसम में इतनी दूर ! बस आप लौट जायें ।'' किसी ने उपदेश दिया ।

-''हाँ, चलो लौट चलें !'' वर्षा खाकर रविबाबू ने प्रस्ताव दिया । ''एक बार श्रीजगन्नाथ को स्मरण कर निकले हैं, अब हमारी जिम्मेदारी नहीं, उनकी है । वर्षा छूट जायगी ।'' मैंने कह दिया ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्होंने कहा - ''दुकानदार की सुनी । यह वर्षा छूटने वाली नहीं ।''

''छूटेगी ! छूटेगी । प्रभु पर विश्वास रखें !'' मैंने जोर देकर कहा । एक तो वैसे मैं जीजा । फिर भक्त विशेषण से विभूषित था । उपाय न था उनके पास, मेरा कहा मानना पड़ा । गाड़ी चल नहीं रही । वेस्पा की कछप गति । फिर भी जीजा उत्साह में था ।

कुरुक्षेत्र में तीरों की तरह वर्षा रविबाबू के चेहरे को छलनी कर रही थी । मैं अर्जुन बना । शालक सारथी आगे बढ़ने को उत्साह दे रहा । अब बात असर नहीं करती । कहा -'' जी, मेरे शरीर से आपकी काया सुरक्षित है । मेरा चेहरा वर्षा में बेहाल है । कैसे आगे बढ़ें ?''

-''न आगे न पीछे । श्रीजगन्नाथ को स्मरण कर कहीं ठिकाना लेंगे ।'' मैंने पीछे से कहा ।

रविबाबू परेशान होकर बोले -''आसरे के लिए जगह नहीं । आगे पीपली आ रही है । वहीं रुक कर फिर वहीं से लौटेंगे ।'' श्रीजगन्नाथ याद आ गए । कुछ सोचे बिना कह दिया -''पीपली पार कर लें । वर्षा न रुकी तो लौट पड़ेंगे ।''

कुछ आगे बढ़े । वर्षा का कोई चिन्ह नहीं । बंधु ने कहा -'' इसे श्रीजगन्नाथ की महिमा कहोगे ?'' मैंने कहा -''जैसी आप की इच्छा ।''

मैंने कहा -'' मंदिर में काफी भीड़ थी । प्रभु के आगे धक्का-मुक्की में दर्शन हुए । एक वृद्धा गरुड़ स्तंभ के पास खड़ी । प्रभु दर्शन कर नहीं पा रही । विकल हो रही । भीड़ में उसे पकड़ ऊंचे उठाया ।'' मां कर लो दर्शन प्रभु के ! कोई बात नहीं । जी भर दर्शन कर लो ?''

दर्शन कर नेह में उसने मेरे होंठ धरे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"बेटे तुम कौन हो ?

क्या करते हो ?"

"नौकरी !"

"बड़े आफिस में करते हैं ?" रविबाबू बोले ।

वृद्धा ने गौर से फिर देखा । "अभी भी नौकरी करते हो ?"

वृद्धा के प्रश्न पर मैं चौंक गया । सच ! नौकरी में दो साल से वनवास । राजनैतिक विद्वेष के कारण सामयिक रूप में नौकरी से छुट्टी मिली है ।

रवि बाबू भी अचंभे में भर गए । नौकरी में असुविधा की बात वृद्ध ने कैसे जानी ?

मैं तब तक भाव विह्वल हो चुका था । सच तो ! श्रीजगन्नाथ मंदिर में झूठ क्यों कह दिया ? दूसरों को ठग सकते हैं । प्रभु तो सब जानते हैं ।

वृद्धा को ठगने का मन न था । उनके सरल प्रश्न का जटिल उत्तर न कर थोड़े में बात पूरी करना चाहता था । पर प्रभु की इच्छा कुछ और थी । वे चाहते हैं कि जो सत्य, वो कहूँ । कह दिया -"आपने ठीक कहा मौसी ! मुझे घर पर बिठा दिया है ।" रवि बाबू की आँखें छलछला आयी ।

-"कोई घर पर बिठा नहीं सकता । जिन्होंने घर पर बिठाया, वे घर पर बैठेंगे । श्रीजगन्नाथ का पुत्र है तू । तेरा कुछ न होगा । मैं जो कहती हूँ वही होगा ।" कह कर वह भीड़ में कहीं खो गई ।

कौन थी वह ? यह श्रीजगन्नाथ का आशीर्वाद प्रभु के आश्वासन का प्रत्यय ? भक्त की पीड़ा उपशम करने प्रभु का प्रशांत परश !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

-''सच ! आप का तो कुछ न हुआ । नौकरी में कहीं सम्मान अच्छी और स्थिति पर गए । पर यह श्रीजगन्नाथ का दान है ?'' बंधु की बात पर कहा -''आप खुद बतायें । किसके संग गये ? किसके संग एग? जो हुआ, वह वास्तव या स्वप्न ? वृद्धा ने जो कहा, वह सच हुआ । कैसे हुआ, बतायें ?''

''पीपली के बाद रुकने की तरह एक संयोग !'' बंधु ने कहा ।

''बात को मामूली संयोग कहते हैं ? साधारण वृद्धा प्रश्न करेगी, मेरी नौकरी की स्थिति के बारे में !'' मैंने खीझ कर पूछा ।

मेरी बात पर वे हँस पड़े । मैं कुछ हतप्रभ हुआ । मानो हँसी कह रही है -''अबोध भावुक ।''

मैंने पूछा-'' हँसे क्यों ?''

उन्होंने कहा -''सोच रहा हूँ, अब कहेंगे, वो वृद्धा ही मां विमला है ! आप भक्त तो ब्रह्मा, जो कहेंगे सच होगा ! इन बातों में मुझे विश्वास नहीं । पर आपके कहने के ढंग से प्रभावित हूँ !''

इतनी बातों में बंधु को मेरे बोलने का ढंग ही मिला ! यही उनकी प्राप्ति हुई ? इस बीच पच्चीस वर्ष बीत गए ।

इस साल बंधु संग फिर भेंट हुई । रथ खींच कर मेरे कपड़ों पर कीचड़ लगा है । घिसट कर पांव में चोट लगा बैठा । चेहरे पर खूब आनन्द । प्राणों में संतोष ।

बंधु ने पूछा -'' रथ खींचा ?''

मैंने कहा -'' हाँ, कितनी मुश्किल से मेरे हाथों रथ खिंचाया ! वरना मैं रथ सकता ?''

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं जोर से रथ खींच रहा ।

साथ में और कई ।

रथ आगे जा रहा ।

कुछ क्षण बाद एक दुखद बात पता चली ।

धन्य हैं प्रभु ! ऐसे ठग दिया ? यह रथ की नहीं पुलिस कार्डन की रस्सी थी ।

रेडियो कमेंट्री जल्दी खत्म हो गई । रथ जल्दी चल पड़ा । अन्य वर्षों के कारण यह अवसर नहीं पाते । आकर खूब उत्साह में खींचने लगा । पर यह तो कार्डन की रस्सी है । रज्जु की जगह सर्प पकड़ लिया ? उपनिषद के वर्णन की तरह मुक्ता की जगह रजत पकड़ा । लोग कहते हैं 'दगा दिया जगा देव !' ऐसा दगा देते हैं श्रीजगन्नाथ !!

देखा रथ रज्जु दूर है । मुख्यमंत्री रथ खींच रहे । अत: वहाँ पुलिस का कड़ा पहरा ! लाल मुँह वाले ब्लाक टाइगर मंगाये गए हैं । उनका कोई भरोसा नहीं । पुलिस घेरा भेदना असंभव !

खूब दगा दिया प्रभु ! ठीक है आप की इच्छा । सांझ घिर रही । आगे नहीं जा पाता । रथ खींचना हमारे भाग्य में नहीं, लौटें ।

''सर, बाहर क्या कर रहे हैं ? रथ खींचा ?'' कालेज के दो रोवर स्काउट पूछ रहे हैं । कुछ दिन पूर्व मैं उनका मुख्य था । कहा - ''अब तक नहीं कर सका ! रथ रज्जु के बदले कार्डर घेरे वाली रस्सी खींची है ।''

''आप आइये सर ! जी भर कर खींचें !'' उन्हें पुलिस ने बाधा नहीं दी । मुख्यमंत्री के पास जी भर कर रज्जु खींच पाया ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बंधु ने कहा - " किसी ने नहीं पूछा - पास कहाँ ?"

मैंने कहा -"मेरे पास तो श्रीजगन्नाथ हैं । फिर पास की क्या जरूरत ?"

बंधु ने कहा -" आप सहज हीश्रीजगन्नाथ को पा जाते हैं ! इस प्राप्ति का पथ क्या है ?"

मैंने कहा - "श्रीजगन्नाथ को विश्लेषण न करें ।

विश्वास करें ! प्रेम ही इस प्राप्ति का पथ है !!"

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कितनी दूर, कितने पास

प्रभु विराज रहे हैं स्नान मंडप पर । 'हरिबोल' हुलुध्वनि जारी हैं । कुछ समय बाद १०८ घड़ों में जल से प्रभु श्रीजगन्नाथ का अभिषेक होगा ।

बड़ दांड से खड़ा यह दृश्य देख रहा हूँ । ऊपर जाने का मौका अब की नहीं । हर बार अभिषेक जल के लिए साथ बोतल लाता हूँ । अबकी भूल गया । हर साल की तरह वंशी बाबू साथ हैं । खेद में कहा - ''अब की स्नान जल जरा भी न मिला !

''आप को प्रभु जरूर देंगे ।'' वंशी बाबू ने कहा ।

उनकी बात पूरी हुई कि एक सेवक आ पहुँचे । ''जल मिला ?'' मुझे पूछा ।

''नहीं मिला । साथ लेने शीशी भी नहीं !'' मैंने कहा ।

''पानी खत्म हो गया । पानी भींगा गमचा निचोड़ देता हूँ । वही ले लो !''

गमछा भींगा चंदन पानी चाट चित्त में संतोष किया ।

अब प्रभु गणेश वेष में होंगे । किस अतीत में भक्त का मन रखने यह वेष किया था । जेष्ठ पूर्णिमा के स्नान के बाद गणेश वेष में दर्शन देते हैं प्रभु श्रीजगन्नाथ । ऊपर जाकर प्रभु का आलिंगन करना तो संभव नहीं । केवल नीचे से दर्शन में मन मानता नहीं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रभु का अजीब खेल । १०८ घड़े जल से स्नान । फिर उन्हें ज्वर होगा । ब्रह्माण्ड नाथ को ज्वर । उन्हें औषध चाहिए ! साले रवीन्द्रनाथ मिश्र से सुना है - मंदिर के ज्यातिषी रोज आकर प्रभु को राशिफल बता कर जाते हैं । एक दिन राशिफल बताया -''प्रभु के भोजन में विलंब होगा । झमेला होगा । सचमुच उस दिन भोग नष्ट करना पड़ा । प्रभु के जीमण में विलंब हुआ ।

वे ठहरे भावविनोदी । भाव में बह जाते हैं । भक्त संग खेल करते हैं । सहें - सब भूल कर ऐसे ही मात उठो ! महाकाल भी डर जायगा । भाव में रचित भजन आ रहे हैं जबान पर । ऐसे ही प्रभु मेरे हाथों लिखवा लेते हैं । दरदी हैं, परम दयामय हैं । स्नान पूर्णिमा का यह अद्‌भुत भाव । स्वयं कभी वेद प्रतिपादित तो कभी कवि । मेरे चित्र में कविता का निर्झर पैदा करते हैं वे य।

अन्य दिन दर्पण में प्रतिबिंब पर स्नान कराते हैं । आज स्वयं स्नान अभिषेक में हैं मशगूल ! सब राजकीय आचरण ! मणिमा' संबोधन से वे आल्हादित हैं । भोजन का नाम 'मणोही' है । स्नान का नाम 'अभिषेक' है । प्रभु का राजदरबार ! प्रभु कल्पतरु हैं । पर ऊपर जाने का मुझे अवसर नहीं । ससुर का अभी ही वियोग होने के कारण अशौच, अतः जा न सकूं । प्रभु और मेरे बीच बड़ा व्यवधान है ।

ट्रांस्फर के बाद रोज कटक स्थित गोपालजी मंदिर में श्रीजगन्नाथ दर्शन के बाद ससुर से भेंट होती । ससुर-जंवाई संपर्क एक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक संपर्क में बदल गया, उनकी वियोगजनक स्मृति प्रभु विरह के समय मन में आ गई ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीजगन्नाथ दर्शन के बाद प्रभु को अर्पण की गई माला मेरी साइकल के हैंडल से बांधी गई । उससे पीछे कैरियर पर होगा मछली का बैग । घोर तामसी और सात्विक भाव अजीब समन्वय वाली साइकल ससुर के कविराज की दुकान पर टिकाई जाती । परिचित बंधु मजाक करते -''जी क्या प्रभु की माला के साथ पानी फल बंधे हैं ?''

हँस कर ससुर जी कहते -''उसने श्रीजगन्नाथ को पकड़ रखा है तो क्या वह मछली नहीं खयेगा ? मेरी तरह इन का भी एक दिन आमिष बिना न चले । वे क्या तुम्हारी तरह तुलसी माला वाले हैं ? भक्ति अपनी जगह, मछली अपनी जगह है ।''

बाद में दीक्षा ले कर आमिष छोड़ ही दिया । ससुरजी की बातें याद कर आमोद लगता । विवाह के समय कृपानिधि के कृपा निर्झर की बात याद आ गई । एक झोंक में कहा था मां से कि यह प्रस्ताव तोड़ दें । सब आश्चर्य में भर गए ।

महाप्रसाद की साक्षी में सगाई हो चुकी श्रीजगन्नाथ आश्रित होकर भी मन में यह खयाल आया । श्रीजगन्नाथ से द्रोह का खयाल नहीं आया । श्रीजगन्नाथ चेतना छू कर भी छू न सकी । एक रिश्तेदार ने मंतव्य दिया ।

''तू तो श्रीजगन्नाथ पर सदा निर्भर रहता है । छोड़ दे उन पर । अब गड़बड़ करने पर बूढ़े ब्राह्मण शाप देंगे । तू श्रीजगन्नाथ पर सब छोड़ दे, वे खुद ठीक कर देंगे ।'' अरे, मैं यह क्या कर रहा हूँ ? मन में चमक आ गई । प्रभु श्रीजगन्नाथ पर व्याह का दायित्व छोड़ दिया था । वे श्रीजगन्नाथ ही तो प्रजापति हैं । वे तो घटसूत्र के नियामक हैं । उन्हें ही तो जीवन साथी चुनने कहा था । उन्होंने चुना है । यह न सोच, अपने खयाल बीच

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में क्यों ? सर्वमंगल श्रीजगन्नाथ ने मेरा गतिरोध कर दिया ।

विवाह हुआ । जिस बात से मन में अद्भुत खयाल आया था, वह बड़ा भ्रम है, श्रीजगन्नाथ ने बता दिया । मेरा विवाह जिन्होंने कराया, उन्होंने प्रभु को विवाह का निमंत्रण दे कर कहा था -" आप उपस्थित रह सब करायें ।" प्रभु ने सारा दायित्व ले लिया । हाथ में ज्यादा धन न होने पर भी प्रभु ने सब मजे में करा दिया । बहुत दिन बाद प्रभु को परेशान करने बैठा था । बड़े बेटे का विवाह पुरी में रथ यात्रा के अगले दिन । प्रभु रथ में होंगे, तब विवाह संपन्न होगा । यह उनकी इच्छा का प्रतीक है । यह बात निमंत्रण पत्र में लिखी थी । पर निमंत्रण पत्र बांटे नहीं जा सके ।

बेटे को मस्तिष्क ज्वर । सब की जिद - विवाह सरकाया जाये । ना, वह ठीक होकर विवाह करेगा । प्रभु मेरा मान रखेंगे । मान उद्धारण ने मान रखा । बेटा ठीक हो गया, वह बेदी पर बैठा । कोई न जान सका कि कल ही अस्पताल से लौटा है ।

मेरे और परिवार के साथी श्रीजगन्नाथ हैं । मेरे जीवन के नियामक हैं, उनके नयन पथ गामी ! ऊपर की ओर देखा । भीड़ जम रही । वंशी बाबू दर्शन कर लौट रहे हैं । गौर किया, प्रभु मुस्करा रहे हैं । पूछ रहे हैं तेरा अपना अस्तित्व कहाँ ? मेरी इच्छा के प्रभाव से तू युगों से बुलबुले-सा तैरता आया । मेरी इच्छा से तेरा जीवन रसाणित है । उस इच्छा के कुम्हार चाक से गढ़ा है तेरे जीवन का हर स्तर ।

फिर मुस्काते कह रहे -"अनसमझ ! समझा है ?"

सच ! कहाँ मेरी अपनी योजना ? कहाँ मेरी करामात ? न विद्या न च पौरुषं, तव इच्छा हि केवलम् । तो मेघगर्जन में कह रहे हैं - कान की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राह नहीं मस्तक से वह स्वर आ रहा है ।

वंशी बाबू की देह में प्रभु का सांवला रंग लगा है । उन्होंने आलिंगन किया है । वो अवसर मुझे नहीं मिला । पर यह उससे निविड़, अंतरंग स्पर्श है । विपुल भुज बढ़ा सूक्ष्माति सूक्ष्म बंधन में प्रभु बांध रहे हैं । मैं आलिंगन करने बांह बढ़ाते ही वे बाहु पसर आती हैं । कैसी विपुल बाहु ! इतने ऊंचे मंडप से बड़दांड तक पसर रही, मुझे लेने ।

अजीब अनुभव ! पास रह जो न पाया, आज अचानक वह स्वत: पाया । विछेद कितना सुन्दर है ! दूरी कैसी मधुर ! तभी महाप्रभु चैतन्य दूर रह कर गरुड़ स्तंभ के पास से दर्शन करते । दूर से उपभोग में गहराई ज्यादा है ! मैं विगलित हो रहा ! पिघल रहा हूँ । यह क्या ? अनंत की अनंत लंबी बहु आ रही हैं ! मंडप लांघ बड़दांड हो कर बढ़ी आ रही । कवि गाते हैं -''विपुल भुज विस्तार दी । क्या करेगा दु:ख महाबाहु ।'' आलिंगन करने मानो आ रही है । दूरी कहाँ ? प्रतिबंधक कहाँ ?''

मानस नेत्रों से दिख रहे भक्तबंधु आज भक्त तक बाहु पसार रहे हैं । गणेश वेश में हैं -''भोग दे ! फूल दे ! जो देना है, दे ! मैं लेने आ रहा हूँ । सबसे अच्छा द्रव्य दे ! वह है तेरा हृदय ! वह है जवाकुसुम ! वही सूर्य हूँ । जवाकुसुम संकाशं, काश्यपेयं महाद्युति हूँ ।

मैं तामस परस्तात् वही आदित्य वर्ष महान पुरुष हूँ । दे दे तेरा देय ! हृदय रूपी मंदार रख दे मेरे चरण में ।''

बड़ दांड पर दीप अर्पण कर वंदना कर रहा हूँ । हाथ - चक्राकार फिर रहे प्रभु के प्रति !

मन में माया फिर रही । सच, विपुल भुज में आलिंगन दिया प्रभु ने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

? श्रीराम रूप में विभोर ऋषि कह रहे हैं - ''विभ्रम उपजा मानस, सखा से सखी कहे आ(भंज) विस्मय संकेत । रेकार्ड बज रही है -

करेंगे स्नान ।

विश्व व्यापी, निराकार, श्रीजगन्नाथ भगवान !''

सच या यह विभ्रांत चित्त का प्रतिफलन है ? आवाज सुनाई पड़ रही । मेरी रचना, स्नान यात्रा पर !

''भाव विनोदी, भाव में बहें, भक्त संग खेल !

सब छोड़ डूब इस खेल में, डर जाये महाकाल ।।''

यह क्या सुन रहा ? बाहर या अंतर में ? कान लगाये । मेरा लिखा गीत ? भजन ! रिकार्ड बज रही -

सौ आठ कलश जल स्नान फिर होगा ज्वर ।''

स्नान लीला पर गीत है । ठीक समय पर बजा रहे । हृदय का द्वंद दूर कर प्रभु संदेश दे रहे ! ठीक समय पर सुना रहे ! दूर रह कर दूरी नहीं रखी । तेरा 'गीत तू सुन ले ! दूरी स्थूल में है, सूक्ष्म में कहाँ ? भाव नहीं ! भक्त बहता भाव में ! मैं वही भक्त के संग बहता !

गीत पूरा हुआ । ऊपर देखा । प्रभु खूब निकट हैं ! अब गीत नहीं ! प्रभु दूर चले गए हैं । परम प्रेममय प्रभु पास से विदा ले चुके हैं ।

फिर से प्रणाम किया उन विचित्र कर्मा विश्वम्भर को !!

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कल्पतरु की छाया

पुरी बजार में मिलती श्रीजगन्नाथ की मूर्ति को कोई दूर से देखो तो लगेगा वे भाई बहन सह बांह उठाये हैं । बचपन से श्रीजगन्नाथ के पूजित चित्र में ये भाव मिला है ।

मां ने बताया है - सब देवताओं से ऊपर विष्णु है श्रीजगन्नाथ । शुरू से ही इधर आकृष्ट रहा । मां ने कहा था - समय पूरा होने पर किवाड़ खुल गये । अधगढ़ रह गए । अपनी इच्छा से उन्होंने यह रूप ले पूजा पायी ।

ये अध बने देवता मेरे मन में शुरू से ही भा गए ।

कटक में विभिन्न बस्तियों में रथ निकलते । मेरे परिचित दो जगहों के रथ में देखा करता । स्कूल के दिनों में बूढ़ी ठाकुरानी और अलिसा बजार की दुर्गा मूर्ति पुवाल से बांधने से लेकर माटी, रंग लाने, मेड़ बनने के बाद तक जैसी भेंट होती, वैसी भेंट होती कटक में मुहरम के समय ताजिया के मेड़, बनाटी खेल और कसरत के समय ।

रथयात्रा में साही-बस्ती के जो रथ निकलते थे, बाद में पुरी में देखे रथों के अनुसार वे नहीं होते । गोलाकार गुबंद जैसे होते । तीन देवों की छोटी मूर्ति एक रथ में विराजती । आज भी वही व्यवस्था होती है । रथ के सामने वेशों में सजे नाना गीत अभिनय दिखा, लोगों का मनोरंजन करते ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जहाँ रथ रुकेगा, वहाँ अभिनय होगा । एक तरह का अभिनय होगा । इस रथयात्रा का तामसिक भाव लगा रहा बाल मन पर ।

कटक के 'बूढ़ी ठाकुरानी' के रथ में पहले नाचेंगे शवर- शवरी । शवरी भूमिका वाला युवक बातों में कुछ स्त्रौण लगता है । लोग ठिठोली भी करते रहते हैं उसके साथ । कई बार घरों से बालटी में मांड और धोवन का पानी ला कर अपनी गायों को देते मैंने देखा है । पर उस दिन पूरी तरह शवरी । लोगों के हँसी-ठट्ठा और रंगीन पेय के प्रभाव से स्वयं को शवर की घरवाली के रूप में सजधज वही परिचय देता । बात - बात में अश्लीलता, वयस्कों से चूहल होती । हम जैसे छोटों को भी उसमें मजा आता । शवर एकदम नशे में चूर । मुँह से बोल नहीं निकलते । लोग कहते, रोज के जीवन में भी शवर - शवरी जैसे रहते । ऐसे मजेदार परिवेश में बहुत पीछे रह जाते श्रीजगन्नाथ । उसे ज्यादा आकर्षक तो ये शवर - शवरी लगते ।

उन दोनों के पीछे होते बस्ती के मियां और दहीवाले दाढ़ी लगाये मियां बाबू रथ के आगे दहीवाली को कहते -

"दहीवाली, हमारी गली आना ।

कसम तुझे रामजी की आना ।"

दही वाली का उत्तर याद नहीं है । इतना याद है पक्की ग्वालिन की तरह वह उत्तर देती ।

अलीशा बजार केवट साही के युवक रथ के आगे रामायण के दो प्रसंग प्रस्तुत करते । प्रति वर्ष अभिनय होता । ताड़का वध और परशुराम पराजय । ताड़का और परशुराम का अभिनय जोरदार होता । राम-लक्ष्मण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

का भी प्रभावशाली होता । इस आमोद में श्रीजगन्नाथ का रथवाला आध्यात्मिक परिवेश कुछ क्षतिग्रस्त होता ।

सोचा पुरी में रथयात्रा के समय भी ऐसा कुछ होगा । पर वंहाँ का दृश्य भिन्न । मंदिर की तरह तीन रथों का आकार ऊंचा । सामने ऐसे हलके अभिनय की जगह भक्तिभावपूर्ण कीर्तन मंडली का उद्दण्डी नृत्य ।

होश सम्हालने के बाद प्रभु से पहली भेंट मैट्रिक परीक्षा देने के बाद । रथ के आगे अनेक नागा संन्यासी । उस साल नागा संन्यासी एवं पुलिस के बीच झगड़ा हो गया । पुलिस ने लाठी चलाई, लहू-चलुहान , सर्वभारती खबर हो गई । यह सन् १९४९ की बात है ।

लोग चर्चा करते - इस बार श्रीजगन्नाथ की मूर्ति और दो से कुछ बड़ी हो गई है । सचमुच श्रीजगन्नाथ बलभद्र की तुलना में काफी बड़े दिखते ।

उस साल नवकलेवर दारु पता नहीं कहाँ पर प्राप्त हुए थे ।

एक बार तो मिले ब्रह्मपुर - भुवनेश्वर मार्ग पर चंदनपुर से कुछ दूर । एक बार साखीगोपाल से ।

दोनों बार अपनी आँखों दारु देखा है । अलौकिक ! शंख, चक्र, गदा और पद्म । अद्भुत बात ! स्वप्न में संधान अलग-अलग जगह पर मिलता है दारु का । मशान के पास बांबी के पास, चिड़िया नहीं बैठती । नाग रखवाली करता है हर दारु की । कहानी सुन परीक्षा की, हर बार सच निकला ।

बारह-पंद्रह वर्ष के बाद जब दो आषाढ़ आते हैं, प्रभु का नवकलेवर होता है । दइतागण काकटपुर में श्रद्धा में लेटे होते हैं, दारु की सूचना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिलती है । जीर्ण देह तज प्रभु नव कलेवर धारण करते हैं । गीता में मनुष्य के लिए जो कहा -यहाँ आचरण में वह दिखा ।

आचरण सिद्ध आचार्य हैं । वे कहते हैं - इधर देखो, मेरे अंदर के ब्रह्म को देखो । वह ब्रह्म पदार्थ आत्मा है । एक घट छोड़ दूसरा घट । मेरे इस घट छोड़ने पर दइता रोते हैं । कुटुंबी जो ठहरे । मैं इस क्रंदन से ऊपर हूँ । मैं हूँ अविनाशी, चिरंतन । तू भी वही । तू मेरा अंश है । तेरी देह का विलय है, आत्मा का नहीं ।

कैसे होता है ? यह अद्‌भुत नीमदारु । समय पर प्रभु का अवयव बन शोभा पाता है ।

ज्ञानी क्या उत्तर दें ? वास्तव सत्य को भक्तों का कल्पना जाल कह उड़ाना संभव नहीं ।

पुरी ही नहीं, दूर राउरकेला श्रीजगन्नाथ मंदिर में नवकलेवर होता है । स्वप्न में दारु सढ़ेइकला में मिला । जो दारु संधान में जाने पर अराजी हो, उसे स्वप्न में बेंत खानी पड़ें । यह अनुभव बता रहा था पुलिस अधिकारी कालिंदीचरण पात्र को वे एएसआइ । साथ में गुरु भाई रमेश पटनायक । भीड़ में से खींच सिंहद्वार के पास पुलिस वालों के पास बिठाया ।

अब की मन हुआ प्रभु का नीलाद्रि विजय देखूं । पहले एक बार देखा था । तब रविबाबू थे मंदिर प्रशासक मेरे साले । सात खून माफ । खूब पास से दर्शन । उनके पास रह सारी नीति के दर्शन किये । इस दिन प्रभु रथ से अवतरण कर श्रीमंदिर प्रवेश करते हैं । घर की ओर चलने में देर नहीं करते । तेज कदमों से पहण्डी होती है । दइता छूते न छूते प्रभु बढ़ते जाते हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपभोग दृश्य । अब मां लक्ष्मी चाहणी मंडप से देखती हैं - आँख मिली ! वे पालकी में पधारे हैं ।'हरिबोल, हुलुध्वनि' ! प्रभु गृह प्रवेश कर रहे हैं । अचानक प्रभु ने टाहिया हिला दृष्टि ऊंची की । मां से दृष्टि मिली । कुछ मुस्का रहे । देखने वालो ने न वह हँसी देखी । बूढ़े-बड़े, प्रौढ़, युवक, युवती सब दांपत्य प्रेम प्रवाह में बह गए । द्रवीभूत ! आवाज थी 'उद्धार हो गया प्रभु ! यह दृश्य देख सके !'' पुलिस की गाली या धकेलने की परवाह नहीं । एक वृद्ध कह उठे -'' प्राण जायें तो मुक्ति ! यह दर्शन अद्‌भुत है !!

प्रभु मंदिर की ओर बढ़ रहे ! रोशनी वाले पटाखे छूट रहे । प्रभु प्रत्यागम कर रहे ! तेज पाहुण्ड ! पहिण्डि में कोई श्रम नहीं इस समय । रस्सी खुली बछिया की तरह बढ़ते जा रहे !!

मां लक्ष्मी का आदेश ! पट बंद ! श्रीजगन्नाथ विनती कर रहे । मानवी लीला ! साथ न ले भ्रमण पर गए, दोष है, रुठना है ! श्रीजगन्नाथ की ओर के सेवक कहते हैं - पर मां एक न सुनती । अंत में आंतरिकता का परिचय पाया । द्रवीभूत हुई । द्वार खुले !

प्रभु प्रवेश कर गए । अद्‌भुत दिन ! उस दिन अनुभूति का स्वाद लेने साथ रमेश बाबू को भी बस में ले गया । कई बार सरकारी गश्त पर जा कर प्रभु करने दर्शन अपनी गाड़ी में गया हूँ । बार-बार दर्शन की इच्छा संग सरकारी टूर का समन्वय देख श्रीमती मजाक करती । उत्तर स्वरूप रमेश को बस में ले कर अपने अहं तोड़ा, अपनी भक्ति भी मापी है । जल्दी बस पकड़ी । समय पर पहण्डी देखने का मन । पर बस खराब हो गई । टायर घिस कर आग लगी । दोनों उतर गए । देर होती देख चिंता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करने लगे । ज्यादा चिंतित एएसआई बंधु । सुबह से ड्यूटी थी । नौकरी पर आंच की बात से घबरा रहे ।

देर बाद दूसरी बस ली । सेवकों की गड़बड़ी के कारण पहण्डी में देर हो गई । एएसआई खुशी-खुशी ड्यूटी पर पहुँचे । लीलामय की लीला । अभिभूत थे पुलिस बंधु !

रमेश से मेरा परिचय पा गए । रथयात्रा की कमेंट्री कई बार रेडियो पर सुनी है । उनकी स्नेह श्रद्धा मिली । उन विश्वव्यापी की कृपा !

उन्हें बता रहा था -प्रतिवर्ष अवसर देते हैं रेडियो पर महिमा गान के लिए । बार-बार हर वर्ष नाम देख, एक बड़े प्रतापी अफसर ने मना कर दिया । तीन साल नहीं बुलाया ।

कई श्रोताओं के पत्र थे - मुझे बुलाया जाये । इसमें मैं कहीं जुड़ा न था । पर उनका खयाल था कि मैं करा रहा हूँ, और भी जहर भर गया । प्रभु की लीला गान से वंचित हुआ । पर प्रभु ने उनका प्रताप तोड़ा । ट्रांस्फर हुआ । फिर रेडियो से बुलावा आया । इस निमंत्रण को बंद करने के प्रयास हुए । केंद्र के संचार मंत्री राज्य के मुख्यमंत्री बने । मेरा छोटा भाई उनका राजनैतिक प्रतिद्वंदी था । अत: उनकी पत्नी का ट्रांस्फर दूर जगह किया ।

मामूली बात का बहाना कर मुझे कुछ समय सस्पेंड किया गया । अर्से से स्कालरसिप के पैसे न लौटा आफिस में पड़े रहे । वे पैसे रोमीफोन कनेक्सन के लिए काम में लगाये, इसे आर्थिक अपराध कहा - मेरे विरुद्ध कारवाही । रेडियो को खबर दी सस्पेंड हैं, अत: कमेंट्री का अवसर न दें । रेडियो आफिसर थे माधव महांति, कहा - ''हम सरकारी अफसर को नहीं बुलाते ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीजगन्नाथ संस्कृति के गवेषक और भक्त को निमंत्रण कर रहे हैं ।'' बात वहीं रह गई । प्रभु श्रीजगन्नाथ ने मान रखा ।

पहली बार दूरदर्शन पर कमेंट्री शुरू हुई । पर एक प्रसिद्ध प्रोफेसर ने कड़ी आलोचना कर कहा -''प्रभु को 'तू' कह छोटा किया । धृष्टता की है । ओड़िया प्राणों के प्रभु कितने निकट हैं, जान कर भी न समझें ! 'तू', 'तेरे, तुझे, उसे' कह प्राण शीतल हो जाते हैं, उन्हें न दिखा । झूठ-सच मिला अखबारों में भेजा । कमेंट्री में मैंने मुख्यमंत्री की खुशामद की ! नौकरी बढ़ाने के लिए ।

मन में कहा-'' प्रभु तुम जानो रघनाथ ।'' प्रभु ने उनके विषदांत तोड़ दिये !

उस बार दिल्ली दूरदर्शन से निमंत्रण न था । रेडियो ने सुध न ली । होम डिपार्टमेंट बुलाया करता है, प्रभु चर्चा का अवसर मिल जाता है ।

पर इस बार वह भी नहीं । मन में मान !

रथयात्रा के पहले दिन । सूचना विभाग के मुख्य सहायक आये । कल सुबह गाड़ी लाऊंगा, सर ! अंतिम क्षण में निर्णय हुआ । पत्र लिखने का भी समय न था । गाड़ी आयेगी, चलेंगे ! रथ दांड से आप सारे दृश्य का वर्णन करेंगे ।''

मनोभाव समझ, प्रभु ने बुलाया है ।

एएसआई पात्र बाबू सुन रहे । एक पहंडी चली एक को सिंहासनरुढ़ करने के बाद सेवक दूसरे को पहंडी करते हैं । सुदर्शन, बलभद्र की पहंडी हो चुकी । सुभद्रा को अधर में उठाये ले जा रहे हैं दइता गण । श्रीजगन्नाथ उतरे नहीं । पात्रजी भी अपने ज्ञान से महिमा बखानते जा रहे हैं । उनके

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पड़ोसी प्रतापी जन जमीं दबा बैठे थे । प्रभु को निवेदन किया - विकल होकर । मुकदमे का मोड़ बदला, पड़ोसी को सजा हो गई ।

कृपामय प्रभु ! जल्दी द्रवीभूत होते हैं । भक्त दु:ख हरण के लिए हैं । कल्पतरु ! मागें - मिले !

मैंने कहा -" ठीक कहते हैं । मांगे कुछ भी अदेय नहीं वहाँ । बचपन से जिद थी - कुछ न मांगू ! निष्काम भक्ति ही रखूंगा । संकट में ही पुकारुं ! बुलाया -सुना है । व्यर्थ पुकारने की धृष्टता की नहीं । करुंगा नहीं । वे ठहरे गर्वगंजन ! इस अभियान को उन्होंने तोड़ा ।

पुलिस वाले ने पूछा -'बिना संकट के पुकारा ?"

-"हाँ, प्रोमोसन की प्रार्थना की । प्रभु को कहा ।"

मैंने कहा -" पत्नी ने भी समझाया था । मैं समझ न सका । अपने विवेक को समझा कर कहा -" यह संकट नहीं तो क्या है ? प्रभु को कहने में बुरा क्यों मानेंगे ?"

दो बार बहाने कर हमारे विभाग को सर्वोच्च दूसरों को बिठाया । मेरी बात उठी नहीं । श्रीजगन्नाथ को बताने के मार्ग पत्नी जानती हैं । सलहज से सीखा है कि अभाव-असुविधा सिंहाद्वार वाले सिंह के कान में कह दो, श्रीजगन्नाथ को कह काम करा देंगे ।

कई बार सिंह के कान में फुसफुसाते देखा है उन्हें । वैसे करुं ! तो अपनी जिद भी रह जायेगी ।

मगर खुद न कह दूसरों से क्यों कहूँ ? श्रीमती सिंह के काम में कहें । मैं तो सीधे कहूँगा ! चंदन चर्चित हो रहे हों, तब जो मांगो, देते हैं !!

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चंदर लग रहा - मांगा - ''प्रभु ! अपमान लगता है । मान रखें । सर्वोच्च बना दें ।''' प्रभु कृपा से सर्वोच्च बनने का सौभाग्य मिला ।

नौकरी में सर्वोच्च ।

मगर प्रभु के आगे खर्व हो ही गया मैं !!

पात्रजी बोले -''यह भावना आपकी खर्वता ले गई । कल्पतरु तो आश्रय देते हैं । इसमें उन्हें आनन्द है । मन में क्षोभ न करें । देखिये प्रभु पहंडी में बढ़ रहे हैं !

मानो वे त्रिविक्रम मन से खर्वभाव मिटा रहे हैं ! यह खर्वभाव दूर करने है यात्रा ! आलिंगन कर उन्हें । आहरण कर उनसे विराटता विभूति !!

वे कल्पतरु ! कितनी शीतल छांव ! मैंने आश्रय लिया !

ग्लानि कैसी ? प्रभु के साथ मंदिर की ओर बढ़ते समय सोचता रहा -'' जिस कल्पतरु ने मार्कण्डेय ऋषि को आश्रय दिया, वे तो मेरे संबंध हैं । खर्वभाव परिहार कर ! वामन त्रिविक्रम से आहरण करुंगा व्याप्ति और तृप्ति !

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गर्व गंजन पताका उड़ रही

दो दिन बात प्रभु की रथयात्रा है । दूर पश्चिम ओड़िशा के सुन्दरगढ़ से जाना होगा प्रभु के विराजमान स्थल ।

इस बार रथयात्रा की कमेंटरी देने रेडियो से निमंत्रण नहीं मिला । फिर भी जाना तो होगा उन तक । निकट रहो तो प्रभु की रथयात्रा का अपूर्व दृश्य प्राणों को पल्लवित करता है । संतप्त प्राणों को संतोष देने, रथयात्रा हेतु कल यात्रा करनी होगी ।

याद आ रही पिछले साल रथ यात्रा की बात -प्रभु श्रीजगन्नाथ की अजीब लीला हुई थी तब । रेडियो कमेंटरी का अजीब अवसर मिला ।

पहंडी विजे पूरी कर चार सीढ़ियों से ऊपर चढ़ने की बात । प्रभु तिल भर नहीं हिल रहे । बार-बार तुरही और भेरी बजती है । दइतापति गण रस्सी खींच रहे हैं । अन्य दइता गण पीछे से धकेल रहे हैं ।

एक कदम भी नहीं चढ़ते । हरिबोल, हुलुध्वनि सब व्यर्थ हो रहा । मन मौजी वाले हैं ठाकुर । मन नहीं तो न सरकें, दइता सेवक पसीना - पसीना हो चुके हैं । क्यों रूठे हैं प्रभु ? वे कुछ न चाहते । सारे अपराध क्षमा करें ! फिर भी प्रभु को कुछ नहीं सुन रहा ।

वे मेरु की तरह अचल हैं । जरा भी नहीं सरकें । मैं भी रेडियो पर इस लीला की कमेंट्री कर रहा था । प्रभु ने जिद की है । सहज नहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जायेंगे । किस में कितना बल, ताकत है आये । प्रभु को हिला चार पर उठा सिंहासन पर बिठा दे । अविश्वासी के लिए नीम से बनी प्रतिमा भर है । दंतावल हाथी की तरह विपुल काय दइतापति पूरी हुंकार भर ताकत लगा रहे, जरा भी हिला नहीं पाते । कहाँ वे पुण्यवान जिनकी अंगुली स्पर्श से प्रभु चलायमान होंगे ? किसकी नेह पुकार में प्रभु का मान भंजन होगा ।

खुशामदियों ने सरकारी माइक्रोफोन से घोषणा की - प्रभु उठ नहीं रहे । जरूर मान किये हैं । वह मान दूर करने निवेदन करें । राज्य प्रशासन प्रभु चरणों में हाथ फैला रहा है । लो मुख्यमंत्री आ रहे हैं । गद्‌गद हो वर्णन करते जा रहे सरकारी स्तावक शिरोमणि खूब मोहक भाषा में । अब मुख्यमंत्री स्पर्श कर रहे ! जरूर उठेंगे । राज्य के मुख्यमंत्री का अनुरोध ! सारे दोष क्षमा करें महाभाग ! आप चलें १ मुख्यमंत्री का अनुरोध ! अब सुनेंगे प्रभु !

देखा सीएम दइता के बीच प्रभु को स्पर्श कर रहे हैं । कुछ कह रहे ... हम सुन नहीं पाते । सरकारी घोषणा में अपनी भाषा चल रही ।

महाप्रभु देश का सिंहासन खड़ा है, अनुरोध कर रहा है । जिस पर कभी कपिलेंद्र, पुरुषोत्तम देव बैठे थे । आज मंडन कर रहे मुख्यमंत्री ! मानभंजन हेतु पधार हैं वे । हरिबोल, हुलुध्वनि हुई ।

वक्ताओं ने जोरदार जैकारा लगाया । पर महाप्रभु नहीं सरके । सीएम का निवेदन अनसुना रहा । वे कपिलेंद्र - प्रतापरुद्र की परंपरा में दायाद नहीं, यह इंगित दे रहे हैं ? अचल रहे । सिर नीचा कर मुख्यमंत्री लौटे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भेर गूंजी । हरिबोल हुलुध्वनि भर गई । भीड़ में प्रवेश कर रहे गजपति ! इस समय वे ? छेरा पँहरा हेतु निमंत्रण पाकर पधारते हैं । यह बेवक्त का बुलावा गया । प्रभु अड़े बैठे हैं । यह रुठना दूर करे पुत्र ! पिता - पुत्र का अभूतपूर्व खेल । भक्ति -भावना की अद्‌भुत लीला । प्रभु-सेवक की अजीब आँख मिचौनी !

गजपति सिंहदेव पहुँचे । युवक महाराज ! अनुभव कम है । मगर भक्ति खूब है । उनके पूर्वज बाहुड़ा पर नहीं आते । ये आते हैं । बाहुड़ा पर छेरा पंहरा मुदिरथ के हाथों होने की परंपरा खत्म हुई ।

ये तो प्रभु के स्वीकृत प्रथम सेवक हैं, सरकारी एनाउंसर की आडंबरी भाषा से हट कर वे ही कपिलेंद्र - पुरुषोत्तम के वास्तव उत्तराधिकारी हैं । चारों ओर हरिबोल, हुलुध्वनि । गजपति महाराज प्रभु के आगे लंबे पसर गए । अर्थात् प्रभु के आगे एकदम न्यून हो गए - 'महाभाग ! अपराध क्षमा करें । विराजमान हों ।'' बस प्रभु सरके । फिर मंगल ध्वनियां भर गई हवा में । उठ गए ऊपर वे ।

गजपति महाराज राज नौहर लौट रहे हैं । फिर छेरा पंहरा हेतु पधारेंगे । तुरही बज रही । विजय तुरही ! भक्त और सेवक की विजय ! प्रभु का मान टूटा । साथ टूटा बड़प्पन । टूटा झूठे प्रचार का शिखर ।

रथयात्रा हेतु जाते समय की घटना है,

सरकारी मंच सजा है । मित्रों ने बुलाया पहले की तरह कमेंट्री करने के लिए । जब रेडियो से निमंत्रण नहीं, इस मंच से प्रभु दर्शन का और लीला गायन का अवसर है ।

मंच पर पहुँचा । वही सरकारी कर्मचारियों से घिरे एक मंत्री । वे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कवि भी हैं । सरकारी पत्रिका में एक कविता 'सुभद्रा' छपी है उनकी । उसमें जगन्नाथ ने तय किया - शासन भार स्वयं नहीं रखेंगे । और अपनी छोटी बहन सुभद्रा को अर्पण कर दिया । वे सुभद्रा अब उत्कल का शासन कर रही हैं ।

भाषण देने को मन नहीं किया । ऐसी खुशामदी कविता है । कहा- खूब सांकेतिक और भावव्यंजक है । गर्व में भर गए हैं मंत्री । पास बैठे कमेटेटर से कहा -यह कविता व्याख्या के साथ जनता को समझाने का दायित्व है आपका । आप व्याख्या कर इसे समझायें लोगों को ।

अहो धृष्टता ! अब श्रीजगन्नाथ की गाथा की जगह प्रशासन की प्रशस्ति होगी । कमेंटेटर तो धुरंधर है । मंत्री जी का धीर-मधुर वचन ठीक पकड़ा । चला उन धुरंधर धंधेबाज का भाषण । श्रीजगन्नाथ कहीं छुप गए । भाषण में भावपूर्ण प्रशस्ति मंत्री की । खूब चली ।

शासन सुभद्रा के हाथ में डोर है । कवि ठीक कहते हैं । देवी दुर्गा के हाथ उत्कल का शासन है । प्रगति रथ चल रहा है ।

देखा अब तक रथ का पहिया नहीं सरका है । विचक्षण वक्ता के आडंबर पूर्ण वर्णन में श्रीजगन्नाथ को कही न पा सका । वहाँ श्रीजगन्नाथ कहाँ ? केवल प्रगति की प्रशस्ति है । सर्वमय कर्ता की अभूतपूर्व कीर्ति है । मंत्री के चेहरे पर संतोष की हँसी । बहुत खूब कमेंटटर ! बिंदु को सिंधु कर सकें । वचन के अद्‌भुत विश्वकर्मा ! प्रगति वचनों से मंत्री परम संतुष्ट हैं । सुभद्रा प्रगति की प्रतीक हैं । उनके माध्यम से सरकार का सहज प्रचार ।

श्रीजगन्नाथ पास हैं । निर्विकार पुरुष । इन से वे विचलित नहीं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनेक शासक, अनेक प्रशंसक देखे हैं अपने खूब दिगंत तक विस्तारित नेत्रों से । इसकी चिंता नहीं, विचलित नहीं ।

पर मैं प्रभु श्रीजगन्नाथ की तरह अविचल, निर्विकार, निर्लिप्त नहीं रह पाया । आहत हुआ । क्लांत हो गया । स्वयं प्रभु विराजमान हैं । उनकी सभा में अन्यों की जयगान ! कैसी अक्षम्य धृष्ठता !

वक्ता जारी हैं । कविता का तर्जमा भी । सुभद्रा शासन का विस्तृत विवरण । आत्म प्रशंसा में झूम-झूम मुग्ध हो मंत्री देख रहे । बीच-बीच में निगाह मुझ पर पड़ कर लौट जाती । मंत्री मेरे मित्र ! कर्ता के रोष से बचा ने मुझ पर प्रशासनिक खड्ग सम्हाले हैं । राजनैतिक षडयंत्र का शिकार था मैं । राजनीतिज्ञ भाई मेरे कर्ता के प्रतिवादी । यह मेरा गुरु गंभीर अपराध ।

कवि टीकाकार अद्भुत समन्वय में त्रिमूर्ति की बहन सुभद्रा के बारे में कैसा आविष्कार है ! श्रीजगन्नाथ खो गए, बुझ गई सुभद्रा, जाग उठी है मां सुभद्रा !!

वे आज सर्वमय कर्ती । उत्कल धन्य है । नारी शासन में प्रभु का प्रत्यक्ष अशीष है । श्रीजगन्नाथ का मधुर प्रसाद है । देव कैवल्य का संधान है । नारी ही प्रकृत कर्त्री हैं । उस का सुफल उत्कल को मिलेगा ।

और सहा नहीं जाता । कमेंटेटर बार-बार पानी पी रहे । खूब दबादब धारा में भाषण । खूब दंभ भरे स्वर में । कितने वाचाल स्वर में !!

सब समझते हैं प्रभु ! आगे कुछ कह न सका । गला भर आया । आँखें गीली ।

निर्विकार, अविचल । निर्लिप्त हैं प्रभु ! उनका विचार अभ्रान्त ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सजा कठोर ! बाद की घटनाएँ खूब परिचित । प्रचारित और चर्चित रही । एमर्जेन्सी उठ गई । जो सर्वोच्च थे वे हुए न्यून । मुकुट माथे से उतर गया । जिन्होंने कविता का स्रोत बहाया, वे भी वहीं बह गए । खूब प्रखर कमेंटेटर थे, वे भी नहीं बच सके । परिवार में आया तूफान । शोक का गहरा प्रवाह ।

उग्र वीरं महा विष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं ।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्योर्मृत्यु नमाम्यहम् ॥

वे उग्र, भीषण । सामने कोई बांहे दिखा ताल ठोंके, वे न सह सकें गर्व, अहं, अभिमान को वे चूर कर दें । अतः युग-युग में वो गर्वगंजन पताका उड़ रही है !

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भक्त के दो बूंद आँसू

अनन्य हैं प्रभु श्रीजगन्नाथ ! अतुलनीय हैं वे । गंभीरता कोई माप न सके । सागर का हिसाब कोई क्यों करेगा ? 'तदन्तिके तद्दूरे' कभी वे एकदम पास कभी वे बहुत दूर । अपूर्व अद्भुत, अनुभव है यह आँख मिचौनी खे ! उनके संग बैठे रहो, लहरें फूल छू लेने की तरह, एक पर एक स्मृतियाँ और अनुभूतियाँ । उन अंतरंग क्षणों में अकथ कहानी भक्त बांधव की चरम दया प्रतिफलित होती है । दया मांग कर कोई उनसे पा न सका आजतक । दुर्योधन को लौटा दिया, दया नहीं की । उसके घर पर भोजन नहीं किया । चव्य, चोष्य, लेह्य सहित विराट आयोजन किया था । उपेक्षा कर, छोड़ कर, तथाकथित राज-सौजन्य को लांघ कर चले गए विदुर के घर । उसने बुलाया न था खाने के लिए । क्यों बुलायेगा ? राजा जहाँ निमंत्रणकारी, सैकड़ों नारी आरती करने खड़ी स्वागत करने । श्रेष्ठ सूपकार स्वर्णथाल में व्यंजन लिए हैं, वहाँ प्रभु को भोजन निमंत्रण की वे सोच भी न सकें ।

निमंत्रण नहीं, पर वे आये । भोजन की कोई तैयारी नहीं, खाया । कोई व्यंजन नहीं, केवल साग खाया । तृप्त हुए, भक्त को तृप्त कर गए । जो न मांगा सो दिया, बिना निमंत्रण के आये । ऐसा अनुभव कहाँ ? कौन वर्णन कर सकेगा विदुर की ऐसी निष्काम भक्ति की कहानी ?

हम तो याचक हैं ! प्रभु के आगे हाथ फैलाते हैं । वहाँ भी दया की असीम अवारित वारिधार !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्रौपदी पर संकट पड़ा है । दूर से आये प्रभु दौड़ कर । भोजन कर पोंछपांछ लेने के बाद एक कण भात खाकर तृप्त ! उनकी तृप्ति में तो जगत तृप्त है । भर गया दुर्वासा का पेट ! छिन्न हो गया षडयंत्र का जाल, द्रौपदी का संकट टल गया ।

मांगने चला है सुदामा । निष्काम भक्ति में भरा है उसका हृदय । फिर भी स्त्री, पुत्रादि की चिंता में मांगने का भाव आया है । विवेक वाधा देता है । मुक्तिदाता और त्राता से मांगे भोग ? यही क्या भक्ति है ? पर प्रभु क्या पीछे रहे ? वे देते गए । है इसकी तुलना ? पटान्तर नहीं ।

१९९९ में नीलाद्रि विजय उत्सव देखने गया था । मित्रों के आगे ये बातें कह रहा था । प्रभु दक्षिण मुखी हो गरुड़ स्तंभ के पास विभीषण की वेदना स्वीकार कर रहे हैं । विभीषण श्रीजगन्नाथ की लंका से वंदना कर रहा है - ऐसा लोक विश्वास है । सारलादास की महाभारत के अनुसार कृष्ण भी आज्ञा से, राजसूय यज्ञ में घटोत्कच के हाथों, युधिष्ठिर ने निमंत्रण भेजा विभीषण को । चिरंजीवी विभीषण पर कृपा करते हैं कृपानिधि ।

विभीषण - प्रभु फिर कब मिलोगे ?

प्रभु ने कहा -

नील सुन्दर पर्वत पर कल्पवट तले मिल,
हम वहाँ पहुँचेंगे बौध रूप लेकर ।
आधी घड़ी हम होंगे दक्षिण मूरत ।
उत्तर द्वार पर तेरी टूटेगी जगति ॥
हम प्रतीक्षा में होंगे नील सुन्दर पर्वत पर ।
लंका गढ़ में दृश्य होंगे हम तुझ तक ॥"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भक्त बंधु भक्त वंदना स्वीकार कर रहे हैं । किवाड़ बंद किये हैं महालक्ष्मी । मुझे लगा प्रभु मुरझा रहे हैं । पथश्रम से कष्ट हुआ है । विश्राम की इच्छा, द्वार खुले नहीं । सुदामा का दारिद्र्य दूर कर, गज उद्धार कर, मानी का मान रख, अब प्रभु लौट रहे हैं ।

पूर्व जन्म की सूर्पणखा अब कुबजा असुन्दरी खड़ी है । कुब्जा में सूर्पणखा वाली मायावी सौंदर्य शक्ति नहीं जिसके बल पर भव्य सुन्दरी हो प्रभु के पास पहुँचेगी । कुरूप है । विकलांग शरीर है । पूर्व जन्म में कितनी कामना की प्रभु को पाने की आशा, उस जन्म में नाक-कान कटे । आज प्रभु ने वह वासना पूरी कर असुन्दर कुब्जा को सुन्दर बना दिया । बाहर सुन्दर जो देखती, उसे रूप दिया, अन्दर जो सौंदर्य में देखता है, उसके विद्वेष, हिंसा विष दूर कर चारों ओर 'सुन्दर' किया । पत्नी कहना नहीं मानती, अब मानती है ; बेटा सुनता न था, अब सुनता है । पिता स्नेह नहीं करते, अब करते हैं । मित्रों से स्नेह, सहानुभूति सहयोग मिलने लगा । सब कुछ मधुर और सुन्दर हो गया । अधरं मधुरं, वंदनं मधुरं वचनं मधुरं । मधुवाता ऋतायते, मधुक्षरति सिंधवद । प्रभु स्वयं मधु ऋतु हैं । स्वयं वे मधुवाता हैं । मधु सिंधु रूपी हैं मधु ऋतु हैं वे । जो खोजता सो पाता है इन परम सौदर्य और परम मधुरता मधुरता का स्पर्श ।

कुब्जा एक प्रतीक है । हम सब कुब्जा हैं । कुबजलदा है । मानाभिमान, अवज्ञा, अभक्ति, अविश्वास, द्वेष, असहिष्णुता, क्रोध, हिंसा आदि कूबड़ पीठ पर लदे हैं । यह कूबड़ उतार, सुन्दर, रमणीक कर देते हैं वे राधारमण ! कल्पतरु पूरण करते हैं वांछा इसमें प्रभु को सुख नहीं । सुख दे कर वे सुखी होते हैं । कुब्जा को सुन्दर कर उन्हें संतोष ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्लान्त हो लौट रहे हैं प्रभु । देखो तो लगता है श्रम सीकर झर रहे हैं । यह दृश्य देखते - देखते स्वर उभरता है -

कुब्जा को किया सुन्दरी ।
असंभव संभव आप करो ॥

प्रभु कहते हैं सेवक मुँह से -
"मैं क्लान्त कमला !"

पिघलती है सागर दुलारी, द्वार खोलती हैं आँखें भर आती हैं । हमारे लिए कितना श्रम किया ! प्रभु के मंदिर में जाने के बाद गया । साले के साथ पुरी दिव्यधाम में उनकी गुरु मां के पास गया । वर्णन किया इस अनुभव और मन को कविता में ।

मां ने कहा - गीत अच्छा है । पूरा कर श्रीजगन्नाथ को सुनाना । लौट कर पूरा किया, भगवान को सुनाया -

"कुबजा को सुन्दरी किया ।
असंभव को संभव किया ॥
जो थी उपेक्षित, सौभाग्यवती बनी ।
वश किये जगदीश सुवेशी हुई ॥
प्रभु हँसे मिटे है प्राणों की प्यास ।
चतु: वर्ग दाता सदा भक्ति के पास ॥
आप लक्ष्य आप मन पूरा करते ।
महासिंधु पर आप कृपा लहर ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अकिंचन को देते मान होता अज्ञान अधीन ।
असुन्दरी देते प्रीत परिपूर्ण कर ॥
मैं वही कुब्जा, सीधे चल पाता नहीं ।
दें मुझे नव जन्म कुब्ज उतार ॥"

मुझे लगा जैसे मेरे अन्य भजन सुने, वैसे प्रभु सुनते हैं । कुबजा, ध्रुव, हिरनी, भरत पक्षी, द्रौपदी और विदुर की तरह कृपापात्रों के लिए एक-एक गीत होगा । विदुर का गीत -

खुद तो साग में तुष्ट,
हो गए जगदीश ।
न सोचा क्या होगा,
जन को विश्वास ॥

गज के लिए लिखा -

जो होता गज-सा,
विघ्न ग्राह ग्रस उद्धार होता ॥

कृष्ण के लिए लिखा -

मैं उस द्रौपदी -सा,
मान जाता, वनमाली बता ॥

ध्रुव के लिए लिखा -

गाभी रूप में पिलाया ध्रुव को दूध ।
भक्त वत्सा रंभाना सुन अधीर ॥

हिरनी के लिए लिखा -

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्या करेगा व्याध और अग्नि सर्वग्रासी ।
आश्रय दाता जिसके प्रभु ब्रह्मराशी ॥

गज की तरह पुकारा, बाद में गज की तरह प्रबल राज शक्ति रूपी विद्वेषी ग्राह का गला काटा । द्रौपदी की तरह हाथ उठाये, उन्होंने लाज बचायी । कुब्जा से मुझे सुन्दर बनाया, हिरण्यकशिपु का वक्ष विदीर्ण किया । मुझे राजनैतिक आक्रोश से रक्षा कर आक्रमणकारी को विदीर्ण किया । मुझे राजनैतिक मतलब से परेशान कर सरकार के सर्वमय कर्ता मेरी नौकरी लेने बैठी, मेरे लिए हाईकोर्ट में केस लड़ रहे बैरिस्टर रणजीत महांति से कहा - ''महाद्रुपद नंदिनी दुर्योधन की नौकरी ले जायेगी ?'' तेरी नौकरी नहीं, उसकी नौकरी जायेगी ।खूब हँसे वे, कह कर । मेरी 'सहकार' पत्रिका में लिखा -

'द्रुपद नंदिनी का कोप मुझ
पर मेरा नाम दुर्योधन ।
खत्म हुई संपत्ति,
पड़ी विपत्ति, छोड़ा न अभिमान ॥

बैरिस्टर सहित मित्रों ने कविता का आनंद उठाया । फिर लिखा -

झरना है जीवन प्रतीक,
नहीं स्थिर नदी ।
गदा युद्ध हो चाहे,
जानुभंग भी झुकूंगा नहीं ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृष्ण केशव याद कर उन्हें सब कहा -

देख रहा उधर कृष्ण महाकाल भीम करते इशारा ।

उनकी इच्छा से जायेगा जीवन, भीम गदा का मारा ।।

कविता के कुछ समप बाद अजीब घटना हुई । दुर्योधन को समाप्त कर शासक समाप्त हो गये, प्रभु के आगे अर्पित दो बूंद आँसू में स्नान पूर्णिमा पर मेरी कविता की पंक्ति थी -

लाख जलधि के जल में न भींगे जिसका कलेवर ।

भक्त के दो बूंद आँसू में हो जाता तरबतर ।।

१९६७ रथयात्रा की कमेंट्री हेतु रेडियो वालों ने आमंत्रित किया था । साथ थे विशिष्ट कथाकार सुरेंद्र महांति । फिर उन्होंने लिखा 'नीलशैल' उपन्यास ।

रेडियो वाले रुपये देते हैं । अपनी गाड़ी में मां, पिता, पत्नी और बच्चों को लेने की सोची । पहुँचना होगा दस बजे से पहले । भोर छः बजे से पहले निकलो । पुरानी ऑस्टीन गाड़ी की बैटरी कमजोर होती है । चलने पर चार्ज हो जाती है - ड्राइवर ने बताया । कटक से बाहर जाने से पहले गाड़ी खींचने में परेशानी । किसी तरह खींच -खांच पास गैरेज लेकर मेकनिक को दिखाया । जांच कर बोला - " बेटरी खत्म हो गई । देर हो गई और भी कुछ गड़बड़ी लगती है गाड़ी में । विकल्प व्यवस्था कर सबको घर भेजा गया । पिताजी से कहा - " रेडियो कमेंटरी न देने का अफसोस नहीं । पर प्रभु की पहंडी नहीं देख सकूंगा । " इतना कहा कि आँखें भर आयी । पिताजी की आँखें गीली थी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छोटा भाई मोटर साइकल पर ले रहा । रास्ते में बारिश । उसकी गाड़ी भी खराब हो गई । रेडियो का नाम ले दूसरे आरोही के पीछे बैठा । मन में कह रहा था - ''प्रतीक्षा करना, प्रभु । दया करें !'' आँखें बहती जा रही । चार बजे पहुँचे । तब अद्भुत घटना हुई -

उस समय खुले प्रभु के द्वार ! देखा कमेंटेटर मकान पर खड़े हैं । अभी तक प्रभु निकले नहीं । तत्व बखानते थक चुके हैं वे लोग । कहने को कुछ नहीं ।

प्रभु दिखे सिंहद्वार पर । सेवायतों के बीच विवाद के कारण प्रभु आगमन में विलंब हुआ था । प्रभु की ओर देखा । मन ही मन कहा - एक भक्त के आँसू में भींग गए, प्रभु ! लाख जलधि के जल में जो कलेवर गीला न हो, वह भक्त के दो आँसू में भीग कर तरबतर हो रहा है !!

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मनोकामना पूर्ण करें पुरुषोत्तम

दोल यात्रा के समय दोल वेदी पर दोल गोविन्द, चंदन यात्रा के समय नरेंद्र पुष्करिणी में नौका विहार के समय मधुसूदन और रथ यात्रा के समय रथारूढ़ वामन के दर्शन कर लो, पुनर्जन्म न होगा । भक्तों में भक्ति भाव जगाने के लिए पता नहीं कितनी बातें लिखी गई हैं ।

यह भी लिखा है - साल भर श्रीमंदिर में दर्शन का जो फल है, उससे ज्यादा गुंडिचा मंदिर में आडप मंडप में विराजते ठाकुरजी के एक बार दर्शन का फल है ।

उपेन्द्रभंज ने लिखा है -

हिलडुल चूड़ा पर पताका कह रही ।
नहीं, नहीं यहाँ यम का प्रभाव नहीं ।

आगे भंज कहते हैं -

वो पताका संकेत कर बुला रही ।
आओ, आओ, कितने पाप किये हैं ?
सारे दूर हो जायेंगे ।
पताका आंचल चंचल,
पुकारता पापीजन,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस नील नग नागर आओ,

निर्मल करे मन ॥''

भंज क्या झूठ लिख गए हैं ? सारी कविता अनुभूति से है । वे कहते हैं ''अनुभव से विदित''

श्रीमंदिर में अनेक उत्सव, अनेक यात्रा होती हैं । उनमें प्रभु की अपनी हैं । भंज कहते हैं -

''स्नान, गुंडिचा उत्सव स्वयं जिसकी

पतित पावन हेतु प्रासाद से निकलते !''

रामनवमी, जन्माष्टमी, वामन जन्म, नृसिंह जन्म आदि अवतारों की यात्रा में प्रभु की प्रतिनिधि रूपी मूर्ति निकलती है । स्नान यात्रा और गुंडिचा यात्रा में वे स्वयं पधरते हैं ।

भंज कहते हैं -''पतित पावन हेतु प्रासाद से निकलें यह यात्रा केवल पतित जनों की है ? उन्हें पावन करेंगे प्रभु ? अन्य लोग भी दर्शन का अवसर पाते हैं । मंदिर में रत्न सिंहासन पर अवसर है, जिसका अवसर नहीं, वर्ष भर जो वंचित रहते, जो जाति भेद और धर्माधर्म भेद के कारण वंचित हैं, विद्वेष सूचक 'पतित' नाम प्राप्त हैं, उनको पावन करने प्रभु की व्याकुलता, व्यथाहरण के लिए है । धर्म के मान से, जीवन के मूल्यों से उतर कर क्या पतित नहीं होते ? रथारुढ़ प्रभु को देख मन सोच रहा है ।

जीवन में कितना पतन ! उच्च आदर्श को छू कर भी कभी रख पाते हैं ? धर्म, आचरण, आदर्श के साथ कितनी आँख मिचौली नहीं खिली ? यह क्या पतन नहीं ? हम धार्मिक, नीतिमय या पतित हैं ?

देह बहुत मैल से भर गई । मन में अलंधु और चिंतन में जंग लगी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है । थोड़ा स्पर्श चाहिए । उनकी बाहु में बाहु रख आलिंगन हो जाता । विशाल नेत्रों से नेत्र मिल कुछ क्षण रह जाता, उनकी सेवा में शामिल होने के कुछ क्षण मिलते, यह पाप, ताप, मन, देह, कलंक सब छूट जाता, धुल जाता । हृदय, मन, देह जितना जो है, सब निर्मल हो जाता है । इन दोनों उत्सवों पर वे सेवकों को यह अवसर देते हैं । पहंडि के समय मौका पाते हैं ।

भक्त के लिए भक्तबंधु की यात्रा है । यहाँ भक्त को पास तक नहीं लाते । वे स्वयं भक्त तक आते हैं । यही है प्रभु का बड़प्पन ।

एक साहित्यकार ने लिखा - पड़ोसी प्रदेश पर आक्षेप कर - वर्ष भर पाप करो, एक बार आ कर पाप धो जाने की अजीब व्यवस्था है । जीवन को मनमर्जी चलाओ, फिर हाथ जोड़ पुकार दो -"प्रभु ! पतित पावन !" सब उद्धार हो गया । फिर लौट जाओ । फिर पाप की पुनरावृत्ति । साल भर बाद पुकार दो -"हे पतित पावन ।"

इतना भी हो । हर्ज क्या ? पतित पावन नाम क्या पड़ोसी प्रदेश के वैष्णवों ने दिया ? सहजिया चिंतन में प्रमत्त होकर, सस्ते देहज प्रेम का विस्तार कर, अपने जीवन में गोपी सुलभ परकीया प्रीति की बाढ़ बहा अंत में मुक्ति के लिए पुकार देते हैं -"रखना पतित पावन !" पंडित ने कहा ।"ना यह आवाज किसी गोष्ठी की नहीं । आर्त मानव की है । पाप, ताप, दग्ध आत्मा की विकल पुकार है । रखना हे पतित पावन ।" "भुज तले रखना हे महाबाहु ।" यही प्रभु का पतित पावनत्व है । रथ की ओर निगाह की ।

गीत बज रहा -

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"पतित जन के उद्धार में उड़ाते पताका ।
देखते हो विपद आक्रमण कर रही ।"

भक्त निवेदन कर रहा । पतित का अर्थ वास्तव में पापी नहीं । जिस पल हमारे अंदर वह रूप आया, उसका उद्धार करने कमर कस लेते प्रभु पतित पावन ।

सिंहद्वार गुमट पर प्रभु विराजे , गजपति द्वितीय रामचंद्र के समय में । भक्त में कुछ स्खलन आया । प्रेम बंधन में पड़ मुसलमान बने, कन्या का पाणिग्रहण किया । मंदिर प्रवेश निषिद्ध हुआ, गुट में पावछ के पास पतित पावन मूर्ति की स्थापना । इससे पहले प्रभु का यह नाम खूब प्रचलित था ।

सालवेग लिखते हैं - पतितपावनाष्टक, संस्कृत में । मिथिला जाने राम-लक्ष्मण निकले हैं । गंगा पार होना है । नाविक को बुलाया । नाव में बिठाना, नहीं बिठाया । अपने हाथों चरण धोना है । एक कण बालू रही तो फिर मुश्किल !

उसने सुना है राम के पांव से बालू पड़ पत्थर भी नायिका बनी । यदि नौका नायिका हो गई, तो बेड़ा डूब जायेगा । अत: वैदेहीश विलास में भंज कहते हैं -

"बिठाऊं नहीं नाव,
बिन धोये पांव ।"

भक्त खेल भक्तबांधव समझ गए । भक्त का पद पखारना चाहता है । प्रभु बहाना समझ गए । कवि सूर्य के शब्दों में वे 'छलवाहिनीश' हैं । किसी बहाने पग धोना है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रभु ने कदम आगे किये ।

"बढ़ाया पैर, भावग्राही रघुवीर ।"

भक्त की भाव भावग्राही समझते हैं । विज्ञानी अर्थात् ज्ञान रहित कैवर्त ने चरण धो दिये ।

विज्ञानी कैवर्त ने धोये । विश्व पतित नाम लिये ॥

पतित जन, दु:खी जन के भावना समझने में वे प्रसिद्ध हैं । श्रीजगन्नाथ की पतित पावनता याद कर कवि सम्राट उपेन्द्र भंज ने उन्हें 'पतित पावन' ही लिखा -

जगबंधु हे तु पतित पावन ।"

पतित, दुर्बल, अशरण, शरणजन रक्षा हेतु ही वे सुदर्शन करते हैं धारण ।

सुदर्शन प्रभु की क्षमता का निदर्शन नहीं । वे सर्व अस्त्र रूपी हैं । देवों के हर अस्त्र में सुदर्शन का तेज है । अरक्ष रक्षक प्रतीक सुदर्शन । अत: प्रतीक विग्रह रूप में प्रभु के पार्श्व में स्तंभ रूपी सुदर्शन की पूजा पंचरात्र दर्शन के अनुसार होती है । महालक्ष्मी है प्रभु की इच्छाक्ति और सुदर्शन हैं क्रिया शक्ति । युगों से सुदर्शन के जरिये भक्तों की रक्षा की है । कुंभीर अपने जबड़ों से गज के पांव काटने बैठा है । निराश्रय के आश्रय, गर्दन काट डाली । वे प्रभु रथारुढ़ हुए हैं -

दांपत्य प्रेम वर्णन में भंज लिखते हैं -

"राधाकृष्ण निपुण इस भाव में ।

जाने अनुभवी अनुभव में ।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जो दांपत्य प्रेम में कहा, वह प्रभु के लिए प्रयुज्य है । प्रभु संग प्रीत का बखान संभव नहीं । अनुभवी ही जाने अनुभव में ।

प्रभु के आगे जनसमुद्र लहरा रहा । दूर से नव युवती आयी है प्रभु के प्रथम दर्शन करने । लोभी दृष्टि से एक और कोई उसे देख रहा है । उधर इसका ध्यान नहीं । भीड़ में मौका देखकर दुष्ट ने छेड़ा है, उसकी परवाह नहीं । वह बाहु उठा कर प्रभु को प्राणों की बात कह रही है । दुष्ट जो खोज रहा है, वह पाये, उसी में उसके दिन जायें । मूर्ख पराभव पा कर सरक गया । द्रौपदी आर्त भंजन प्रभु ने दुष्ट को धकिया दिया । यात्रा में यह विपद जान कर ही तो कदम रखा । प्राणों से प्रिय को जी भर देखने के लिए ।

'लावण्यवती' में भंज कहते हैं -

लावण्यवती को पाने चंद्रभानु श्रीराम से निवेदन कर रहा है -

हे राम श्याम सुन्दर हैं दत्त कर,
सुग्रीव को तारा विभीषण को मंदोदरी
लावण्यवती युवती मनोहर मेरी
होगी, ऐसी कृपा मुझ पर करें ॥

पत्नी मांगने जैसी छोटी बात प्रभु को कैसे कहें ? पत्नी मांगना क्या छोटी बात है ? यह तो जीवन का सौदा है । यह असली जीवन है । इस स्तर पर बिगड़ गया तो जीवन ढह जायगा, अत: चंद्रभानु कहते हैं -

"प्रभु आप विरह देवता अनुभवी,
आप न सुनेंगे तो किसके आगे कहूँ भी ?"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामावतार में सीता विरह का दुःख समझा है । कृष्णावतार में दांपत्य की गहराई अनुभव की है ।

कहते हैं - शिव पूजा से योग्य पति मिलें, दुर्गा मां को मांगे वे दांपत्य सुख दें । इन प्रभु ने तो इस ओर दुर्गा - सुभद्रा और उस ओर शिव बलभद्र को थाम रखा है मांगते ही सब कुछ मिलेगा ।

चंडीपुराण में मां से मांगा है -

'भार्या मनोरमां देहि'' गुणवती सुन्दरी पत्नी मांगता है भक्त । इसमें लाज कैसी ? नौकरी दें, व्यवसाय ठीक कर दें, ग्रह दोष दूर करें, आरोग्य प्रदान करें । मांगते हैं । हाथ फैला भक्त मांग रहा है उनके भरोसे से । पछतावा नहीं, क्षोभ नहीं । अपने हैं वे, एकदम स्वजन, वहाँ उनसे लाज कैसी ?

दादी और मां कहती हैं - ''कुछ नहीं मांगू मुक्ति दें प्रभु ! मिलेगी - मिलेगी - मुस्का कर आश्वासन दे रहे हैं । जैसे भक्त वैसा व्यवहार । जैसी मांग, वैसा दान । धन्य हैं दाता !

दूर से परिवार में विवाहिता युवती आयी है । प्रभु के रथ मार्ग पर आश्रय । घर मिला नहीं । वहीं भीड़ में जल्दी पानी डाल नहा रही है । साड़ी बदल रही है । इसमें लाज कैसी ? डर कैसा ? इस में सोचने का समय कहाँ ? घंट, भेरी की आवाज आने लगी । सजने का और समय नहीं । अस्त-व्यस्त वेश, केश । मन उन्हीं कृष्ण वसन वितरण कृष्ण में । वाह अजीब है बड़दांड का यह दृश्य ! हाथ उठा कह रही है पति का मंगल हो । पुत्र का, सुख दो, शांति आये, दुःख कटे, सर्वोपरि आप में लगन रहे । इस जिद्दी मन को खींच कर चरणों में जगह दो । सारी कामना के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाद यह कामना करते ही 'ब्रह्मार्पण' हो जाता है । मर्कतमणि हो जाता है !!

हे प्रभु ! कैसी लीला लगा ली है !

ओठ जुड़ गए उधर !

बड़दांड की भीड़ में प्रभु के आगे वैष्णवों का उद्दण्ड कीर्तन चल रहा । कोई मांग नहीं, बस गुणगान ! कामना नहीं, वासना नहीं, केवल जयगान ! यह प्रथा प्रभु चैतन्य से चली आ रही है । श्रीजगन्नाथ के आगे बांह उठा नाच रहे । भावावेग में श्रीजगन्नाथ शब्द नहीं निकल रहा, केवल जग जग जग सुनाई दे रहा । भाषा गौण, भाव प्रमुख हैं । महाभाव वास्तव रूप ले रहा । प्रेमिक कवि गा रहे हैं -

जाने जितनी प्रीत युवती,
क्षिति में और कोई है ?

यह बात प्रभु के संबंध में कही जा सकती है । जागतिक तन्मयता और एकाग्रता लेकर प्रभु - तक पहुँच जाओ, प्रभु का प्रेम मिल जाता है ।

कवि कहते हैं -

कोई सम है प्रभुपन में नीलाद्रि विहारीके ।
जिनमें भरी है दीन जन दया, नख खिा तक भी ॥

रथ की सारी व्यवस्था हो चुकी है । रथ खींचा जायेगा । अश्व जोते जा चुके हैं । सारथी स्थान ले चुके । भक्त की कातर पुकार, आतुर निवेदन, गहन आत्म समर्पण ही रथ का अश्व बन तैयार है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रथ रज्जु पर हाथ रह गया, मानो कोटिनिधि पा गया । सर्व आकर्षयितुम् क्षण इति कृष्ण रुपे । वे सबको आकर्षण करते हैं, आज उन्हें खींचने का दुर्बार आग्रह भी हुआ, असंभव भी संभव हुआ ।

भंज रसिक नायक रसिका पत्नी के बारे में भंवर से कह रहा है -

"तू कहेगा भ्रमर,
मैं क्यों हूँ कातर,
जो वल्मी पाकर गंवाई,
कुछ गलुण सुन ।"

प्रभु के वेशुमार गुण बखानने को भाषा कहाँ ? केवल 'कुछ' कह सकेंगे ।

रथयात्रा पर इस साल प्रभु पर कुछ गुमान किया था । मेरे लिए अनुकूल परिवेश नहीं बनाया । कहीं से कोई बुलावा नहीं था ।

रथ खींचने का आदि पर्व निकट से नहीं दूरदर्शन पर देखूंगा ? सुनूंगा रेडियो पर ! अंतिम पर्याय में जाकर सहयोग होगा । रथ रज्जु पर हाथ रख कर आत्म संतोष करना होगा ।

बंधु के घर रेडियो कमेंटरी सुनकर निकला तब तक रथ बहुत आगे जा चुका था । सांझ हो आयी । शायद रथ खींचना बंद हो गया । खुद देखा नहीं । खुद खींच न सका ।

प्रभु क्षमा करना । कुछ अवसर दें । रथ रज्जु को स्पर्श कर सकूं । आशुतोष शिव तो थोड़े में संतुष्ट ! विष्णु सहज पिघलें नहीं । ये तो हरिहर उभय हैं । यहाँ क्षमा मिली । भीड़ धकिया कर आगे बढ़ा - बलभद्र के रथ स्पर्श का अवसर मिला । प्रभु श्रीजगन्नाथ का रथ खड़ा है । आज की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यात्रा का अंतिम पर्याय है ।

नंदिघोष अब न खिंचे । सांझ हो गई । रथ सरकने की कोई उम्मीद नहीं । श्रीजगन्नाथ के रथ की रज्जु लिये औरों के साथ खड़े हैं । शायद चले !

दोष क्षमा करें प्रभु ।

रथ रज्जु खींचने का मौका दें प्रभु !

जरा चक्का सरके ।

मन की वांछा पुरी करें ॥

अचानक तुरही बजी ... हरिबोल । नंदिघोष विहारी ने दास की अभिलाषा पूरी की । हाथ में रथ रज्जु । रथ थोड़ा आगे बढ़ा । मानो आकाश से बहते मेघ से झर रहा अलस, अवश, अमानी मेघ । चातक के लिए इतना बहुत । रथ थम गया । कहा -''बस प्रभु ! बहुत है ! जो मांगा मुझे मिल गया ।

जो मांगा सो पाइया । मन की वांछा पूरी की हे पुरुषोत्तम !!

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मान रखें महाबाहु

''ना, तु बकालात न करना । वकील बने तो तेरे बच्चे नरक जायेंगे ।

मां के मन में अजीब खयाल आया है । वकील बनने पर आदमी नरक में क्यों जाये ? मां का अपना तर्क है । वकील गीता छू कर झूठ को सच कहेंगे । काले को सफेद बनायेंगे ।

मैंने समझाया - ''वकील को गीता छूनी नहीं पड़ती । पर वह समझने को राजी नहीं ।'' सच को झूठ बनाने में वकील धुरंधर हैं । अत: वे और उनके बच्चे नरक जायेंगे - उसका तर्क गलत न लगा ।

मैं बहुत आगे तक बढ़ चुका था । अब वकील बनने हेतु जनरल पढ़ाई की उपेक्षा कर दी थी । इकनामिक्स एम ए में नाम लिखाया, पर जोर नहीं दिया ।

घर से लॉ कालेज में पढ़ना, फिर ग्यारह बजे इकनामिक्स एम ए की पढ़ाई करना । कुछ कठिन लग रहा था, देर होने पर भी प्रो. सदाशिव मिश्र मेरी प्रतीक्षा करते । उनका पढ़ाना लगता जैसे रसगुल्ला खा रहा हूँ । बाद में वे ही शिक्षा विभाग के डायरेक्टर बने । मुझे जयपुर में अध्यापक पद से लाकर शिक्षा निदेशालय में जगह उन्होंने दी ।

एक दूसरे अध्यापक की क्लास में वैसी सरसता न होती, मैं कुछ अनमना हो जाता ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

-"सर, वो पढ़ाई के बजाय बाहर देखता है !" मेरे खिलाफ अध्यापक को शिकायत हो जाती ।

यह नकली अभियोग होता । वकील मंत्री होंगे । वे क्यों पढ़ाई करेंगे । जो नौकरी करेंगे, वे मन लगाकर पढ़ेंगे । सुनेंगे ।"

छाती फूल उठती । वकील बनूंगा । स्वाधीन व्यवसाय ! पर मां यह क्या कहती है ?

खैर जो हो, वकालात करुंगा । फैसला किया । मुझे एम. ए. नहीं देनी । पढ़ाई ज्यादा हुई नहीं । मित्रों ने समझाया । वकालात में एम ए नहीं चाहिए ।

एम ए न देने पर दृढ़ था । पर मां अपने सिद्धांत पर थी । लॉ डिग्री लूं, यह चाहती थी, पर वकील बनूं यह नहीं । पर एम ए दे कर उसके बाद लॉ की डिग्री लेना अच्छा लगेगा । लोग कहेंगे - यह एम ए, बी एल है !

मुझे एमए देनी होगी । पढ़ाई ज्यादा नहीं की । अत: थर्ड डिवीजन हो गई तो ? मन में डर आ गया । मां न समझाया -"बेटे ! पढ़ाई कर परीक्षा दे । एम ए करने पर कितना भी मिले !"

मां मेरे लिए श्रीजगन्नाथ की तरह जीवंत कल्याणमयी थी । बात मानी । आज जो हूँ, उसी के आशीर्वाद से हूँ ।

एम.ए. परीक्षा में थोड़े दिन थे । मैं साहित्य सभा में मशगूल था ।

प्रोफेसर उस सभा में आये थे । घनिष्ठ मित्र घनश्याम से कह गए - "देखो, परीक्षा से पहले तेरा दोस्त साहित्य में डूबा है !" घनश्याम ने कह दिया - प्रोफेसर की धारणा खराब हो गई । अब थोड़ी पढ़ाई कर !"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उपदेश दिया ।

अब रहे दो महीने । प्रोफेसर के अनुगत एक और अध्यापक ने स्पष्ट कहा -थर्ड डिवीजन पर अंक थर्ड ही मिले । कुल मिला सेकेंड डिवीजन रही । अत: लेक्चरर बनने की उम्मीद थी । सरकारी कालेज में अध्यापक की आश छोड़ दी ।

मैंने वो आशा की भी न थी । मां को संतुष्ट करने परीक्षा दी थी । यिद्वेषी अध्यापक का अहंकार प्रभु ने तोड़ा । उनके दंभ की बात और बराबर थर्ड डिवीजन की भविष्यवाणी श्रीजगन्नाथ ने तोड़ी । मैं तो लॉयर बनूंगा । मां को सजा देंगे । चिंता क्या ?

एक साथ फर्ट और सेकेंड दोनों पार्ट दिये । पहले में फेल, दूसरे में पास ! ऐसा अद्‌भुत काम कभी न हुआ ।

लॉ के परिणाम से समझ लिया कि प्रभु नहीं चाहते कि मैं वकील बनूं । मां की बात को श्रीजगन्नाथ का समर्थन है । मैंने सिर नवा लिया ।

वकील न सही, नौकरी नहीं करनी । गुलामी नहीं कर सकूंगा ।

प्रेस बिठाऊंगा । पत्रिका निकालूंगा । राजनीति कर चुनाव लड़ूंगा । पत्रिका का नाम दिया -''निर्भीक' मेजिस्ट्रेट के आगे शपथ कर डिक्लेरेशन पर दस्तखत किये ।

पर 'निर्भीक' नहीं छपा । ब्लाक बन कर रह गया । गुंथे अक्षर खोले गए । उधार मशीन लौटानी पड़ी । पैसे चुकाने हेतु भद्रख में गैर सरकारी कालेज में अध्यापक बना ।

जिस अध्यापकी में आग्रह न था, अब उस के लिए ममता बढ़ाई । उन दिनों प्राइवेट कालेजों की खास इज्जत न थी । सरकारी नौकरी कैसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिले ? शुरू से उपेक्षा करता आया ।

प्रशासनिक नौकरी के लिए कंपीटीशन परीक्षा दी । सफल हुआ । पर उस नौकरी में कीच घांटना, बाढ़ के समय गुड़–चिवड़ा बांटने का मन न था । पर एमए में फर्ट डिवीजन वाले इस बार ज्यादा लेक्चरर बनने जा रहे थे ।

इंटरव्यू में एक्सपर्ट खूब संतुष्ट हुए । सेकेंड क्लास होकर भी मैं चुन लिया गया ।

लिस्ट में मेरी जगह तीसरी, पर नौकरी दो थी !

कुछ दिन बाद साल पूरा हो जायेगा । कमीशन की भेजी लिस्ट बेकार हो जाएगी । सरकारी कालेज में अब उम्मीद नहीं रही ।

देर तक पत्रकार बंधु मेरे नौकरी पूर्व के अनुभव सुनते रहे। अचानक, पूछा -

"सरकारी नौकरी मिली कैसे ?"

-"वही मजे की बात है । प्रभु की कृपा । इसीमें अलौकिकता है । यहीं असंभव को संभव करने की बात आती है । इसीमें लीला कर चमत्कृत कर देते हैं ।

भक्त के लिए कुछ भी कर सकते हैं । क्षीर चुरा कर 'चोर' बने हैं । राजाधिराज से बली हो कर भी भक्त हेतु दूत बने । कंधे पर रख भोजन पहुँचाया ।

"तो श्रीजगन्नाथ की कृपा कैसे मिली ?"

"मैं आशा छोड़ बैठा था । तीन में दो नियुक्ति पा गए । मैं नहीं पा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सका । सरकारी स्तर पर एक भूल हो गई । नियम था नौकरी ज्वायन के बाद गेजेट में नाम उपता । उस साल कमीशन ने जितने नाम रिकमेंड किये, सब गेजेट में छप गए । अब मुझे जोर मिल गया । उसकी दुहाई देकर डाइरेक्टर को पत्र लिखा निवेदन के रूप में ।

नौकरी क्रियेट न होने पर भी गजेट में छपने पर निदेशक को भी मौका मिल गया गंभीर चिंता करने लगे ।

तभी नियुक्त अध्यापक प्रशासन में या जाने के कारण रिलीव होना चाहता था । मुझे जयपुर(कोरापुट) भेज दिया ।

जब कोई सूत्र न मिले, सब ओर शून्य दिखे । तब प्रभु आशीष झरती है । जीवन हर स्तर पर वे निगाह रखते हैं, यहाँ भी थे ।

जो निर्भर करे, प्रभु श्रीजगन्नाथ धक्का नहीं देते । असमर्थ को सामर्थ्य, सहयोग , सहानुभूति देते, तभी दीनबांधव कहलाते हैं ।

श्रीजगन्नाथ की महिमा के लिए पत्रकार मित्र को मसाला मिला या नहीं, मैं नहीं जानता । आँखें मुंद गई । ''मेरी बात सुनी?'' मैंने पूछा ?

-''सब सुनी ! मन में श्रीजगन्नाथ की जै जैकार । लॉ में फेल करा कर प्रभु ने लेक्चार का पद दिला दिया । पत्रकार ने कहा -'' ठीक कहा । लॉ में फेल रहे । पर वहाँ पढ़ते समय ओड़िशा में भाषण में प्रथम रह चांसलर अवार्ड पाया, तक श्रीजगन्नाथ साथ थे !''

''श्रीजगन्नाथ साथ थे ? कैसे ?''

-''कांची युद्ध में पुरुषोत्तम देव के साथ गए । वैसे डिबेट में वे साथ थे ।''

फिर कहा -'' ओड़िया डिबेट में मुझे पार करने वाला कोई न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

था । तब तक वक्त की ख्याति पा चुका था ।''

कुछ अद्यापकों में बोड़ासंबर सेनापति डिबेट में पुरस्कृत होता तो कैलेंडर में सदा के लिए नाम रहता । मैं हार गया ।

छठे वर्ष के छात्र रूप में डिबेट जीत न सका । सुन मन में दुःख हुआ -''इतना बड़ा वक्ता डिबेट में हार गया ?''

उस साल लॉ कालेज की तरफ से जाने से पहले गोपालजी मठ में श्रीजगन्नाथ के सामने कहा -

प्रभु ! पिछली बार हार कर अपमान पाया । कांचि युद्ध में गए थे । अब की मेरे साथ चलें । मान रखो !''

'' प्रभु ने मान रखा । मैं फर्स्ट हुआ । साथ प्रभु न जाते तो यह संभव कैसे होता ?''

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वे गिरने नहीं देते

वे गिरने नहीं देते । गिरने से पहले थाम लेते हैं । प्रहलाद क्या पर्वत से नीचे गिरा - मित्र ने कहा ।

अगर नीचे नहीं गिरने देते, इस बार रथ से पड़ कर चेट क्यों खा बैठे ?

प्रश्न कड़ी भाषा में किया था मित्र ने । २००६ की बात है । बाहुड़ा रथ यात्रा के समय रथ पर चढ़ कर दर्शन किये । उतरते समय औंधे मुँह गिर कर घायल हो गया । झाड़-पोंछ मित्र के घर, जहाँ डेरा लिया था, चला गया । उन्होंने देखा - मेरी दाहिनी आँख के पास पिठऊ(बड़े) की तरह फूल गया है । तुरत बरफ रखी । आकार कम हो गया । दाहिने पांव में तीन जगह चोट आयी थी ।

"कुछ भी हो ! भक्तिभाव में डूबा भक्त रथ पर चढ़ा था । उन्होंने फेंक कैसे दिया ?" मित्र का प्रश्न था । मैंने कहा -" फेंका नहीं । दर्शन हुए । प्रभु के विपुल के साथ जोर से आलिंगन भी हुए । प्रभु के अधर छू कर जरा -सा लाड़ करदिया । इसके बाद गिरा । जैसे गिरा, सिर मैं तीन - चार टांके आना बड़ी बात न थी । दाहिना पांव टूट जाता तो ताज्जुब नहीं होता ।

मित्र ने कुछ और न कहा । मैं कहता गया -"लौटते समय प्रभु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेडिकल चौराहे पर रुके थे । पास में एक मित्र के यहाँ टिका था । अत: आकर दर्शन किये । सुबह फिर भेंट को मन किया । रथ पर चढ़ने की कोई योजना न थी । एक गली में से जा कर श्रीजगन्नाथ तक पहुँच जाऊंगा । आया तो देखा - गली के छोर पर सुभद्रा का रथ है । प्रभु कह रहे हैं -'सुभद्रा कौन ? मैं ही तो वही सुभद्रा ?

खैर, आपकी बात रहे । अब की मां सुभद्रा के आगे रुका । मां के दर्शन हो जायें । दीप भी दिया जाये । दीप दिया । अरे, यह क्या ? औरतें रथ पर चढ़ रही हैं ! मैं बुद्धू सा नीचे ही खड़ा हूँ ! रथ पर चढ़ें । मन हो गया । ऊपर चढ़ने की सारी सुविधा वाली जगह पर रोके खड़े हैं दंतावल हाथी की तरह दइतापति गण ! वड़ा नोट डालो तो चढ़ सकोगे । वरना नहीं ।'' कह रहे हैं । अब चढ़ना नहीं होगा ।

अरे ! एक औरत मेरे आगे चढ़ी जा रही है । मैं नहीं चढ़ सकूंगा ? पोता कहता है - आपकी उमर हो गई ! ऐसा दुस्साहस न करें ! अरे बुद्धू, उमर मुझे रोक न सके । औरत ने पार्श्व देवताओं के खन में एक जगह पांव डाला । ऊपर उठने लगी, एक ने पूछा -''अरी ! देवों पर पांव रखा, अभी मजा चखेगी ?''

मैं -''जा..जा ! मैं देवों के देव के पास जा रहा हूँ । लौटते समय कुछ रुका । देवता की देह पर पांव रख उतरुं ? दूसरा उपाय नहीं । कुछ भी हो, वे देव हैं । तभी पांव फिसला । बेंत मार प्रभु शिक्षा देते हैं ।'' भक्ति का अहं ठीक नहीं । नव कलेवर होने के दिन से पूजे जाते हैं । प्रति वर्ष रथ पर रहते हैं । तूने सुभद्रा में मुझे देखा और रथ पर चढ़ा । फिर मेरे रथ पर क्यों चढ़ा ? मैं क्या एक और अद्वितीय नहीं ?' प्रभु ने कहा । मैंने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहा -" आपने ठीक कहा । आगे चार दीप नहीं एक दीप दूंगा ।"

मित्र ने कहा -"नीचे डाला, तभी तो यह शिक्षा मिली । वास्तव में नीचे नहीं गिराया । शिक्षा दी है । जब कर्म और सामाजिक जीवन में मन करता है, कोई धकेल देता है । तब बहुत ऊंचे उठाकर सब को अचंभे में भर देते हैं ।

नौकरी के दिनों में पाताल में गिरने का डर होता । वे पर्वत पर ले गए । छः साल अध्यापन के बाद ट्रांस्फर हुआ । प्रशासनिक दायित्व के साथ निर्देशालय में चार साल बाद पोलिटिकल साइंस के रीडर पद हेतु नाम भेजना था । प्रशासन में रह कर भी अन्य अध्यापकों की तरह रिसर्च थीसिस लिखी थी ।

फिर भी उपनिर्देशको ने मेरा नाम सिफारिश करने से सरकार ने मना कर दिया । वे थे मेरे अध्यापक और जयपुर (कोरापुट) कालेज के प्रिंसिपल । नियम की दुहाई दे कर रीडर हेतु मेरा नाम भेजने में असामर्थ्य जताई । छः साल अध्यापन का अनुभव । आठ वर्ष जरूरी था, एक ने समझाया सहायक निदेशक, जिला शिक्षा परिदर्शक, और प्रधान शिक्षकों को बरिष्ठता के आधार पर स्कूल इंस्पेक्टर (सीआई) करने की व्यवस्था है । सरकार से कहें - आपको स्कूल इंस्पेक्टर बना दें । मैंने यह बात सेकेंडरी एजूकेशन और एडिशनल डायरेक्टर से कही । उनके अधीन में एनसीसी का एसिस्टेंट डायरेक्टर था । वे बोले - "तुम कालेज से आये हो, स्कूल के लिए कैसे सिफारिश करुं ? अगर प्रशासनिक अनुभव के आधार पर भेजूं, तो केवल चार वर्ष के अनुभव के आधार पर होगा ।"

मैं समझ गया । द्वितीय श्रेणी में सीनियरिटी के बावजूद कई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हेडमास्टरों के अधीन रहूँगा । रीडर बन न सकूं । स्कूल इंस्पेक्टर बनना कठिन । सरकार को दरखास्त का कोई फल नहीं । एक मंत्री अच्छी तरह जानते हैं । उन्होंने भी कुछ नहीं किया । वे थे पवित्र बाबू । प्रभु से कहा - ''दोनों ओर से गया ! आपने जयपुर जल से उद्धार किया, कटक के किनारे लगा दिया । अब फिर बाढ़ में बह रहा । कूल-किनारा नहीं पा रहा ।''

प्रभु श्रीजगन्नाथ ने असहास के लिए नौका की व्यवस्था कर ही दी । पवित्र बाबू ने शिक्षा छोड़ दी । शिक्षामंत्री बने अत्यंत विचक्षण और प्रत्युत्पन्नमति वनमाली पटनायक । उनसे पूर्व परिचय था । उनके कारण शिक्षा विभाग के पच्चीस प्रतिशत अध्यापक प्रोमोशन पा सके । फाइल लेकर मुख्यमंत्री आरएन सिंहदेव को सारी बातें समझा शिक्षा विभाग के अध्यापकों के लिए सदा के लिए पदोन्नति के द्वार खुले । पहले जिस विषय में आनर्स होता, वहीं प्रथम श्रेणी के अध्यापक नियुक्त होते, साइंस में आनर्स खोलना महंगा होता, अत: उतने नहीं खोल पाते । साइंस शिक्षक प्रथम श्रेणी प्रोमोसन नहीं पा सकते थे । इनको न्याय देना वनमाली बाबू के लिए ही संभव था ।

उन्होंने स्कूल-कालेज के दो कैडर बनाये । दो डायरेक्टर रखे । उन्हें अनुरोध करते ही कहा -सरकार आपको वर्ष पहले डायरेक्टरेट में लायी है । अत: प्रशासनिक अनुभव को शिक्षागत योग्यता मानना सरकार का काम है । प्रभु श्रीजगन्नाथ ने समय पर सहायक बन कर न्याय दिलाया । इतना ही नहीं, जो शुरू हुआ विपत्ति के रूप में, वह संपत्ति बना । शास्त्र में है -''यत्र स्मरेतु मधुसूदनम् । विपत्ति तस्य संपत्तौ ।''

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिक्षा निदेशालय ने मेरे समूचे द्वितीय श्रेणी के अनुभव को हिसाब में न कर, प्रशासनिक अनुभव के आधार पर द्वितीय श्रेणी में मुझ से जूनियर हेडमास्टरों और डीआई के नीचे मेरा नाम रख लिस्ट सरकार को भेजी थी । शिक्षा विभाग ने वरिष्ठता लिस्ट को राजनैतिक एवं प्रशासनिक विभाग का मत लेने भेजा । उनका मत था - सारे द्वितीय श्रेणी अनुभव को विचार कर लिस्ट बनाओ । फलत: अब मैं लिस्ट में काफी ऊपर आ गया ।

श्रीजगन्नाथ को विपत्ति हेतु कहा था । उन्होंने सुनी । पब्लिक सर्विस कमीशन को रीडर एवं इंस्पेक्टर हेतु मेरा नाम भेजा गया । दो तरह की नौकरी हेतु मेरा चयन हुआ । सरकार ने मुझे प्रशासन में रखा । मैं अध्यापन में लौटना चाहता था । वनमाली पटनायक ने कहा - ''बेवकूफ रीडर बन कर क्या होगा ? यहाँ पर रहे तो शिक्षा के डायरेक्टर बन सकोगे । प्रभु की इच्छा । वनमाली जैसे हृदयवान के जरिये व्यक्त हुई । प्रशासन में रहा, अंत में मैं निदेशक बना । अगर मेरा नाम रीडर हेतु रिकमेंड होता, शिक्षा विभाग के सर्वोच्च अधिकारी के पद पर कभी नहीं पहुँच पाता ।

नाम रिकमेंड न कर मेरे लिए खतरा पैदा किया था । विपद भंजन श्रीजगन्नाथ ने मुझे निदेशक बना कर रक्षा की ।

यह भाव एक भजन में आया है । संगीतकार मित्र अर्जुन सामल के स्वर में रेडियो -दूरदर्शन पर खूब लोकप्रिय हुआ । पहला पद है -

''हे जगन्नाथ जी आप अगति के गति,
आपकी कृपा से होती विपत्ति भी संपत्ति ।''

अंतिम पद है -

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भक्त रंक की शंका हरण मेरे जीवन ।

जब पुकारना आ जाते हो सन्निधान ॥

अनुगत भक्त के प्रति करुणानिधान श्रीजगन्नाथ की अपार कृपा की बात गीत में आयी है - मित्र ने कहा । उस अहेतुकी कृपा सागर परम दयालु श्रीजगन्नाथ के विशाल नयन और सुर्ख अधर मेरी आँखों के आगे उभर आये थे ॥

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जनम जनम का भाव उनके साथ

''जणाण जणाउछि जगन्नाथंकु '' मेरा श्रीजगन्नाथ पर तीसरा भजन संगह है । पहला था बाइस पावछ, फिर भक्त भजे भगवान' दोनों प्रकाशित हो कर प्रचारित हुई ।

श्रीजगन्नाथ तत्व और साहित्य के साथ संपर्क होने के कारण पंचसखा साहित्य और विशेष कर महापुरुष अच्युतानन्द की कृतियों से परिचय था ।

एक बार अवसर आया । पांच सौ वर्ष पुरानी रचना सुनने का । मन के कई प्रश्नों के उत्तर पोथी में मिल जाते हैं ।

अद्भुत है यह घटना । ये पोथी पढ़ने वाले सामने वाले को सुहाती बातें जोड़ कर जादू पैदा कर देते हैं । हर क्षेत्र में सब पकड़ में नहीं आते, मगर बातें खुल जाती हैं । अतिमानवीय सत्ता को मानवीय माध्यम से संपर्क करने से मानवीय गुणावगुण का प्रभाव पड़ता है । फिर भी सूक्ष्म चेतना और अपूर्व वाणी आश्चर्यजनक ढंग से आती है । चार - पांच जगह ऐसी पोथी पढ़ने की व्यवस्था में सूक्ष्म सत्ता की कुछ स्थिति और ठीक पाठ मैंने लक्ष्य किया है । नीमापड़ा - काकटपुर सड़क पर नीलकंठपुर गांव में ।

मेरे प्रश्नों में एक प्रश्न में से पोथी में एक निकला -''श्रीजगन्नाथ पर अनेक चौपदी लिखी हैं । वे न छपने का आपको दु:ख है । श्रीजगन्नाथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर कोई ग्रंथ लिख रहा है । वे प्रकाशित न होने से मन में अशांति है ।'' आचार्य पोथी पढ़ते चले । ताड़ पत्र पर लिखे जा रहे हैं मन के प्रश्नों के उत्तर ।

''पहले चौपदियां छपवा दे । श्रीजगन्नाथ संबंधी अन्य रचनाएँ बाद में आयेंगी ।''

दो भजन संग्रह प्रकाशित हो चुके । अनुभूतियों को लेकर भजन लिखे समय-समय पर । साथ में जोड़ कर छपाया ।''जणाण बाइस पावछ' । बाईस भजनों का संगह । प्रभु श्रीजगन्नाथ की कृपा का प्रत्यक्ष स्पर्श है इन भजनों में ।

''हे श्रीहरि, कैसा कसूर, कर दिया है ऐसी स्थिति ॥
सरित तीरे निवास, मिटी न मन की प्यास ॥
न पी पाया घूंट भर कृपावारि ॥

एक साथ बारह पेपर लॉ की परीक्षा में दिये । पहले पार्ट में फेल, दूसरे में पास । उत्कल विश्वविद्यालय में ऐसा कभी नहीं हुआ । केवल तीन नंबर के लिए कोशिश करता तो होता । चेष्टा नहीं हुई । जिनके हाथ में कापी थी । वे मेरे प्रिय शिक्षक, आगे चल कर जज बने । क्यों नहीं कहा, इस पर बाद में उन्हें पछतावा था । हताशा व्यक्त कर श्रीजगन्नाथ से कहा -

सागर तरंग घन में सक्षम,
हुआ था लेकर हरि तेरा नाम ।
तुच्छ सरसी के छिछले जल में,
न सका प्रभु तैर में ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एम.ए. पास किया । थोड़ी पढ़ाई, खूब सफलता । यह है सागर संतरण ! लॉ परीक्षा में फेल - सरसी के छिछले पानी में तैर न पाया ।

उनकी इच्छा न थी कि मैं वकील बनूं । उनकी इच्छा प्रवाह में बहते - बहते कई किनारे पहुँचा, अब तट पा कर धन्य हूँ । वह भाव खिला भजनों में । पोथी के आगे बैठा हूँ, अंतर के प्रश्न उत्तर आते ही मन चिंता तरंग उद्वेलित हो और ऊंची हो रही हैं । पोथी पढ़ रहे हैं -

"तुम संसार से जाकर श्रीजगन्नाथ के पास स्थान पाओगे । उन्होंने तेरे लिए स्थान रखा है ।"

ऐसी बात महापुरुष ने क्यों कही ? श्रीजगन्नाथ को मृत्यु की बात तो कही नहीं । अवचेतन में कहीं खटका लगा । बाद में वाणी आयी -

वह घड़ी आयेगी, तब प्रभु स्थान देंगे ।"

जय प्रभु अंतर्यामी ! याद आया पहला भजन संग्रह । लिखा था -

"जीऊं जब तक पीऊं, करुणा शरबत हे भगवान ।
देना दया ले कर मायाधर, पास अपने देना स्थान ।।"

भक्त और मुक्ति दोनों मांगे । जीवन में सुख मिले, बाद में पास से दूर कर दें, अतः पहले क्या लिया -

"करुणा शरबत दें भगवान' प्रभु के कानों में पुकार गई, उत्तर मिला ।

श्रीजगन्नाथ को रथयात्रा के दिन तीसरा भजन संग्रह देना था, अर्पण किया बाहुड़ा यात्रा के अवसर पर रथ पर । 'संध्या दर्शन' वाले दिन किताब निकल न सकी । लोक संपर्क विभाग के शरधा बाली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भाषण के दौरान किताब का पहला भजन सुना दिया श्रीजगन्नाथ को । लोगों को अच्छा लगा । किताब की मांग हुई । पहले समर्पण हुई न थी । बस श्रीजगन्नाथ ने सुन ली ।

श्रीजगन्नाथ को देने के बाद पोथी के आगे समर्पण किया । 'पोथी' में निकला था - चौपदी संग्रह छपने पर बाकी स्वत: - छपेंगी । सारे विघ्न काट श्रीजगन्नाथ की रक्षा करने द्वितीय रामचंद्र देव उर्फ हाफिज कादर का संग्राम और अंत में पूजा न करने की व्यथा में स्त्री के साथ उनकी चिर विदाई की कहानी को लेकर रचित नाटक 'बाइस पावछ' छप गया - यही है विभु कृपा ।

भजन की किताब महापुरुष को समर्पण के समय मन में आया "महापुरुष को भजन सुनाया जाय ।" पोथी में लिखा था -"मैंने सब पढ़ा है । जाते समय ग्यारह संख्या गीत बोलना ।" वह गीत है -

आश्रित पर ध्यान रखें सदा ।

भक्त प्रिय माध्यम दया सागर ॥"

'पोथी' पढ़ पुस्तकाचार्य महापुरुष के जरिये श्रीजगन्नाथ की वार्ता सुना रहे हैं -

"तू बड़दांड पर भी गा रहा था । मैं और श्रीजगन्नाथ दोनों ने उसे सुना । हमने तेरा भाषण भी सुना । "

श्रीजगन्नाथ ने कहा -"अरे अच्युत, उसे कह देना, भाषण मुझे अच्छा लगा । नारद यंत्र पर मेरी बात कह रहा था । मैं उसे बहुत चाहता हूँ - कह देना ।"

नारद यंत्र का अर्थ नहीं समझा । पुस्तकाचार्य ने बताया रेडियो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माइक पर भाषण को वे नारद यंत्र कहते हैं । यह उनकी अपनी परिभाषा है ।

पोथी के जरिये महापुरुष अच्युतानन्द के मुँह से सुना - मेरे प्रभु श्रीजगन्नाथ. के मेरे प्रति भाव ।

पहले मेरे गुरु के जरिये बता दिये थे, आज बताया महापुरुष अच्युतानन्द के जरिये । उनकी कृपा से श्रीजगन्नाथ गवेषणा संस्थान की तरफ से नीलचक्र सम्मान देने की बात बता दी । इस उपलक्ष्य में अनेक लोगों की श्रीजगन्नाथ संबंधी अनुभूतियों पर पुस्तक छपेगी अनुरोध पाकर अनुभूति वाला लेख लिखा ।

मेरे भजनों - गीतों की पृष्ठभूमि लिख गया । २०००ई. में मिला नीलचक्र सम्मान । बाद में अमेरिका गया धर्म सभाओं में भाषण देने । अमेरिका के निमंत्रण की पृष्ठभूमि और उसमें श्रीजगन्नाथ की भूमिका की बात उस निबंध में लिखी थी ।

१९९५ में घर पर अमेरिका से फोन की बात श्रीमती ने बताई । तब भुवनेश्वर में न था । फोन किया था नेसविले के प्रसिद्ध डा. भागवत साहु ने । श्रीमती से पूछा - रथयात्रा के दौरान मैं भाषण देने अमेरिका जा सकूंगा ? कोई दूसरा प्रोग्राम है ? श्रीमती ने कहा - टीवी के साथ एग्रीमेंट हुआ है । अमेरिका का नाम सुनते ही एग्रीमेंट रद्द कर निकल पड़ेंगे । अमेरिका के प्रति मेरी कमजोरी जानती थी । अत: अगले फोन की प्रतीक्षा रही। फोन नहीं आया । उनके निर्देश के अनुसार छोटे भाई अयोध्या साहु ने फोन पर कहा पासपोर्ट बना लें । जो संस्था बुला रही है, उससे औपचारिक पत्र जरूरी है । अगले दिन पत्र लिख कर दिया । कहा - इसे विलंब से बचने हेतु निमंत्रण के रूप में दिखा देना ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

औपचारिक पत्र बिना कार्यवाही में क्लर्क आनाकानी करने लगा । ऊपर वाले अधिकारी से पूछने पर कहा - आवेदक प्रसिद्ध व्यक्ति है, प्रारंभिक कार्यवाही कर पुलिस जांच के बाद पासपोर्ट दे सकेंगे । पुलिस रिपोर्ट तुरत आ गई । वीसा के लिए अमेरिका से पत्र निहायत जरूरी । वह नहीं आया । भागवत बाबू ने संपर्क ही नहीं किया । अयोध्याजी से बात की तो बोले - सरकारी खर्च पर कान्हु लेंका आ रहे हैं । संघ के कुछ पैसे बच जायेंगे । अगली बार आप को बुला कर भाषण करायेंगे ।

आश्वासन के बावजूद पीड़ित और अपमानित -सा लगा । १९९० में युनेस्को ट्रुप में सरकारी खर्च पर वियतनाम, फिलिपींस, थाइलैंड गया था । इसके बाद भी विदेश यात्रा खास कर यू एस में भाषण के लिए, उनके शब्दों में मेरी 'व्याकुलता' को श्रीमती पसंद नहीं कर सकी ।

कहा-" गुरुवादी हो, श्रीजगन्नाथ को छोड़ दिया । अत: उन्होंने तुम्हें छोड़ा ।" सच ! प्रभु ने छोड़ा ? भजन में उन्हें सुना दिया । तीसरे संकलन में लिखा -

भावग्राही, ठग दिया भक्त को किसलिए ?
इस खेल के लिए, प्रभु मिला नहीं और कोई ?
दे कर आस- भरोसा पीछे हो रहे ।
हुई जग हँसाई बैठ कर हम सोच रहे ॥
मेरी दृष्टि सीमित, आगे न देख सकूं ।
आपके व्यवहार को कैसे परख सकूं ?

ऐसे दस-बारह पदों में मेरा मान खिला । सच, सीमित दृष्टि आगे न देख सकूं । श्रीजगन्नाथ पर मान किया । मान असर करता है, वो काम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुरू कर देता है । पांच साल बाद दो हजार ई. में अमेरिका गया । अटलांटिक से पेसिफिक तक उनकी कृपा से गाथा गा कर लौटा ।

१९९५ में संदेश देकर फिर कोई अनुकूल भाव न दिखाया । मैं क्षुब्ध था । २००० में नेसविल की 'अमेरिकन सोसाइटी आफ ओड़िया' के वार्षिक उत्सव में मुख्य वक्ता के रूप में बुलाने का तय किया ।

तब नेसविल शहर में रथयात्रा होने लगी । श्रीजगन्नाथ सोसायटी अर्थ की दिक्कत के कारण मुझे बुला नहीं रहे थे । दोनों संस्था मिल कर बुला रही थी । रथयात्रा के दिन और वार्षिकोत्सव पर मेरा भाषण था ।

अर्थ की कमी न रही । नेसविल शहर में अमेरिकन सोसाइटी का वार्षिकोत्सव रखा गया, रथयात्रा पर जाना सहज हो गया श्रीजगन्नाथ सोसाइटी मित्र निमंत्रण में देरी के अवसाद से मुक्त हो दूने उत्साह से दो महीने जगह - जगह पर भाषण का कार्यक्रम बनाया ।

सीमित दृष्टि से न देख कर मैंने श्रीजगन्नाथ पर मान किया । उससे अमेरिका भेजा । प्लेन में जाते समय कई ओड़िया बंधु मिले । वे सस्त्रीक बेटे -बेटी के पास जा रहे थे । उन्होंने पूछा -''किसने बुलाया ? बेटे या बेटी ने ?''

मैंने कहा -''पुरी सागर तट पर कोई है । वह प्रशांत - अतलांतक तीर गया है । वहाँ रह मुझे बुलाया है । मैंने उसके लिए लिखा -

जन्म जन्मान्तर
भाव उनके संग मेरा !''

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

असंभव को संभव करते

मैंने श्रीजगन्नाथ को कहीं लिखा है -

आश्रितों पर रखें सदा नजर ।
भक्त प्रिय माध्यम हैं दयासागर ॥

वे आश्रित का सदा ध्यान रखते हैं । कभी -कभी आश्रित जन सोचने लग जाता है कि प्रभु ने उसे टरका दिया । बाहर लगेगा कि प्रभु ने ठग दिया, पर किसी को कृपा वंचित नहीं करते ।

हिरण्यकशिपु गण सोचते हैं कि प्रहलाद को पर्वत से लुढ़का दिया - चूर - चूर कर दिया । वैसा होता नहीं । सात ताल पानी में डुबो दो तो भी वे नहीं डूबते । आग में डाले भी न जलें । अविनाशी के आश्रय में रह कर नश्वर भी अविनाशी हो जाता है । क्षयिष्णु बन जाता है अक्षय । प्रभु की अपार करुणा से वह काच भी हीरा बन जाता है । प्रभु करुणा की वर्षा में वह धौत होने की शुभ ग़ड़ी में 'अहम् ब्रह्मास्मि' कुछ क्षण सत्य हो जाता है ।

आश्रित के उत्पीड़न में अत्याचारी का उल्लास उलट जाता है । उत्पीड़क दुष्ट को सजा दे कर प्रभु को उल्लास होता है । भयंकर रूप में नृसिंह को देख कांप गया हिरण्यकशिपु । उनके दाहिने हाथ के नख कोण को पर्वत गुफा समझ छुपने की बेवकूफी देखी । अट्टहास कर उठे प्रभु नृसिंह । दूसरे हाथ के नख से छाती चीर डाली । इसका वर्णन है -

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"हालोल्लासवहेलं तदितरकरआग्रेण निर्भिद्य चिक्षपे ॥"

अर्थात् हर्ष में उल्सित होकर तुरत दूसरे हाथ के अग्र से (नखसे) उसे चीर डाला । ऐसी अनेक परिस्थितियों में प्रभु नृसिंह ने दानव के कब्जे से बचाया है मुझे ।

एमर्जेसी के दिनों क्षमता में मदांध राज नीति ने अतल पानी में डाल दिया । मैं डूबा नहीं । कछुवे की तरह ऊपर आकर प्रभु ने पीठ पर धारण किया । सुन्दरगढ़ जिले में सीआई था । कानूनन सीधे रास्ते चलने के कारण राजशक्ति के दलीय लोग गुस्से हो उठते । स्कूल इंस्पेक्सन के समय पता चला कि डे छात्रों को हास्टल के छात्र दिखा कर पैसे खा रहे हैं । खीझ कर कहा - "इस स्कूल की ग्रांट बंद होगी । मान्यता रद्द होगी । दोष गंभीर है । सजा भी वैसी हो ।" सेक्रेटरी ने कहा -"मुझ पर भी यही आदेश हो :" मैंने पूछा -" आप कौन हैं ?" उत्तर था -'मैं एमएलए हूँ ।"

मैंने कहा -" मेरे लिए सब दोषी समान हैं ।" मेरे पुराने मित्र, जो अब मंत्री हैं, उन्हें झूठ-सच कह प्रभावित किया ।

मैं उनकी क्षमता क्या लेता, वे मेरी क्षमता लेने में सफल हो गए । उनके दल की संख्यागरिष्ठता धागे से लटक रही । धमकाया, मेरे खिलाफ कार्यवाही हो, वरना दो एमएलए इस्तीफा देंगे । सर्वोच्च राजशक्ति के आगे दवा ने असर दिखाया ।

सारे परिचय, साहित्य, संस्कृति, संपर्क के बावजूद, चूंकि मेरा छोटा भाई उनका राजनैतिक विरोधी था, अत: सरकार में सर्वोच्च का मुझ पर आक्रोश था । जैसे भी हो, मुझ पर कारवाई हुई । सामयिक रूप में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरी क्षमता चली गई । पर लीलामय ने क्षमता लौटा दी । षडयंत्रकारी चौंक गए । क्षमता फिर मिली - मैंने सोचा जल से निकाल प्रभु ने थल पर रखा । मैं बहुत खुश क्यों नहीं हो रहा ।

फिर सोचा - जल में था तो प्रभु पीठ पर धारण किये थे । मेरे लिए वे नृसिंह , श्रीजगन्नाथ, जल - थल का कोई भेद न था ।

तो खुशी की क्या बात थी ? समान हाल में था । भजन में लिखा -

जल - थल का भेद हुआ निरोहित ।
पीठ पर धारण, साधित किया मेरा हित ।।''

जब राजशक्ति से अविचार के कारण में पीड़ित हो रहा था, एक मित्र ने कैलेंडर दिया । नृसिंह का हाथ थामे हैं लक्ष्मी । चित्र दिखा श्रीमती से कहा - ''महालक्ष्मी पूछ रही हैं, मेरे आश्रित के लिए क्या करते हो ?''

सुन्दरगढ़ से कटक घर पर आया था । मेरे साले रवीन्द्रनारायण मिश्र के साथ मंदिर गया । वे उन दिनों वहाँ टेंपल एडमिनिस्ट्रेटर थे । उन्होंने कहा -'' गज उद्धारण स्तव' प्रभु के आगे पाठ करें । बहुत फलप्रद है ।'' पारंपरिक रूप में अपने लिए तथा दूसरों के भजन गाये, साथ में भागवत से इसे गाया ।

लौटा । घर पर देखा एक कैलेंडर है । गज की सूंढ कुंभीर पकड़ रहा है, सुदर्शन चक्र की धार से गर्दन कट कर रक्त की धार बह रही है । (श्रीमती) मां को आवाज दी । भक्तिमती नारी हैं । प्रभु में अगाध विश्वास । कहा -'' अब गज को ग्राह नहीं ग्रस पायेगा । चक्र से इन नक्र (ग्राह) का गला काटेगा ।''

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्यादा दिन नहीं गए । एमर्जेंसी के बल पर जो सबके गले काट रहे थे, उनका गला कटा क्षमता से वे विताड़ित हुए ।

इसके बाद सारी क्षमता सुविधा, सुयोग दिया, पर जो नये सर्वोच्च शक्तिमान व्यक्ति था, वे गंजाम में मैं सीआई था तब से मेरे विरोधी थे । असेंब्ली में बार-बार मेरे खिलाफ प्रश्न उठाये , अखबार के संपादकों का पत्र देकर देशवासियों के आगे उनके क्रोध का भीतरी कारण बताया । इस पर वे और खफा थे ।

मैं गंजाम में था किसी तरह सस्पेंड करा अंत में बरखास्त कराने पर अड़े थे । मुख्यमंत्री नंदिनी शतपथी ने उन दिनों उनकी सुन केवल सुन्दरगढ़ जिले में ट्रांस्फर किया था । भाग्य की विडंबना बाद में वे ही मुझे सस्पेंड करने उतारु हो गई ! हाइकोर्ट ने मेरे पक्ष में राय दी । सरकार सुप्रीम कोर्ट जाने को तैयार हुई । सुप्रीम कोर्ट के लिए काफी धन बल चाहिए । श्रीजगन्नाथ की शरण गया ।

चक्रधर ने चक्का उलट दिया । जो थे मेरे चरम विरोधी, मंत्री होते ही मुख्यमंत्री के आगे मुझे हटाने की जिद पर अड़े थे, बाद में उन्हें मुख्यमंत्री बनाने का फैसला हो गया । नये सीएम तो शुरू से मेरे पर नाराज थे । उन्हें मिल कर क्या लाभ ? नये मुख्यमंत्री जब हेडमास्टर थे, उनके मित्र हेडमास्टर मेरे अनुगत थे । उन्होंने बीच बचाव किया । भावी मुख्यमंत्री ने कहा -" उन्हें मैंने गलत समझ लिया । दुष्टों को ठीक सजा दी है । आफिस में आते ही वे मुझ से मिलें ।" मैं मुख्यमंत्री के बंगले गया । ऊपर से हाथ हिला कर मुझे बुलाया । मेरे सामने एडवोकेट जनरल से सुप्रीम कोर्ट जाने की बात पर पुनर्विचर करने कहा । सरकार सुप्रीम कोर्ट नहीं गई । मैं फिर सीआई बना दिया गया । असंभव को संभव किया प्रभु श्रीजगन्नाथ ने ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरे घोर विरोधी और बाद में मुख्यमंत्री बने आचार्य ने बंगले पर से हाथ हिला बुलाया था । आचार्य की महानुभवता के माध्यम से प्रभु करुणा का स्पर्श मिला ।

विरोधी दल के नेता के विरुद्ध अखबारों में पत्र लिखे । सूचित किया, उनकी स्वार्थ हानि हुई वे एकदम नाराज । कर्त्तव्य न करने वाले शिक्षकों को ट्रांस्फर न करने को कहा था, मैंने वह अनुरोध उपेक्षित किया । सब अखबारों में छपा ।

विरोधी दल के नेता के प्रस्ताव पर मेरे खिलाफ एसेंब्ली मानहानि प्रस्ताव आया । विरोधी को जरूर दंड मिलेगा - विरोधी नेता खुश । कुछ दिन में असेंब्ली भंग हुई । विरोधी नेता नई सरकार में अर्थ मंत्री बने । पूर्व असेंब्ली का प्रस्ताव स्वत: कट गया । जो घोर विरोधी थे, वे अब मुख्यमंत्री । उनके मन में आ गया बदलाव । उनसे मेरा सम्मान लौटाया प्रभु ने ।

प्रभु को भजन सुना दिया -

हे श्रीहरि !
किस दोष पर किया ऐसा दु:खी ।
पिपीलिका भी जहाँ राह पाये नहीं ।
आपकी कृपा से गज पार पाये ।
असंभव को संभव हरि ही कर सकें ।

प्रभु ! चींटी तक जा न सके, वहाँ आपकी कृपा से हाथी पहुँच पाये ! आप असंभव को संभव कर पायें ।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छोड़े तो भी, वे नहीं छोड़ें

"भंज की तरह आप बोल रहे हैं ।" हँसते हुए मित्र गोपीनाथ ने कहा । मैंने कहा -" हाँ, भई भंज की 'लावण्यवती' की भाषा आ गई । प्रभु के संबंध में । नाटक चंद्रभानु प्रिया से कहता -

"मंजिष्ठा रंग क्या झीन वसन से । धोने से छूट जाये सुतन से ?
उसी भांति से चंद्रमा हूँ मैं, छोड़े भी तुम्हें छोड़ता नहीं मैं ।

यहाँ भंज कथा में एकनिष्ठ प्रेम की पराकाष्ठा प्रदर्शिता हो रही है । प्रेम कोई करार नहीं । कोई देन-लेन नहीं । कोई तथाकथित करताली नहीं । एक हाथ लगेगा तो दूसरा लगेगा, ऐसा बंधा - बंधाया नियम नहीं । एक तरफा प्रेम है । एक छोड़े तो भी दूसरा न छोड़े । मेरे साथ प्रभु प्रेम एकदम भंज के जैसा है । भंज साहित्य में प्रेम पर कहते हुए खूब पसीने - पसीने होकर सभा में भाषण दे गीत गा कर तालियां ली हैं । उन भंजीय कविताओं का स्वाद परिणत उम्र में जितना नहीं पाया, प्रभु के साथ प्रेम भरे प्राणों से कहीं ज्यादा पाया । अद्भुत प्रेमी हैं वे । उनकी गाथा के लिए मेरे पास भाषा नहीं । प्रभु के बारे में मेरे भंजीय वर्णन की चर्चा कर रहे थे रमेश पटनायक । "आप भंज की नायिका की तरह प्रभु के संबंध में कह रहे हैं ।" हाँ, भई ! मैं उस भंजीय नायिका के भाव में डूबा हूँ । चंद्रभानु के संबंध में सखियों के बीच लावण्यवती कह रही है - "प्रभुत्व होते हुए भी भृत्य के आगे विनयी रसिक पुरुष धन्य हैं । प्रभु मेरे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वैसे ही हैं । प्रभु अपना प्रभुत्व जाहिर नहीं करते । अनुगत जन के अति अनुगत की तरह आचरण दास वत्सल श्रीजगन्नाथ का है ।

रमेश बाबू ने सुनते ही पूछा -" वैदेहीश विलास से कुछ उद्धृत करते हैं ?"

मैंने कहा -" राम सीता को समझा रहे हैं -

"विभव से,

हमारी सुरस प्रवीणा कैसी ऊनी हैं ?"

अर्थात् हे सीते ! विधाता ने वन में भी वैभव ऊना नहीं किया ।"

प्रभु के बारे में चर्चा चल रही थी मंदिर परिवेश में । मंदिर गया था प्रभु के संबंध में अनुभूतियों वाली कहानी पुस्तक प्रकाशन से पहले प्रभु को सुना समर्पण करुं । बाद में दूसरों को परिवेषित करुंगा ।"

मैंने दीप तो दिया न था । दीप का निर्देश कहानी के रूप में लिखा है, अब हर बार यहाँ मूर्तियों को भी दीप देता हूँ । अब की जंवाई के लिए चार दीप जलेंगे । पहले चार दीप सिर नवा कर भेजे । पंडा को कहा -" और चार दीप बाद में भेजूंगा ।" चार दीप चढ़ा कर पंडा लौटे । हाथ में बड़ी फूलमाला ।

"फूलमाला कहाँ मिला ?" पंडा से पूछा ।

"बड़े ठाकुरजी की बाहू से फिसली । इसे आप जंवाई के पास भेज दें ।" चौंक गया । कृपानिधि की अनूठी कृपा !

मैं ऐसी कृपा के लायक हूँ ?

अहेतुकी दया है ! अपार करुणा है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

याद आयी कुछ दिन पहले की घटना । मेरे साले प्रसिद्ध कार्डियोलोजिस्ट डा. कवि प्रसाद मिश्र ने फोन पर कहा - अमेरिका में बेटे का आपरेशन होगा । बहुत अस्वस्थ है । उनका अनुरोध था कि मैं जाकर भांजे के लिए श्रीजगन्नाथजी से अनुरोध करूं ।

कवि बाबू चेन्नई में विराट श्रीजगन्नाथ मंदिर निर्माण में जुटे थे । मैं पुरी गया । मंदिर में काफी भीड़ थी । चार दीप खरीद कर भेजना संभव नहीं हुआ ।

दूर से प्रभु को देख कर कहा -" महाप्रभु आपके मंदिर निर्माण हेतु वे काफी कोशिश कर रहे हैं बेटे को स्वस्थ कर दें प्रभु !" परिचित पंडा आ कर मुझे घसीट कर ले गया ।

उनके हाथों दीप भेजे । सारी भीड़ हटा कर दीप लगाये । तुरत प्रभु का प्रसाद ला कर दिये । जान में जान आयी - प्रभु ने अभय दिया है । कोई चिंता न करो । कवि बाबू के पास तुलसी भेजी गई । बाद में खबर आयी - आपरेशन कठिन था, पर सफल रहा !

फिर भी श्रीमती ने उस दिन कहा -

" अब आपने श्रीजगन्नाथ को छोड़ दिया है ।"

श्रीमती ने समझाया -" भजन में मैने लिखा हैं श्रीजगन्नाथ ही गुरु हैं । पहले श्रीजगन्नाथ के सिवा कुछ नहीं समझा । अब पुरी जाकर श्रीजगन्नाथ दर्शन किये बिना केवल गुरु आश्रम में गुरु को देखें श्रीजगन्नाथ दर्शन हो गए, ऐसा कहते हो । श्रीजगन्नाथ को न्यून कर दिया ! श्रीजगन्नाथ गौण हो चुके हैं ।

अपने भजन में मैंने लिखा था -

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जय जय जगद्गुरु प्रभु श्रीजगन्नाथ ।
बचपन से मेरे गुरु प्रभु जगन्नाथ ।
आज मेरे गुरु रूप में आप विराजित ।
गुरु कंठ में सुनूं प्रभु तव स्वर सत ॥

यह भजन लिख कर प्रभु आपको क्या गौण कर दिया ? आपने मेरे सद्गुरु रूप में आत्मप्रकाश क्या नहीं किया ?

इसमें कहा है -

जगद्गुरु सद्गुरु दोनों एकीभूत ।
यह भाव मन में आते होता अभिभूत ॥

इसमें क्या प्रभु न्यून हुए ? आप में गुरु को और गुरु में आपको देखने की सूक्ष्मचेतना आपका अवदान है प्रभु !

पुरी में था उन दिनों अखबार में एक लेख पढ़ा । नयागढ़ के रास्ते पर खुर्धा से कुछ दूर एक श्रीजगन्नाथ मंदिर प्रतिष्ठित हुआ है । यहाँ तीनों ठाकुर के हाथ पांव हैं । ऐसी मूर्ति स्थापित करने प्रतिष्ठाता को स्वप्नादेश हुआ था । पढ़ते समय मन किया प्रभु के दर्शन करुं । फिर यह बात भूल ही गया ।

दुपहर ढले नयागढ़ का दौरा । साहित्य सभा में जाना था । खुर्धा से कुछ आगे जाने पर उद्योक्ता ने कहा -" पास में हाथ-पांव वाली अद्भुत मूर्ति हैं । देखेंगे, सर?" मैं चौक गया ।

ठाकुरजी के दर्शन किये । हाथ-पांव वाली रमणीय मूर्ति ! मां सुभद्रा मानो सिंहासन से उतर रही हैं भक्तों को अभय देने ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उद्योक्ता बंधु से कहा -" सुबह इस बारे में लेख पढ़ दर्शन की इच्छा हुई । अपरान्ह में प्रभु ने इच्छा पूरी कर दी । मैंने कोई चेष्टा नहीं की । जब कि दर्शन हेतु बुलवा दिया । आज श्रीमती के पैने तीर वर्षा पर भी मैं अपराजित था । मगर विजय का शंख तो बजा न सका । मैं रथ से गिरा था, पर माथे का मुकुट तो उनके शराघात से नीचे गिरा है ।

अब प्रभु का निर्देश । बजा शंख ! फूंक विजय शंख । कह दे - प्रभु ने मुझे नहीं छोड़ा । छोड़ते तो प्रभु मेरी इच्छा पूरी करते ? नये रूप के दर्शन यों नयागढ़ मार्ग में होते ?

सभा से लौट कर सारी बात श्रीमती के आगे बखान दी । शंख बज गया । भेरी बजी । पताका लहरा उठी । पर श्रीमती में पराजय का कोई चिन्ह वर्ण नहीं । शंख, भेरी, तुरी, भेद कर उनकी दर्प भरी आवाज आयी -"ये आपके मन के खयाल हैं । यह काकतालीय न्याय की तरह है । इसे आप ठोस प्रमाण के रूप में जकड़े हो ! " मेरी जन्मकुंडली पर विश्वास, दैवी कृपा अलौकिकता पर आस्था को बराबर न्यून करती रही हैं, मैं उनकी हँसी उड़ा कर कहता -"वैज्ञानिक दृष्टियुक्ता, शक्तिशाली व्यक्तित्व संपन्ना !" यह मेरा तीखा व्यंग है उनकी प्रशस्ति नहीं - यह बात प्रखर बुद्धि से वे जान जाती ।

पर अब मैंने उनकी उक्ति पर प्रत्युक्ति नहीं की । प्रभु कांचि अभियान में एक बार फिर से पुरुषोत्तमदेव को जीतने का एक अवसर दिया था । मुझे भी एक अवसर दें, प्रभु !

कुछ दिन बाद स्नान पूर्णिमा । श्रीमती का आग्रह था भोर वाली बस पकड़ पुरी चलेंगे । दस बजे स्नान है । बेटा व बहू बाद में गाड़ी से जायेंगे । उनके जाने में देर होगी । साथ लौटेंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भोर में उठ न सका । बहू बेटे को भी जोर दे कर कहा - चलो साथ जा कर स्नान पर्व देखेंगे ।

"वे इतनी जल्दी जा न सकेंगे !" श्रीमती ने कहा । अब की आपका स्नान दर्शन का योग नहीं । देर से जाओ । रात में गणपति वेश दर्शन कर लौटो ।

ये तो पत्नी ही नहीं, कमांडर हैं । धर्म पालन में सहायता के बदले कमांड दे रही हैं ।

कहा -"ना, मैं गाड़ी में नहीं जाऊंगा । बस से जाना है ।" मेरा निर्णय सुन वे और भी गुस्सा ।

" क्यों, बस में क्यों नहीं ? स्नान देखना है, अत: दस बजे बस में जाने की बात कही गई थी । अब स्नान पर्व तो देखना नहीं । गाड़ी में जाना । इस समय मना क्यों ?" पूछा ।

मैंने कहा -"मैं बस से जाऊंगा, विलंब से पहुँचूंगा । देखें देर से जाने पर दर्शन देंगे या नहीं ?"

"बस से पहुँचने तक वे आपकी प्रतीक्षा में बैठे रहेंगे ?" पूछा श्रीमती ने ।

"प्रतीक्षा करें, न करें, मैं बस से जाऊंगा । विलंब से पहुँचूंगा । कार में नहीं बैठना ।"

इतना कह पत्नी संग संलाप समर समाप्त किया । बस पकड़ी । देखा, बस में श्रीजगन्नाथ दर्शन करने जाने वालों में वंशी बाबू हैं । उन्होंने कहा -" देर हो जायेगी । आज स्नान दर्शन की आस छोड़ दें ।"

मैंने कहा -"आश नहीं छोड़नी । प्रभु चाहें तो स्नान घड़ी में देर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर दें । एक बात प्रमाणित हो सकेगी ।'' उन्होंने पूछा -''क्या प्रमाण होगा ?''

''हाँ, प्रमाणित होगा । मैं छोड़ू , पर वे न छोड़ें ।''

सुन कर वंशी बाबू मेरी ओर देखने लगे । मंदिर में बैठ अनुभूति सुनने वालों में वंशी बाबू से कहा -''आपने स्नान दर्शन किये ?''

वंशी बाबू बोले -'' प्रभु करुणा साक्षात हुई । सेवक और मैनेजिंग कमेटी में खींच तान । हम साढ़े बारह बजे पहुँचे । एक बजे प्रभु का स्नान पर्व हुआ ।''

वंशी बाबू से कहा - बाबू ! केवल इसी बार नहीं कई बार विलंब हुआ है । हमारे विलंबित आगमन को प्रभु ने सार्थक किया है । यह मामूली घटना लग सकती है । कुछ समय पहले श्रीमती ने तर्क दिया था - यह सब संयोग की बात हैं । न मैं साधु हूँ, न मैं भक्त हूँ । फिर भी संकट आते ही दयामय को पुकारता हूँ । वे सुनते हैं । सेक्रेटेरियट में आप एनसीसी के बड़े बाबू थे । इस एनसीसी के कारण मैं डिरेक्टर बना । एनसीसी में रखवाया श्रीजगन्नाथ ने । शायद श्रीमती को याद नहीं है । एनसीसी की ट्रेनिंग के दौरान गोरखा सुपरवाइजर था । हरदम मेरी गलतियां निकालता । मैं परेशान हो उठा । एक दिन मुझे कहा -''आप ढीले होते हो ।'' मैं गुस्सा हो लाइन से निकल आया । मिलिटरी में यह डिसिप्लिन के खिलाफ है । अगले दिन इस का विचार होगा । ट्रेनिंग के दौरान शहर में मंदिर खोज-खोज कर पता किया , पूजक हिन्दी भाषी ! कहा -''हमारे पूर्वज श्रीजगन्नाथ धाम से आये थे ।''

वहाँ रोज श्रीजगन्नाथ मंदिर जाता । उस दिन प्रभु से कहां -''इतनी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूर से आया, फिर यों परेशान ! या तो एनसीसी से ले जाओ । या हालत बदलो ।'' अगले दिन गोरखा सूबेदार नहीं आये । एक डोगरा जमादार आये । वे मेरी बातों और उत्तर देने की शैली पसंद करते । प्रभु कल्पतरु की करुणा की तुलना न थी ।

कितना भ्रमण, कितनी यात्रा, नया -नया डायरेक्टर बना था । तब शिक्षा सचिव को मेरी उन्नति पसंद न थी । पहले जो प्रोफेसर डायरेक्टर बनते, उनमें एक ने उन्हें पकड़ लिया । ज्वायंट डायरेक्टर से एडीशनल डायरेक्टर न बन सीधे डायरेक्टर बना ! वे विरोध कर रहे थे । कहना था - प्रोफेसर पद तो एडीशनल डायरेक्टर के साथ समान है । कोई प्रोफेसर ही डायरेक्टर बने ।

मैं शिक्षा प्रशासन में अनुभवी था, ज्वायंट डायरेक्टर था, मेरा दावा यथार्थ था । पर मेरी दलगत पृष्ठपोषकता कहीं न थी । छोटा भाई विरोधी दल में था । श्रीजगन्नाथ की दया से मंत्री व मुख्यमंत्री मुझे डायरेक्टर बनाने का सिद्धांत कर सीनियर डायरेक्टर का वेतन नहीं, जूनियर डायरेक्टर का वेतन दिया । मौका मिले तो अपमानित करने से नहीं चूकते सचिव महोदय ।

एक बार दिल्ली में कहा -''हिसाब करने केलकुलेटर लाये हैं ?'' मैंने कहा -'' ये डायरेक्टर का काम नहीं । उसे लेकर डिप्टी डिरेक्टर पीछे आ रहे हैं ।'' सुन कर दो - तीन पर चू - चू कर नापसंदगी जाहिर कर दी ।

रात में सोते समय श्रीजगन्नाथ का स्मरण किया । कहा -प्रभु, यह पद दिया आपने । जीवन में कभी नीचा नहीं दिखाया । यह आदमी चैन से काम नहीं करने देगा । अगर चाहते हैं तो इसे पहले हटा लें । या मुझे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हटा लें, प्रभु !

चौंका । दिल्ली से लौटते ही सुना -सेक्रेटरी ट्रांस्फर्ड ! मेरे परिचित रेवेन्यु सेक्रेटरी आ गए सेक्रेटरी बन । अब मेरा सीनियर ग्रेड तुरत हो गया ।

अनूठे श्रीजगन्नाथ । अद्भुत करुणा । भक्तवत्सल ! श्रीमती से कहा -ठीक कहा आप ने । मैं उन्हें थाम कर न रख सका । पर वे मुझे थाम रखे हैं । भंजीय नायक के शब्दों में प्रभु कहते हैं -

तूने छोड़ा ... पर मैं न छोड़ूंगा !''

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जितनी दूर हों, स्नेह से निकट हैं

जयपुर(कोरापुट) में श्रीजगन्नाथ मंदिर । सुबह-सुबह पहुँच गया । साथ में निमंत्रण देने वाले बंधु मनमोहन !

पिछले दिन सभा शुरू हो चुकी । सभा समाप्त होते ही मैंने पूछा-" इतनी देर हो गई, मंदिर बंद हो चुका होगा ?"

"इतनी जल्दी ? कैसे ? चलिये साथ । मनमोहन के साथ चल पड़ा ।

यह क्या ? पुजारी ताला लगा कर ठीक सात बज कर दस मिनट पर बाहर आ रहे हैं ! आरती की, भोग दिखा दिया । मार ताली, उठा थाली बस !

दु:ख हुआ । कोरापुट शहर के शावर क्षेत्र के रूप में नामित श्रीजगन्नाथ मंदिर में कितना अनुशासन ! किन्तु कितनी अव्यवस्था है !

जयपुर राजा द्वारा स्थापित श्रीजगन्नाथ । टिन की छत तले छान-छप्पर वाले एक कमरे में पूजा पा रहे प्रभु ! पचास वर्ष पहले यहाँ अध्यापक था, छ: वर्ष रहा, प्रतिदिन मंदिर जाता, कितने दु:ख-सुख के साथी हैं श्रीजगन्नाथ । श्रीजगन्नाथ के सामने गीतगोविन्द और स्वरचित भजन गाने के बाद पुजारी फूल की अर्पित माला आगे कर देते, और साथ में तुलसी। उनके अनुज थे मेरे छात्र । अत: सम्मान और श्रद्धा दोनों मिलते ।

बहुत बाद में नंगे पर्वत पर कोरापुट में श्रीजगन्नाथ विग्रह स्थापित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हुआ । खूब धूमधाम । बाद में मंदिर बना है । शुरू से शेष तक कहीं सिमेंट नहीं । रत्नवेदी पर विग्रह प्रतिष्ठित हो गए । ईटों के बीच गुल्म-लता उगा कर पुराने -परित्यक्त मंदिर का भान होता है । कई मित्रों का ध्यान आकर्षित किया । अनुरोध किया, कुछ सीमेंट देने के लिए ।

अब की सभा में आने से पहले पता किया, काम शुरू हो चुका है । आधे तक सीमेंट लग चुकी । शायद पूरे में सीमेंट लग जाये । पर यहाँ उत्साह कहाँ ? उन्माद कहाँ ? कोरापुट मंदिर वाली निष्ठा कहाँ ? प्रभु आप की इच्छा !

कभी महान व्यंगकार यदुमणि ने कहा था -

" कहीं खड़ु, गुड़ु, कहीं मुंदरी ।
यहाँ कहलाते करुणा बारिधी ।।"

पीतल की मूर्ति राजा को दी । उन्होंने उसे नीचे रख दिया । उपरोक्त बात कह दी । फिर बोले - "राजन, यह क्या किया ! विष्णु प्रतिमा नीचे रख दी ? कही पर करुणा वारिधि हैं, यहाँ तो कंगन, घागरे की तरह उपेक्षा हो रही है ।

मेरे पुराने बंधु पुजारी जी गए कहाँ ? पता चला उन्होंने धराधाम से विदा ली । उनके पुत्र ही श्रीजगन्नाथ को ताला लगा निकल रहे हैं । भगवान पुजारी के अधीन हो गए !

सुन कर मंदिर के सभापति ने खेद व्यक्त किया । पुजारी को खबर भेजी । अब क्या लाभ ? लौट आया । दर्शन नहीं हो सके । अगले दिन ठाकुर सेवा सुबह ही हो गई । आरती हुई । मुझे आंगन में देख द्वितीय पुजारी दौड़े आये । इनके साथ कितना पुराना परिचय ! कितनी आत्मीयता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

थी । रंगीन अधरों पर खिली मुस्कान ! प्रभु पूछ रहे हैं -" इतने दिन बाद पुरानी जगह लौटे ! आकर सजा रहे हैं इस अव्यवस्था को ?" मैंने कहा - प्रभु ! मैं कौन होता हूँ ? आप ही अपना काम करा रहे हैं ! हम तो माध्यम हैं । प्रभु की भुस्कान कह रही है -"वह माध्यम ही तो मजा है ! देख ! देख ! गौर से देख !" प्रभु ने कहा । मैंने उत्तर दिया -" कहाँ भुवनेश्वर ! कहाँ जयपुर ! दो दिन का मेहमान क्या कर सकेगा ?" फिर मुस्कराये ! शायद मेरी बात प्रभु को जंची नहीं । अब प्रभु - मैं आमने - सामने थे । नयनों से नयनों की बात । भावों का आदान- प्रदान ।

प्रभु महामहिम सूर्य ! श्रुति नहीं ! नेत्र हैं । सब के मजे की बात वे नेत्र खींच लें । चक्षुश्रवा प्रभु हैं ! नेत्र ही कर्ण हैं । गाली देकर कवि सूर्य ने कहा -" काल सर्प हैं !"सच महानाग, अनन्त है । इस मंदिर में गोपालजी के संग तीन मूर्ति विराजें । नित दर्शन, भजन और फिर अर्पित माल ले कर प्रत्यावर्तन ।

भुवनेश्वर आने के बाद भेंट नहीं गोपालजी के संग । कई बार कई लोगों के जरिये याद कराया । "अरे भूल गया ?" मैं कहता -" भूला नहीं प्रभु ! मैं भूलूं तो भी आपे भूलें । छोड़ने पर भी आप न छोड़ें । जो एक बार जाल में पड़ा, वह कैसे छूटे ? ये तो पुख्ता मछुवारे ठहरे ! बड़ी -छोटी सब मछली आते हैं इस जाल में !"

गोपालजी मंदिर आया हूँ । उनके पास-पास । ऊंचे स्वर में पुराना भजन गा रहा । कई बार आपने बुलाया । आज आप को आना ही पड़ा । पास में सभा हो रही । उससे पहले दर्शन दे कर धन्य किया ! प्रभु !" आँखें भर आयी, प्रभु की चिरपरिचित मुस्कान । चरणामृत लिया ।

पुजारी ने कहा -" गोपालजी आपको चाहते हैं ! सुविधा देख कर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पधारें । गीत सुनायें प्रभु को !'' पुजारी के जरिये प्रभु का आदेश था ।

धन्य हैं अन्तर्यामी ! मानउद्धारख मान रखते हैं । सेवा ग्रहण करते हैं । तभी छोटा पुजारी तेजी से आया, प्रभु सिंहासन के फूल, बेलपत्र मुझे थमा दिये । ऐं ! श्रीजगन्नाथ सिहासन से बेलपत्र ! लोग आकर बेलपत्र दे जाते हैं । बिना अर्पण लौटा दें, उन्हें दु:ख होगा ।'' ऊंचे स्वर में कहा ।

-''अरे बेलपत्र किसे दे रहे हो ?''

''जी, मां सुभद्रा और बलभद्र को ।'' सरल भाव में कहा ।

''यहाँ बलभद्र को बेलपत्र देते हैं ।'' पास वाले ने कहा ।

''धत् ! रथयात्रा की कमेंट्री में कहा है, निबंधों में लिखा है । यहाँ बलभद्र का शिवत्व और सुभद्रा का दुर्गाभाव हरण किया है । सब एकाकार हैं । सब विष्णु स्वरूप हैं । केवल तुलसी, यहाँ बेलपत्र का स्थान नहीं । प्रभु यह नहीं चाहते । अत: मेरे हाथ पर बेलपत्र रखवा कर चाहा - यह प्रथा बंद हो । मैं होऊंगा प्रभु की इस इच्छा का वाहक ।

युवक पुजारी निर्निमेष देखता रहा । पुराने पुजारी के पुत्र आ गए । जी, पिताजी आपकी बात कहा करते थे । मैं बेलपत्र नहीं देता, मेरा संगी भी भक्तों से बेलपत्र नहीं लेता । न प्रभु को अर्पित करता । ''हाँ, जी, अब आगे बेलपत्र नहीं चढ़ेंगे ।'' संगी पुजारी ने कहा । प्रभु का मुख मुस्कान में मुखरित हो रहा ।

कितनी दूर से खींच इस दीनहीन के हाथों कुछ सेवा करा रहे हैं । भंज के शब्दों में -

प्रीति अभेद उनकी, जितनी दूर हों, माया है उनकी ।।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

रजत कुमार कर

ओड़िशा के शिक्षा क्षेत्र के सर्वोच्च अधिकारी के पद पर रह चुके रजत कर यहां एक संभ्रांत घराने से हैं। अध्यात्म और दर्शन के क्षेत्र में भारतीय परंपरा से ओतप्रोत भावे जड़ित हैं। पिछले पांच दशक में आप की कहानियाँ, नाटकों एवं प्रबंधों से ओड़िया पाठक मुग्ध होता रहा है। कवि सम्राट उपेंद्र भंज साहित्य के गंभीर अध्येता एवं मार्मिक व्याख्याता प्रो. कर ने अपने प्रवचनों से रीतिकालीन भंज की समाज सचेतन एवं काव्य के क्षेत्र में अतुलनीय भंज की नई छवि प्रतिष्ठित की है। उनकी धर्म-दर्शन भावना के केंद्र में श्रीजगन्नाथ का स्थान अनुपम है। माहप्रभु के उदार रूप में जो विराटता और विशदता देखी है, वह अपनी मनोमुग्धकर वाणी से लाखों श्रोताओं और दर्शकों को आकाशवाणी तथा टेलिविजन पर प्रचारित करते रहे हैं। उनकी विश्लेषण पद्धति में आम दर्शक के लायक भाषा तो रहती है, परंतु प्रमाण-सिद्ध तर्कशैली के कारण सर्वाधिक ग्रहणीय वक्ता के रूप में प्रसिद्ध हो कर वे जगन्नाथ भक्ति के किंवदन्ती पुरूष कहलाने लगे हैं।

प्रो. कर लंबे अर्से तक शिक्षा विभाग के विभिन्न पदों पर काम कर शिक्षक प्रशिक्षण के निदेशक पर से सेवा निवृत्त हुए हैं। अपनी स्पष्टवादिता एवं निर्भीक विचाराभिव्यक्ति के कारण कई बार संकटों का सामना करना पड़ा है। उस वक्त अपनी इस ईश्वर प्रेरणा और नैतिकता समर्थिक पक्षधरता के बल पर कभी नहीं भटके। लगता है इसी कारण श्रीजगन्नाथ ही उनके लिए सर्वशक्तिमान संयंत्र की तरह रहे हैं।

" जब जानकीनाथ सहाय करे, तब कौनविगार करें।"

यह अटूट निष्ठ और दृढविश्वास जीवन-यात्रा में कभी ऊना नहीं पड़ा है हजार छोटी-मोटी बाधायें आयी हैं, प्रो. कर उन सांवरे-सलोने श्री जगन्नाथ की शरण लेते हैं। इसी के कुछ संकेत अनुभूतियों में लिपिबद्ध हैं।

शंकर लाल पुरोहित

डॉ० पुरोहित तीन दशक तक हिंदी पढाने के बाद १९९८ में बी. जे. बी. कालेज से सेवानिवृत्त हुए हैं। वर्षों तक हिंदी प्रशिक्षण से जुड़े रहे।

पिछले चार दशक से ओड़िसा के गौरवमय साहित्य का अनुवाद हिंदी में प्रस्तुत कर एक विशेष पहचान देने में सफल हुए हैं।

कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक निबंध आदि प्रायः सभी विचारों के सफल अनुवाद कर आपने अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त की है। हिंदी के सरल-सहज मुहावरे में ओड़िया की विविध साहित्यिक छटाओं को रंजित कर हल्दी-चूने के मेल से उत्पन्न आकर्षक केशरिया रंग की बहार प्रस्तुत करने में समर्थ हुए हैं।

विषयानुकूल विविध भाषाई क्षेत्रों में पुरोहित ने अद्भुत कला और कौशल का परिचय दिया है। भाषा के माध्यम में ओड़िया साहित्य भंडार के दर्शन करा कर पुरोहितजी ने स्वातंत्रयोत्तर भारत में राष्ट्रीय एकता एवं संहति के एक विशेष आयाम को बल प्रदान किया है। इन अनुवादों में वैज्ञानिक-तकनीकी से ले कर कार्यालयीन, धार्मिक-आध्यात्मिक एवं परीक्षाओं से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किया है।

इसी से प्रभावित हो कर पुरस्कारों की लंबी शृंखला ने उन्हें भर दिया है। सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर दक्षिण अमेरिका में सम्मानित इस पहचान कर्त्ता के रूप में सम्मानित किया। हाल ही में केंद्रीय साहित्य अकादमी ने 'परजा' अनुवाद के लिए पुरस्कृत किया। व्यक्तित्व के पूरे मूल्यांकन के आधार पर ओड़िया के प्रतिष्ठित "कादंबिनी" सम्मान से अलंकृत किया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौरांग आश्रम

पूज्य ऊँ विष्णुपाद १०८ श्री दण्डी स्वामी श्री श्री मद् भक्ति श्रवण तीर्थ गोस्वामी महाराज श्री चैतन्यदेव के प्रेम भक्ति पीयूष की बहुप्रसिद्ध धारा प्रवाहित की। उसी परंम्परा में गौरांग आश्रम का "चैतन्य इन्टीच्यूट आफ वैदिक सेन्टर" आज भी अनेक धार्मिक-साहित्यिक ग्रंथों के प्रचार प्रसार में लगा है। इस परम्परा में इस ग्रंथ के लिये रजत बाबू से अनुमति प्राप्त कर उसके अनुवाद एवं प्रकाशन कार्य की पहल की है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi